

७३४

❀ श्रीजानकी चत्तुर्भो विजयते तराम् ❀

द्वादशमास उत्सव विलास

पदावली

रचयिता

रसिककुलभूषण श्रीविदेहजाशरणजी

महाराज

638
रसिककुलभूषण श्री विदेहजाशरण जी महाराज
(श्री प्रेमलता जी) द्वारा विरचित

द्वादशमास उत्सव विलास पदावली

सम्पादक

शत्रुहनशरण 'रसकान्तिलता'

प्रकाशिका

श्री जानकी सहचरी (गया वाली)

शारदीय पूर्णिमा सं० २०४१ वि०

प्रथमावृत्ति ५००]

१६८४

[निष्ठावर ५) रु०

मुद्रकः—मनीराम प्रिटिङ्ग प्रेस, शास्त्रीनगर अयोध्या ।

❀ श्रीमतिभ्यां रसमोदाभ्यां नमः ❀

प्राक्कथन

वन्द्य-पादाम्बुज रससिद्ध बीतराग स्थितप्रज्ञ रसिकभूषण श्रीविदेजाशरणजी महाराज उपनाम 'श्रीप्रेमलताजी' शान्तप्रकृति के आदर्श संतरत्न हैं। क्रोध तो आपमें कभी देखा ही नहीं गया। परनिंदाश्रवण कथन एवं लोकचर्चासे बहुत दूर हटकर, आप अहर्निश अपनी भावभावनामें लुके रहते थे। आपकी सूक्ष्म प्रतिभा विलक्षण थी। रहस्यरससिन्धुकी बहुत गहराई तक पहुँचकर आपने एकसे एक भावरत्न निकाले।

आपके द्वारा संचित आपका प्रचुर ज्ञानभंडार केवल 'स्वान्तः सुखाय' ही नहीं था। अपने जीवन कालमें आप रसिक साधकों के लिये कल्पवृक्ष थे। रहस्य जिज्ञासु जिस समय आपके चरणोंके समीप पहुँचे, जितना पीना चाहे, आप उसी समय उसे रसामृत पान कराते थकते नहीं थे। आप जितना पेय पदार्थ देने को तत्पर रहते थे, उतनी प्यास ही नहीं कहीं देखी जाती थी।

आज प्रत्यक्षरूपसे आप हमें प्राप्य नहीं हैं, परन्तु आपकी दी हुई अतुल भावभावनाराशि आपके सुरचित रसग्रन्थोंमें आज भी हमारे लिये सुलभ है। आश्रयाम मानसिक सेवा सीखनी हो तो आपकी प्रेमरस पहावली सरल सुगमरीति से सुबोध भाषामें समझायेगी। आप सांगोपांग रसरजका स्वरूप जानना चाहें तो

श्रीरसतत्त्व सिद्धान्त प्रकाशिका पढ़िये । श्रीअवध, श्रीजनकपुर, श्रीचित्रकूट तीनों हमारे इष्टधाम हैं । इनके सभी आवरणोंके सहित स्वरूप जानना चाहें, यहाँकी विहार लीलाकी जानकारी अभीष्ट हो, तो आप धीयुगलविभूति प्रकाशिका पढ़िये । श्रीधाम आवरणोंका ज्ञान अन्यत्र ढूढ़े न पाइयेगा ।

सम्पूर्ण रामायणी लीलाको आप रास दृष्टिसे देखना चाहें तो पढ़िये श्रीपंचप्रकाश रामायण । आपको निश्चय हो जायगा कि सम्पूर्ण रामचरित्र केवल रास ही रास है ।

श्रीव्याह, वन, रण, राज्य लीला तो रासके ही आवान्तर अङ्ग हैं । श्रीद्वादश रास प्रमोद पढ़िये और बारहो महीने रास-भावना में छुके रहिये ।

श्रीधाम आवरण वर्णन करते समय महाराजश्री आवरणान्तर्गत वनों का स्वरूप भी समझाते चलते हैं । श्रीप्रमोदवन के अंगभूत श्रीअशोक वनकी विशिष्ट रचना श्रीशिवसंहिता, श्रीकौशलखण्ड श्रीहनुमत्संहितामें भी रमणीय रूपसे वर्णित है । परन्तु वहाँ इनके आवरणोंका ज्ञान नहीं कराया गया है । आपने सभी आवरणोंके सहित श्रीअशोक वाटिका विलास रचकर, रसिक जगतके लिये एक अनुपम निधि दी है ।

प्रस्तुत ग्रन्थ श्रीद्वादशमास बत्सव विलास पदावली में आप को साल भरमें क्रमिक रूपसे आनेवाले सभी उत्सवोंकी मानसिक भाव सामाग्री एकत्र मिलेगी । पद यद्यपि लोकभाषामें लिखे गये हैं, परन्तु इनमें लौकिकता की कहीं गंध नहीं है । सर्वत्र दिव्य

विहार देशकी अलौकिक ज्योति जगमगा रही है। समाधि भाषा में लिखित यह दिव्य संदेश अपना मंत्रात्मक प्रभाव रखते हैं। पद पढ़िये, इनका गान सुनिये। मनपंछी उड़कर सीधे दिव्य देश में पहुँच जायगी। वहाँ के परमानन्द सिन्धुमें गोते लगाने लगेगी। अपने घरके मन्दिर बिहारीजीके उत्सवकालमें आपको तत्कालीन गेय पदों के लिये बहुत जगह भटकना नहीं पड़ेगा। प्रायः आवश्यक पद यहीं मिल जायेंगे। प्रस्तुत पदावलीमें काव्यसौष्टव भी मनोरम है। 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्'। सो स्वयं रसराय ही यहाँ सांगीपांग विलस रहे हैं। ठौर ठौर पर विविध अलंकारों की सजावट बड़ी चटकीली है। छंदप्रवाह सर्वत्र धारावाहिक रूप से निर्बाध गतिशील है। दिव्य अवधविहारी का लीला वर्णन अवधीभाषामें कितना समीचीन है !

ऐसे ग्रन्थरत्नको अपने द्रव्य-व्यय देकर प्रकाशमें लानेका श्रेय है परम गुरुनिष्ठ श्रीजानकी सहचरी (गयावली) को। हम पूज्य ग्रन्थकारके चिरऋणी हैं, तो गुरुवहन श्रीजानकी सहचरी हमारे धन्यवादकी सत्पात्री हैं।

श्रीरसमोद कुञ्ज श्रीअयोध्या { रसिक महानुभावोंका लघुअनुचर
शारदीय पूर्णिमा २०४१ वि.सं. { शत्रुहन शरण

—: सूची पत्र :—

क्रमांक	विषय	पृष्ठांक
१-	मंगलाचरण	१
२-	श्रीअवधके भिन्नभिन्न नाम	३
३-	श्रीराम जन्मवधाई	४
४-	श्रीजानकी जन्मवधाई	५
५-	श्रीमैथिलीजूकी बाललीला	१४
६-	सर्वेश्वरी श्रीचन्द्रकला-वधाई	१५
७-	जेष्ठ शुक्ला दशमी	२१
८-	फूलवंगला	२२
९-	ग्रीष्मकुंज	२५
१०-	श्री सरयूपुलिन का ग्रीष्म विहार	२७
११-	श्रीमहलका ग्रीष्मविहार	२६
१२-	रथयात्रा	३०
१३-	श्री गुरु-जन्मोत्सव	३१
१४-	श्रीगुरुपूनी, सदगुरुभूला	३७
१५-	श्रावण आगम कजरी	३८
१६-	भूलन प्रस्तावना	३६
१७-	सखीसमागम	४०
१८-	तीज भूला	४१
१९-	युगल-भूलन	४३
२०-	कजरी संग्रह	४४
२१-	एकवेष सजे भूलना	४७

क्रमांक	विषय	पृष्ठांक
२२-	गोस्वामि श्रीतुलसीदासजी की वधाई	४६
२३-	चागका झूला	४७
२४-	श्री सरयूतटका झूला	४९
२५--	नावपर झूला	४५
२६--	श्रीकनकभवन का झूला	४६
२७--	धीरेसे झूलाने की प्रार्थना	४७
२८--	श्रीप्रियाजूका मान	४८
२९-	श्री प्रियतमजूका प्रियाजूको झूलाना	४९
३०-	श्रावणीपूर्णिमा	६०
३१-	रक्षावन्धन, झूला विसर्जन	६१
३२--	भादो जलविहार	६२
३३--	विजयोत्सव	६६
३४--	रासविहार	६६
३५--	सखियोंका नृत्यगान	७१
३६--	श्रीप्रियतम नृत्यगान	७२
३७--	श्रीप्रियागान	७४
३८--	युगल नृत्यगान	७५
३९--	सखिसहित युगलनृत्य	७८
४०-	महारास	७९
४१-	श्रीसरयूतटका रास	८०
४२-	श्री अशोकवन का रास	८३

क्रमांक	विषय	पृष्ठांक
४३-	रागिनीशक्तिसे ऋतुप्रगटाकर चैता ग्रीष्म रास	८६
४४-	पावस रास विहार, हिमर्तुरास	८७
४५-	शिशिरका फागोत्सवमय रास	८९
४६-	रासविसर्जनक्रम	९२
४७-	श्री हनुमज्जयन्ती	९३
४८-	दीपमालिका	९६
४९-	अन्नकूट उत्सव	९७
५०-	श्री जनकनगर दर्शनलीला	९८
५१-	जयमाल धारण	९९
५२-	भाँवरि	१०१
५३-	जेवनार	१०२
५४-	लहकौरी	१०४
५५-	मंडपपर, कोहवर	१०५
५६-	गौनाके पद	१०६
५७-	खिचड़ी	१०८
५८-	माघशुक्लापंचमी	१०८
५९-	वसन्तोत्सव	१०९
६०-	श्री अग्रदेवाचार्य वधाई	१११
६१-	होलिकोत्सव	११२
६२-	चैता पद	१२६
६३-	पतंगकेलि	१२७



अनन्त श्री स्वामी विदेहजाशरणजी महाराज

❀ श्री जानकी वल्लभो विजयते तशाम् ❀

द्वादश मास उत्सव विलास

❀ पद्मावली ❀

❀ संगलाचरण ❀

विनय मम पंचदेव दानी सों ।

गनपति उमा महेस भानु हरि, जानु जोरि जुग पानी सों ।
मुनि महिदेव साधु सहसानन, वेद ब्रह्मवानी सों ॥
सिय पिय नाम रूप गुन गावों, अचल प्रेम रजधानी सों ।
'प्रेमलताको' और न चाही, दीजै सब मिलि जानी सों ॥

भजो मन श्री सदगुरु सुखदानी ।

कृपासिधु नर रूप हरीश्वर, जाको वेद बखानी ।
जासु बचन-रवि मोह नास निसि, भइ सरूप पहिचानी ॥
सिय प्रीतम सों बाँह गहायउ, हेतु रहित निज जानी ।
जनम मरन भवरोग नसायो, दै सुभक्ति रसखानी ॥
बहुमत पंथ जहाँ तहँ भगरो, बाद रहित गुरुवाणी ।
'प्रेमलता' सब आस छोड़ि कै, साधन साध्य पिछानी ॥

अरज मम सुनिये पवनकुमार ।

मन भावत सो देहु रसीले, रसमय जुगल बिहार ॥

सीताराम कृपा की मूरति, प्रिय संग्राम सिंगार ।
 निज जन कहँ सुरघेनु कलपतरु, रसिक अनन्य उदार ॥
 काम क्रोध लोभादिक नासक। माया मन गुन पार ।
 भक्त मुकुटमनि धनी अवध के, घर बाहर अधिकार ॥
 प्राननाथ जस आपु बखानेउ, विदित सकल संसार ।
 'प्रेमलता' की आस पुरावो, पड़ो आय तब द्वार ॥

अलिनि के चरन कमल सिर नाऊँ ।
 चंद्रकला श्री चारुसिलादिक, कहँ लगि नाम गिनाऊँ ॥
 लली लाल जिनके कर बिहरत, सदा भरे अति चाऊ ।
 जिनके कृपाकटाक्ष भये ते, छूटत जग भरमाऊ ॥
 कहँ लगि कहौं कृपा अधिकाई, जिनके सील सुभाऊ ।
 'प्रेमलतहि' अपनाय दिखावो, जुगल केलि नित गाऊँ ॥

वंदौ नाम रूप गुन धाम, सीताराम गौर अरु स्याम ।
 लीला ललित विसद मन भावनि, सब दुख हरनि सुप्रद विश्राम
 मिथिला अवध सुकमला सरजू, अति पावनि सुखरसमय ठाम
 माया रहित दिव्य नित परतरं, प्रेम करत पूरहि सब काम ॥

—: गजल :—

सरन सिय स्वामिनी जू की, अली मैं आजु तकि आई ।
 जगत सब खोजि कै देखी, कतहुँ नहि कोउ हितु पाई ।
 विरद सुनि आपुकी वांकी, सबनि पर चरम दरसाई ॥

बिदित सब लोक वेदों में, सुगम अति आदि कबि गाई ।
सबनि के हाल प्रीतम से, कहति निर्हेतु समुझाई ॥
नहीं है दोष काहु में, सबनि को लेहु अपनाई ।
भरी अति दया करुना से, कृपा अनुकंप अधिकाई ॥
न देखति दोष दुख कबहूँ, देति सुखमोद भरपाई ।
पड़ी यह वानि अति अदभुत, न छूटे 'प्रेम' सुखदाई ॥

—०—

हमैं तुमसे कछु काम न प्यारे ।
आपहि से सो आइ मिलोगे, सिय दृगकोर निहारे ॥
बालपने से लालन पालन, कीन्हीं सार सम्हारे ।
'प्रेमलता' स्वामिनि के बल से, नहि कछु सोच हमारे ॥

श्री अवध के भिन्न-भिन्न नाम

अवध के नाम सुनहु सुखदानी ।
वनप्रमोद मालिनी अयोध्या, विमला सत्या जानी ।
ब्रह्मपदा अरु शुक्लप्रभा लखु, भिन्नालोक से आनी ॥
सप्तदुर्ग सदसेव्या लखिये, खातासप्त बखानी ।
ध्वजा--शिखर--मालिनी अनन्ता, चित्रपदा छबिसानी ॥
घनालम्बि अरु ब्रह्म संतिता, अष्टापदा सुहानी ।
घोषा--महा सुगंधिनि जानो, केलि सुपूर्णा मानी ॥
वीर सुसेव्या भानुमती पुनि, चहुँसेना अकुलानी ।
आदि--अंत--नहि गुप्त-स्वरूपा, भाविक भाव पिछानी ॥

त्रिमंडला त्रिदेवाचार्या पुनि, धूमभरी होमानी ।
 अमित-अलौकिक-वैभव नामा, कृत्रिम--वन बहुतानी ॥
 इत्यादिक बहु नाम अनूपम, बरनि पार नहि वानी ।
 नित्य मुक्त अधिकार जीव कहँ, प्रेममोद रसदानी ॥

श्रीराम जन्म वधाई

अवध नगर में बाजत, आनन्द बधैया हो रामा ।
 राजा दशरथ के चारि पुत्र भये,
 स्याम गवर छबि छैया हो रामा० ॥

राम लच्छमन भरत सत्रुहन,
 नाम ललित सुख दैया हो रामा० ।
 त्रिभुवन में उत्साह भयउ अति,
 'प्रेममोद' अधिकैया हो रामा० ॥

वरसगाँठ पियकेरी हे सजनी, मंगल गावो ॥
 वंदनवार पताका केतू, मोतिन चौक पुरावो
 चंदन पुष्प सुमाल साथियाँ, कलस दीप सजवावो ॥
 बीथिन सुमन बिछाय नवीनो, अतर गुलाब सिचावो ।
 'प्रेममोद' सुनि बचन सिया के, आनंद सिधु समावो ॥

—

चैतमास मन भावन प्रीतम छबि दरसावन ।
 नौमो तिथि दिन मंगल मंजुल, शुक्लपक्ष छबिछावन ।
 वंदनवार पताक कलसधुज, बाजत सरस बधावन ॥

विप्र वेद धुनि करहि मधुर सुनि, देव सुमन बरसावन ।
‘प्रेममोद’ सखि मंगल गावैं, हिय अनुराग बढ़ावन ॥

चिरजीवी रहैं नृप चारिउ लला ।
बाल चरित करि सुख बरसावहि,
व्याह होहि शृंगार थला ॥
जग विजयी होइ राज सिंहासन,
बैठहि सबको होय भला ।
‘प्रेममोद’ सम्बन्ध जनित सुख,
चाहत अचल न और कला ॥

रेखता-पद

महल में सोहिलो गावैं । सखी सब मोद उपजावैं ॥
ललन की बाल छवि निरखैं । सुधन पट वारि मन हरषैं ॥
सराहैं भाग दंपति को । जो पाई ऐसी संपति को ॥
द्वारे नौबतें बाजैं । नगर में छाई आवाजैं ॥
ग्राम की नारि सुनि धाई । रावले माँझ जु रि आई ॥
बढ़यो सुख सिंधु चहुँ ओरी । ‘प्रेम रसमोद’ को बोरी ॥

श्री जानकी जन्म बधाई

जनकपुर प्रगटौ सिय सुखदानी ।
माधव शुक्ल सरस तिथि ग्रह दिन,
जोग लगन सुभ थानी ।

श्रुति कीरति मांडवी उरमिला,
अलिगन संग रस सानी ॥

नभ अरु नगर निशान गान धुनि,
छबि नहि जाति बखानी ॥

बरसत मेघ सुमन तरु अमृत,
'प्रेम सुमोद' समानी ॥

बरस गाँठि जा दिन सियकेरी, पिय सब सखिन बोलाई ।
कहे आजु प्यारी जन्मोत्सव, मंगल सजहु बनाई ।
सुनि पिय बचन तुरत सब आली, हरषि चली सचुपाई ॥
वंदनवार कलस धुज चंदन, मोतिन चौक पुराई ।
जहँ तहँ सुमन बिछाय गलिन सब, अतर गुलाब सिचाई ॥
साजि साथियाँ मंगल गावति, नौबत धुनि सरसाई ।
नाचत नागरि भोद भरी सब, नूपुर की धुनि छाई ॥
महल महल प्रति बजत बधाई, सोभा वरनि न जाई ।
सारी पीत रंगाय सुप्रोतम, भूषन सकल मँगाई ॥
सब सखियन कहँ दीन्ह निछावरि, जो जिनके मन भाई ।
पहिरि पहिरि सब तुरित सहेलो, गावति विसद बधाई ॥
निजकर पिय रचि सियहि सिंगारी, आरति कीन्ह सुहाई ।
'प्रेमलता' पिय तन मन वारी, संपति सकल लुटाई ॥

सखि रानी सुनैना कुँवरि पाई ।

प्रगटी आजु यज्ञशाला में, भूपति कंठ लगाई ।

रूप राशि सब अंग छबोली कहत सखी लखि आई ॥
 चलोगी चलि सब राजभवन में हिलिमिलि यूथ बनाई ।
 लोचन सफल करें चलि आली, बहुविधि गाल बजाई ॥
 आवत जानि नगर नव नागरि, मातु उठी हरषाई ।
 पाटंवर के दोन्हि विछावन, आदर करि बैठाई ॥
 रूप अनूप देखि सब कामिनि, देह दशा बिसराई ।
 प्रेम विवश लखि रानि सुनैना, चूनर चारु ओढ़ाई ॥
 यह उत्साह सुन्यो ढाढ़नियाँ, निमिवंशिन की आई ।
 साज बाज सम्हारि मुदित मन गावन लगी बधाई ॥
 ढाढ़नि कुँवरि मँगाय लाय उर, बहुविधि लाड़ लड़ाई ।
 ढगि सी रही निरखि गति भूलो लखि सिय रूप निकाई ॥
 परम प्रमोद भरी महतारी, भूषन वसन मगाई ।
 'प्रेमलता' ढाढ़नि परितोषी, भली भाँति पहिराई ॥
 नृप द्वारे बधइया बाजे अली ।

परमानन्द मगन नर नारी कहत प्रगट भइ आजु लली ।
 धन्य भाग भइ रानि सुनयना कोरति भुवन लही अचली ॥
 पुन्य पयोधि सखी मिथिलापति तैसी सुमेधा पुन्य थली ।
 हम सब धन्य धन्य मिथिलापुर सबकी सुकृति सुवेलि फली ॥
 घर घर मंगलमोद बधाई गावति नारि सुरंग रली ।
 जय जयकार करत नभ सुर मुनि बरसत सुमन सुकंज कली ॥
 मोद प्रमोद भरी सब नाचहि नगर नारि जहँ तहँ नवली ।
 'प्रेमलता' धन धान्य लुटायो भूषन बगरे गली गली ॥

आवो आवो बधैया गावो री ।

यह उत्साह दिवस कब पड़बो धनि धनि भाग मनावो री ॥
 तोरन वंदनवार बँधावो ध्वज पताक पुर छावो री ।
 विरचि सुभवन सकल मंगलमय चौके चारु पुरावो री ॥
 धन्य सुमाधव मास पाख सित नौमी तिथि कब पावो री ।
 सीता जनम आज मिथिलापुर मंगल मोद बढावो री ॥
 अतर गुलाब सुगंध सिचावो चित्र विचित्र रचावो री ।
 राज भवन तें चारु चौगुनो पुर में रचो बधावो री ॥
 भोजन विविध सुदान मान युत देहु द्विजन मन भावो री ।
 हरिजन अतिथि खवाइ भली विधि सियहि अशीष दिवावो री
 वारमुखी बहु गुनी बजनियाँ ढाढ़िनि भोर बुलावो री ।
 विविध भाँति सनमानि मुदित मन घर घर आजु नचावो री ॥
 चारि वरन की न्योति सुवासिनि चूनरि चौर ओढ़ाओ री ।
 'प्रेमलता' सिय जनकलली हित भूषन वसन लुटावो री ॥

मिथिला में बधैया बाजे री ।

जन्म महोत्सव जनकलली को घर घर प्रति पुर साजै री ॥
 बजत निशान शंख सहनार्ई विविध मनहुँ घन गाजै री ।
 परमानंद मगन नर नारी भूलै निज निज काजै री ॥
 राज भवन की शोभा जैसी कहत शारदा लाजै री ।
 जहाँ अखिल लोकनि की स्वामिनि सियजू आइ विराजै री ॥
 परम महोत्सव रचेउ नगर नभ ध्वज पताक बहु भ्राजै री ।
 'प्रेमलता' नृप कोष लुटायो याचकता दुख भाजै री ॥

नृपरानी परम धन पायो री ।

अजा अनादि अनूप नाम बहु वेद संत गुन गायो री ।
 सगुन ब्रह्म जगदम्ब सिया सोइ लीला तन प्रगटायो री ॥
 विनु सेवा जो द्रवति दीन पर दीवो मदा सुहायो री ।
 सोइ गुनखानि सिया सुरस्वामिनि बाल चरित मनभायो री ॥
 परमानंद नगर नृपरानी, मंगल साज सजायो री ।
 सिय स्वामिनि को जन्म महोत्सव भांति अनेक बनायो री ॥
 भवन बजार गली चहुँदिसिपुर सींचि सुगंध लिपायो री ।
 मनिगव चौक पुराय विविध घट चित्रित चारु थपायो री ॥
 भवन भवन चित्राम काम जनु निजकर रुचिर बनायो री ।
 तोरन वंदनवार द्वार प्रति कदली कलश सुहायो री ॥
 मवि मुक्तनि के जाल भरोखनि ध्वज पताक पुर छायो री ।
 भेरि निशान संख सहनाई घर घर बजत बधायो री ॥
 गावहि मंगल बिबुध वधू नभ सुरन सुमन भरि लायो री ।
 मागध सूत वंदि गुन गावत जय जयकार सुनायो री ॥
 देस देस के मुनिजन आवे निज निज गुन दरसायो री ।
 भूषन वसन विपुल अनमोले पाय चले मन भायो री ॥
 बढही आदि बजनियां मंगन पुनि पुनि बोलि पठायो री ।
 दियो दान अनचह्यो विविध नृप ते सब डगरि लुटायो री ॥
 सिव विरंचि सुर सिद्ध बाग मुनि मंगन रूप बनायो री ।
 घर घर लेत निछावर डोलहि ब्रह्मानंद भुलायो री ॥

रक्षणा देखि विचित्र अनूपम सकल सुरन सुख पायो री ।
 वीथिन्ह फिरहि मगन मन फूले धन्य स्वभाग मनायो री ॥
 दंपति न्योति जेमावहि घर घर देइ दान मन चायो री ।
 'प्रेमलता' मंगल त्रिभुवन को मिथिलापुर चलि आयो री ॥

—: गजल :—

लोनी लली मिथिलेश की सिय स्वामिनी मेरी ।
 प्रगटी कृपा की खानि सदगुन रूप की ठेरी ॥
 भरने लगीं नव नौबतें नभ नगर जहँ तहाँ ।
 बाजें नफोरी रँग भरी वर बांसुरी भेरी ॥
 घर घर निछावर दे रहे नर नारि मुद भरे ।
 वरषैं सुमन सुर व्योम ते जय जय कहैं टेरी ॥
 नाचें गुनी नृपद्वार विपुल भाँड़ अपसरा ।
 वंदी बदैं वंशावली निमिवंश घनेरी ॥
 भाषैं सुविप्र वेद सुयश सूत बखाने ।
 गावैं सुनवल नागरी मंगल समय हेरी ॥
 पावैं सुदान मान सकल मन के भावते ।
 बहुरै अशीष देत कुँवरि चिरजिवो तेरी ॥
 मिथिला सुधन्य धन्य राय रानि सुनैना ।
 अलि 'प्रेमलता' धन्य भई चरन की चेरी ॥

—: रेखता :—

बधाई बज रही आली । भई मिथिलेश की लाली ॥

गुनी जन गावते तानें । पहिरि रंग रंग के वाने ॥
 सुमन सुर व्योम तें बरषें । वजावहि दुंदुभी हरषें ॥
 सुनैना मांगने बोलैं । खजाने भूपने खोलैं ॥
 वेद बहु विप्रवर वाँचैं । विपुल नव नायिका नाचैं ॥
 भाट नट द्वार जो आवैं । दान मन भावते पावैं ॥
 मशाले पान कर जोरी । विहँसि जन देत भरि भोरी ॥
 फुहारैं इत्र की चालैं । करोरनि कंज की मालैं ॥
 मलय घसि थार भरि राखें । लहहि सब देत अभिलाषे ॥
 नगर की नारियाँ धाईं । कुमरि वर देखने धाईं ॥
 निरखि छवि लाइ उर लेही । मुदित मन आशीषें देहीं ॥
 सदा सुख पालने भूलैं । प्रेमलतिका फिरें फूलैं ॥

—

कुँवरि को जन्म श्रवन सुनि आई ।

राखो मेरे मान दान दै ये जू सुनैना माई ॥
 बूढ़ी बड़ी तिहारे घर की ये ढाढ़िन बलि जाई ।
 सीरध्वज मैं गोद खेलायो भली भाँति उर लाई ॥
 केवल एक आश निमिकुल की राखउँ हृदय जोगाई ।
 तुम्हरे व्याह माँहि जो पायो केहि विधि कहाँ सुगाई ॥
 सुनि रानी सतकारि भली विधि आदर करि बैठाई ।
 तुम्हरी कृपा कटाक्ष लली यह ढाढ़िन जू मैं पाई ॥
 अस कहि प्रमुदित खोलि पिटारी देन लगी हरषाई ।

भूषण विविध अमोल अनूपम नख सिखलौं पहिराई ॥
 दश करोर को ललित घाँघरो चोली तासु सवाई ।
 सात कोटि कौ सुभग चूनरी ढाढ़िन सीस ओढ़ाई ॥
 औरउ दियो बहुत धन घर को गजरथ तुरंग बनाई ।
 सात लाख के ग्राम दिये युग पट भूषण बहुताई ॥
 जय जयकार कीन्ह ढाढ़िनियाँ पाइसु दान अघाई ।
 चिरजीवो सुख कुँवरि लाड़िली दीन्ह असीस सुहाई ॥
 जियो राय तुम सदा सुनैना बाजत रहैं बधाई ।
 बढै राज धन धान धरम कुल विभव भूरि सुत भाई ॥
 तुम्हरोई विभव राज घर नृप मैं रानि कह्यो सकुचाई ।
 दरशन देत रहो मोहि पुनि पुनि अस कहि गर लपटाई ॥
 माँथ सृंघि आशीसि भाँति बहु मिलि समुझाई बुझाई ।
 चली सदन निज 'प्रेमलता' तब सहित विभव सुख छाई ॥

हमारी सिय स्यामिनि प्रगट भई ।

मिथिलापुर मुद मोद प्रकाश्यो दुसह विपत्ति गई ॥
 बाजत घर घर विमल वधाई घर घर मोद मई ।
 भूप भवन सब भाँति अनूपम उत्सव साज दई ॥
 गावत गीत गुनी जन प्रमुदित नाचति नारि नई ।
 बाँचत विप्र वंदौगन विरुदावलि रंग रई ॥
 उमगत परमानंद दसौ दिसि भूमि विभूति छई ।
 चौथेपन सखि कुमरि कृपाकरि नृपहि महेश दई ॥

भाये भगे होयेंगे औरहु, विधि मुदवेलि बई ।
हम तुम सब लूटिहैं परम सुख जन्म लाभ नित नई ॥
वाल केलि रसरासि विलोकहि कर्णवेध गुरु खई ।
सुनिहैं श्रवन तोतरी वानी नित नव सुख सरसई ॥
विद्याध्ययन सगाई देखव जेहि विधि जहँ अरुभई ।
'प्रेमलता' पुनि व्याह महोत्सव लखि अनन्द उपजई ॥

जन्मी जगजननि जानि जनकनगर में ।

उमग्यो आनन्द सिन्धु डगर डगर में ॥

देवरिषि ठाढ़ी दरस लागि आये ।

सादर सुनि जनकराय महल बुलाये ॥

जाइ जुहारि भूपके सुभाग सराहे ।

ठाढ़े भये रुख पाय मुदित साज सजाये ॥ १ ॥

नारद कर वीन लिये ढोलकिया गनेस ।

ब्रह्मा करताल लिये तंबूरा सुरेस ॥

मारुत मुहचंग लिये मंजीरा रमेस ।

सरंगी सनकादि लिये जलतरंग सेष ॥ २ ॥

शंकर कर डमरू लिये नाचने लगे ।

टिरे बहुतान अपर प्रेम में पगे ॥

अहा अहा ! वाह वाह ! कहैं भय भगे ।

प्रगटी लली सुखरूप भाग भूपके जगे ॥ ३ ॥

अनुपम अति अमल छबि देखि सिया की ।

हरषे सुर सकल गई जरनि जिया की ॥
 स्तुति बहुत कीन प्राण दान दिया की ।
 चरन सीस नाथ कही विपति जिया की ॥ ४ ॥
 जय जय जगदंब जयति कहि अशीष दीन ।
 कौतुकी विनोद गान बहुत भाँति कीन ॥
 सबही अशीसि बहुरि बिपुल दान दीन ।
 'प्रेमलता' भवन गये विबुध भाग खीन ॥ ५ ॥

❀ श्री नैथिली जू की बाल-लीला ❀

बहिन संग खेलहि राजदुलारी ।

मनिमय राज महल अँगनाई जनक जननि सुखकारी ।
 कंचनवन रितु-कुंज निकुंजन कमला-तट छबि धारी ॥
 श्रुतिकीर्ति मांडवी उमिला स्याम गौर मनहारी ।
 चन्द्रकला श्री चारुशिलादिक सेवा-सौज सँवारी ॥
 सुमन सिंगार किये नखसिख लौं दर्पन वदन निहारी ।
 प्रतिविबनि लखि नटति मगन होइ तनमन सुरति बिसारी ॥
 चंद खेलौना खग मृग मांगति स्याम भँवर सुक सारी ।
 फल मेवा पकवान मिठाई सीत सुगंध सुवारी ॥
 वर दुलहिन रचि व्याह सुकरहो रसलीला विस्तारी ।
 कबहुँ पालने सब मिलि भूलें ताल सुराग उचारी ॥
 मातु मुदित मन करति आरती राई लोन उतारी ।
 'प्रेममोद' यह छबि अवलोकति निसिदिन रहत सुखारी ॥

❀ सर्वेश्वरी श्री चन्द्रकला वधाई ❀

चन्द्रभानुजी की कुँवरि प्रगट भइ मुदमंगल जग छाई ।
 गावत नारि बधाई घर घर साज बजत समुदाई ॥
 मागध सूत वंदि नट नागर वरनत गुन सुघराई ।
 छंद कवित पद राग ताल मनु प्रगट रूप दरसाई ॥
 नभ अरु नगर कुलाहल कौतुक सुख-समुद्र उमड़ाई ।
 रस की सींव सुभग अति नागरि सागरि सील बड़ाई ॥
 कहा कहौं केहि भाँति सराहौं सिय सखि की प्रभुताई ।
 तीन देव जेहि माया भीतर रुख लखि कर सेवकाई ॥
 रमा उमा सारद सचि रति से लखि छवि रहत लजाई ।
 जाकौ कृपा कटाक्ष परे तें जीव सरस सुख पाई ॥
 पिप्पलादि मुनि सों यह महिमा लोमश रिषि समुभाई ।
 महरम जन जानहि यह परतम लोक मध्य प्रगटाई ॥
 जाचक गुनि गन गाय सुहावन मन अभिलाष पुराई ।
 मगन भये उर ध्यान सुनिधि लहि अपने भाग मनाई ॥
 काम रूप गुन धाम एक रस नित्य अखंड रहाई ।
 'प्रेममोद' हिय भाव सुदरसत कृपा सुसाध्य भलाई ॥

रंग भीनी बधाई बाजै री ।

चन्द्रभानु जी की कुँवरि प्रगट भइ गौर वरन छवि भ्राजै री ॥
 जनक नगर सब डगर वगर में फैलि रह्यो रसराजै री ।
 'प्रेममोद' सियपिय मनभावन अलिगन में सिरताजै री ॥

* श्री सर्वेश्वरी जन्म सोहर *

चन्द्रभानु जी के द्वारे सुनौबत बाजहि हो ।
 सुनि धुनि नगर हुलास सुमंगल साजहि हो ॥
 वीथिन सड़क सुचौक अथाई हाटहि हो ।
 मंदिर कोट के द्वार चहूँ दिसि ठाटहि हो ॥
 वंदनमाल वितान कलस धरि दीपहि हो ।
 रंभा पुंज रसाल सफल तरु रोपहि हो ॥
 चामर ध्वज सुपताक साथियाँ सोहैं हो ।
 चित्र विचित्र बनाय रूप मन मोहै हो ॥
 दधि दुरबा फल फूल सुअंकुर नीके हो ।
 कनक सुथारन साजि धरे प्रिय जी के हो ॥
 नारि सिंगार सँवारि कलस सिर धरि के हो ।
 कर लिये मनिमय थार आरती सजि के हो ॥
 सात कोट के द्वार सुपरि तहँ प्रविसहि हो ।
 जाय लली अलि देखि चरन कर परसहि हो ॥
 गाय मधुर सुर सोहिलो साज बजावहि हो ।
 विविध स्वाँग करि नटहि दिखाय सुभावहि हो ॥
 देव विमानन आय सुउतसव देखहि हो ।
 वरषत सुरतरु सुमन भाग निज लेखहि हो ॥
 चंद्रभानु जू के पुन्य सुभाग सराहहि हो ।
 पराभक्ति रस रूप भाव हिय चाहहि हो ॥

चंद्रकला जू के जनम जो मंगल गावहि हो ।
महल टहल निज रूप दिव्य सो पावहि हो ॥
'प्रेम सहित रसमोद' बहिनि के सेवहि हो ।
प्रीतम हाथ बिकाहि अपनपौ देवहि हो ॥

—

जा दिन चन्द्रकला अलि जनमी सो दिन आज सुआई ।
सिय पिय के मनमोद बड़े अति बाजत विसद बधाई ॥
यूथेश्वरि सरदारि सखिन में रसिकन की रसदाई ।
सकल सखी मिलि मंगल गावति नौबत बजत सुहाई ॥
मंगल कलस चौक मोतियन की रचना सकल बनाई ।
अति उत्साह भरी सब नागरि मनमें मोद न माई ॥
सिय स्वामिन की कृपा सुमूरति जुगल भाव प्रगटाई ।
चंद्रकला वर नाम सोहावन सोभा बरनि न जाई ॥
तिन्हकी षोडस मुख्य सहेली नाम कहौं समुझाई ।
युगल प्रिया श्रीप्रानप्रिया जू नवल नेह लतिकाई ॥
हेमलता श्रीप्रोतिलता जू मधुरलता मन भाई ।
युगलविहारिनि रूपलता जू श्रीरसमोदलताई ॥
चंपलता श्रीप्रेमप्रभा जू प्रेममंजरी गाई ।
मधुपअली अनुरागलता जू नाम लतारसराई ॥
लतिका प्रेम सीय की भगिनी सेवति लाड़ लड़ाई ।
इनकी शरन होत जो भाविक सो रसपाय अघाई ॥

चन्द्रकला के नवलकुंज में बाजत आजु बधाई ।
 माधवमास सुकल तिथि संभू सकल सखी तहँ आई ॥
 यूथेश्वरी महान सखिन में ताते मुद अधिकाई ।
 वंदनवार पताका केतू कलस वितान बनाई ।
 सजति साथियाँ मंगल गावति मोतिन चौक पुराई ।
 कौतुक करि करि नाचति नागरि नूपुर धुनि सरसाई ।
 अमित अलिन युत दंपति आये स्वागत करि बैठाई ।
 अति आनंद भये तेहि अवसर सो सुख बरनि न जाई ।
 प्यारी की प्रिय मुख्य सहेली सब कहँ न्योति बुलाई ।
 भई भीर आँगन घर बाहर अति उत्साह सुहाई ।
 सियपिय मध्य सिंहासन राजें चहुँदिसि सखि समुदाई ।
 भोजन विविध भाँति के नाना सादर सबहि पवाई ।
 अचवन करि बैठे अलियन युत अतर पान अरपाई ।
 भूषन वसन माल दै सबहीं आरति करि सिर नाई ।
 होन लगे रसगान नृत्य नव निरखत सब मन लाई ।
 'प्रेममोद' आचार्य कुंज रहि करि उत्साह बिताई ।

चन्द्रकला जू की वरष गाँठ आजु गावो मंगल माई ।
 अति उत्साह भयो मन भायो सो सुख बरनि न जाई ।
 घर बाहर नारी नर उमगे मंगल साज सजाई ।
 चन्द्रभानु महाराज राजरिषि मिथिलाधिप के भाई ।
 ऐसे पितु माता जेहि सुकृत मानहु तन छबि छाई ।

प्रापु सिया की भगिनी प्रियतर नागरि अति सुखदाई ।
 उमा रमा ब्रह्मानी जाकी हरषि करत सेवकाई ।
 विधि हरिहर जाके वशवर्ती को वैभव कहि गाई ।
 रसिक जनन को रस बरसावत रास विहार दिखाई ।
 'प्रेममोद' की जीवनमूरी संसृत रोग मिटाई ॥

(] रेखता पद [)

सिया की प्यारि अलि जाई । कहत छबि देखि सब माई ॥
 पुराई आस जगदीश्वर । सुकृत फल दीन दंपति कर ॥
 सुमंगल साज समुदाई । सजावहु आज मन भाई ॥
 सुआसिन वृन्द बुलवाई । सुसोहिलो गावो सुखदाई ॥
 लुटावो हर्षि सब धन को । पुरावो आस मंगन को ॥
 खुले बड़भाग रसिकन को । जो ध्यावत रास कुंजन को ॥
 'प्रेम रसमोद' वर पावै । उमगि आचार्य गुन गावै ॥

सहेली सीय की प्यारी । प्रगट भइ आज सुखकारी ॥
 छठी उत्साह सिय केरी । जनम भो ताहि मधि मेरी ॥
 चलो सखि राज के रावल । सजै सुख साज मन भावल ॥
 सोहिलो गाय छबि निरखै । बलैया लेहि हिय हरषै ॥
 लुटावहि वसु जो संचन की । पुरावहि आस मंगन की ॥
 कला जेहि चन्द्र सुभ नामा । अलिनि की अग्र रसधामा ॥
 रसिक रसराज आचारज । गोप रसकेलि में आरज ॥
 नवल कल वीन नारद को । सिखाई जिते तुंवरु को ॥

युगल सुख साजि फुलवारी । मिलावत पीय अरु प्यारी ॥
 'प्रेम रसमोद' सुखदानी । सुउतसव जनम को ठानी ॥

(रेखता पद)

बधाई सीय सखि केरी । सुखद सुरधेनु जन केरी ॥
 सुहावन मास सुभ माधव । सुचौदसि शुक्ल आराधव ॥
 सुमंगल साज सजि सुंदर । बोलावो सन्त करि आदर ॥
 सुपूजन प्रेम करि विधि सों । सुसोहिलो गान सुनि सिधिसों
 जनम को लाभ इतनोई । सुलेवहु आशु भव खोई ॥
 मनावो भाग बड़ अपने । जो पाई ऐसो संघटने ॥
 सुरसिकन प्रान धन जीवन । सुध्यावत नित्य करि सेवन ॥
 जूथ की स्वामिनी सारी । 'प्रेम रसमोद' बलिहारी ॥

युगल अली पलना पर भूलैं ।

चंद्रकला श्री चारुशिला जी दंपति सुख की मूलैं ।
 कनक रतनमय नवल पालना उपमा नहि कहूँ तूलैं ॥
 मातु भुलावैं मंगल गावैं साज बजै अनुकूलैं ।
 'प्रेममोद' नाचै सुर वनिता बरसत सुरुतर फूलैं ॥

पद

पलनमा भूलै सिय संग आली ।

राज महल अति अनुपम सुंदर रमन चमन सुख शाली ।
 चन्द्रभानु अरिजीत दुलारी इन्हहि आदि रस चाली ॥

सब अंबा मिलि हरषि भुलावहि गान तान मतवाली ।
'प्रेममोद' यह छवि अवलोकत प्रीति रीति प्रतिपाली ॥

सदा चिरजीवे चंद्रकला सिय प्यारी ।

चन्द्रभानु मिथिलेश सुकृत फल, प्रगट सुनयन निहारी ॥
प्रीति परस्पर बढ़ै निरंतर निरखै मातु सुखारी ।
बाल बिनोद करै सखियन संग आँगन महल मभारी ॥
सुंदर राजकुमार मिलै पति अमित मदन छवि धारी ।
'प्रेममोद' संग नैहर सासुर करै सुरास अपारी ॥

चिरजीवो सदा चन्द्रभानु लली ।

रसिकन को अति सुख बरसावै दरसावै रसरंग रली ।
सुख सोहाग छिनछिन अति बाढ़ै नैहर सासुर रंग रली ॥
'प्रेममोद' सियपिय छबिछाके जिमि भँवरी लहि कमलकली ॥

❀ जेष्ठ शुक्ला दशमी ❀

विरखु सखि सुभग दसहरा आजु ।

जेठ सुदी सित पक्ष सुहावन दंपति को सुख साजु ॥
नवल सिंगार किये पिय प्यारौ नवल सिंहासन राज ।
छत्र चँवर व्यजनादिक लोन्हें शोभित अलिनि समाजु ॥
वाजत साज मधुर स्वर गावति नटति सुकरिकरि नाजु ।
'प्रेमलता' यह छवि अवलोकति स्वकर सँवारति काजु ॥

❀ श्री सरयू जयन्ती ❀

बधाई वाजि रही मन भाई ।

मानसनन्दिनि प्रगट भई है अवधपुरी में आई ॥
 श्रीवशिष्ठ के भवन मनोहर राग तान रहि छाई ।
 नभ विमान सुर थकित रहे हैं सुमन माल बरसाई ॥
 मुनि पत्नी निवछावर देहीं जाचक जनन बुलाई ।
 'प्रेममोद' सियपिय जस निजमुख करत सुउमगि बड़ाई ॥

❀ फूल बंगला ❀

नवल फुलबँगला आजु बनाई ।
 रंग रंग के सुमन मनोहर टटियन माँझ सजाई ॥
 षोडश द्वार सुमन की खंभियाँ मेहराफैं मन भाई ।
 चहुँदिसि सुंदर छुटत फुहारें त्रिविध पवन सरसाई ॥
 तामधि अलिन सहित दोउ राजत जनकलली रघुराई ।
 सुमन सिगार किये नखसिख लौं स्याम गौर छबिछाई ॥
 'प्रेमलता' यह छबि अवलोकति सेवति लाड़ लड़ाई ॥

करैं सखि नवल सुमन सिगार ।

लली लाल के चहुँदिसि ठाढ़ी देत सुरुचि अनुसार ।
 सुमन ताज सिर सुमन चंद्रिका श्रुति भूषन फुलधार ॥
 अलक सुधारि सुमन रचि वेनी तुरें कलँगि सँवार ।
 सुठि नासिका सुमन की नथिया गले सुमन कलहार ॥
 बाहु विभूषन विविध सुमन के धनुसर सुमन सुधार ।
 कटिके भूषन सुमन कलिन के सब्द रसाल उचार ॥

चरननि सुमन कड़े वर नूपुर रखें ललित उदार ।
'प्रेमलता' नखसिख की सोभा निरखत मोद अपार ॥

फूल बँगलै में राजै नवल रसिया ।
नख सिख लौं सिगार सुमन को अंगन अंग रहे गसिया ।
अगनित जंत्र छुटत फुलबगिया त्रिविध समीर सुखद लसियाँ
'प्रेममोद' ग्रीष्म रितु सरसत सिय प्रिय रूप हिये बसिया ॥

फूलन बंगला दोउ राजै रसीले ।
सुमन सिगार किये नख सिख लौं दंपति रंग रंगीले ।
छुटत फुहारे सुभग मनोहर त्रिविध पवन रमकीले ॥
अति अनुराग भरे प्रिय प्यारी गान सुनहि चटकीले ।
गाय बजाय नाचि सब अलियाँ रिभ्रवति 'प्रेम' बसीले ॥

प्रिय प्यारी जू राजै फूलन बंगला ।
छत्र चँवर व्यजनादिक लीन्हें अलिनन मंडल कर कमला ।
चहुँदिसि सुंदर छुटत फुहारे मनिसय साजे फुल गमला ॥
चंद्रकलादिक साज बजावति गान सुकरति मधुर विमला ।
'प्रेमलता' यह अनुपम शोभा रतिमनसिजको मान दला ॥

फुलबंगला आज रंगीला बना ।
तामघि राजत प्यारी प्रीतम रतिमनसिज को मान हना ।
नख सिख लौं सिगार सुमन को निरखि लुभाने सबहि मना ।
'प्रेमलता' उत्साही अलियाँ गावति हैं वर राग छना ॥

* सुमन कुंज *

सुमन कुंज की अदभुत रचना उपवन बीच बनायो ।
 फूल वाटिका सरमधि वेदी मनि सोपान रचायो ॥
 कल के पुल बँधे चहुँधोरी कमलपत्र जल छायो ॥
 वेदी पर गिरि गिरिपर समभुवि सुमन सुगंध बिछायो ।
 तेहि पर चहुँदिसि छुटत फुहारे जल ढरकत सर आयो ॥
 तामधि कलप सुतरुवर फूले छत्राकार सुहायो ।
 तेहि तर सुमन सुमंडप बहुरंग द्वार खंभ दरसायो ॥
 ताके बिच इक सुमन सिंहासन मंडल कबच धरायो ।
 अलिन सहित राजत तहँ दंपति रास विलास बढ़ायो ॥
 नृत्य गान बहु साज सुबाजत आनंद रस उमगायो ।
 'प्रेममोद' यह सुख अति दुर्लभ सदगुरु कृपा सुपायो ॥

नवल दोउ फूल कुंज मधि सोहैं ।

सुमन सिंगार किये नखसिख लौं अरस परस छबि जोहैं ।
 वाग तङ्गाग मध्य वेदी पर सुमन वितान तनो है ॥
 फरस खंभ बहु द्वार सुमनमय चहुँदिसि जंत्र छुटो है ।
 सुमन छत्र जुग सखी फिरावै अपर सौज बहुतो है ॥
 बहु सुगंध की उठै झकोरें त्रिविध पवन सरसो है ।
 मंडलकार अमित अलि राजै रासरंग उमगो है ॥
 बाजत साज मधुर सीतल सब नृत्य गान मन मोहै ।
 'प्रेममोद' यह सुख नित लूटें पल सम लखि दिवसो है ॥

सुमन सिंगार किये दोउ सुंदर फूल कुंज मधि राजें ।
 रसिक सिरौमनि सिय रघुनंदन संगहि अलिनि समाजें ॥
 नील पीत पंकज चंपक दुति बहु रतिपति लखि लाजें ।
 मृदु स्वर शीतल राग अलीगन गाय बजावहि साजें ॥
 चहुँदिसि सीरे छुटत फुहारे त्रिविध पवन संचारै ।
 रसमाला रसमोद निरखि छबि उमगत 'प्रेम' अपारै ॥

आज दोउ फूलन कुंज गये ।

तहँको अलिन सिंगार किये नव बहुरंग सुमनमये ।
 फल मेवा पकवान सुसीतल पावत रंग छये ॥
 सुमन सेज पर चिदविलास छबि सखियन नयन ठये ।
 'प्रेममोद' यह छबि बित निरखत श्री गुरुदेव दये ॥

❀ श्रीष्म कुंज ❀

निरखु सखि श्रीष्मकुंज सुखकारी ।

चहुँदिसि कोट नवल दरवाजे अजिर मध्य फुलवारी ।
 सुमन बाग बिच नवल सरोवर कमल खिले बिधि चारी ॥
 तेहि सर मध्य वेदिका मनिमय कहि न जाय छबि भारी ।
 तामधि छत्राकार जंत्र इक घूमत भरत फुहारी ॥
 तातर सुमन पीठ पर राजत अलिन सहित पिय प्यारी ।
 वसन विभूषन त्रिविध सुमन के किये सिंगार सँवारी ॥
 बाजत साज नृत्य अलि करहीं शीतल राग उचारी ।
 'प्रेममोद' रितु सुख लखि अनुपम भाविक भाव सुधारी ॥

आजु दोउ भोजत जंत्र तरे ।

अलिन सहित सिय पिय मनभावन अति अनुराग भरे ॥
 श्याम गौर तन खुले कमलकर परसत परसपरे ।
 छत्राकार फुहार भीन कन सीर सुगंध भरे ॥
 करि असनान सिंगार सुमन सजि हरित रंग उधरे ।
 'प्रेममोद' फुलबंगले राजत रसिकन दृगन हरे ॥

—: ग्रीष्म बाग विहार :-

चलो सखि देखन को फुलवाई ।

सिय प्रीतम गलबाँही दोन्हें साँग सखी समुदाई ॥
 नवल सिंगार किये मनभाये सुमन बाग में आई ।
 बहु सखि छत्रविजन लिये चामर सेवा सौज सजाई ॥
 बहु सखि गावें साज बजावें नूपुर धुनि रहि छाई ।
 बंगले आठ रंग नव शोभित षोडस सर मनभाई ॥
 शोभा अमित न वरनि सिराई बोध हेतु कछु गाई ।
 'प्रेमलता' फुलबंगले माहीं बिहरत अति सुख पाई ॥

चमन में विहरत हैं पिय प्यारी ।

सुमन सिंगार किये नखसिख लौं अरसपरस भुजधारी ।
 छत्र चँवर व्यजनादिक सेवा सजि साँग अलिन अपारी ॥
 चहुँदिसि बने फुलन के बंगले विविध रंग मनहारी ।
 सह समाज तहँ राजत दोऊ रघुवर जनक दुलारी ॥

रंग रंग के छुटत फुहारे सरसत त्रिविध बयारी ।
'प्रेमलता' आतप नहि ब्यापत ग्रीष्म को सुख भारी ॥

बाग में विहरत सिय रघुराई ।

लता सुमन के कुञ्जन माहीं शोभा सुख सरसाई ।

विविध रंग के पंछी बोलैं सुनि सुनि मन हरषाई ॥

सरनि कमल मधि भँवर गुंजारैं त्रिविध पवन सुखदाई ।

कहुं कौतुक चौपर कहुं गेंदें कहुं भूलैं सुखपाई ॥

कहुं परहेली कहुं रंग होरी कहुं सुक सारि पढ़ाई ।

कहुं जलजंत्र कुंज मधि बैठे कहुं फुलमाल बनाई ॥

कतहुं बैठि मेवा फल पावहि सखि सब लै लै आई ।

यहि विधि रमत केलि थल आये 'प्रेमलता' मन भाई ॥

❀ सरजू पुलिन ग्रीष्म विहार ❀

सरजू पुलिन आज राजत दोउ सुंदर सुमन सिंगार सँवारे ।

सुमन वाटिका चहुंदिसि फूली अगनित छुटत फुहारे ।

मध्य सिंहासन बैठे दंपति सेवा अलिन सुधारे ॥

वाजत जंत्र मधुर सुर सीतल रागिनि सुखद उचारे ।

नृतत भाव भरी नवनागरि फहरत पट सुधुमारे ॥

शीतल मंद सुगंध सुमारुत परसत तन मनहारे ।

'प्रेममोद' यह ध्यान अनूपम भाव सुचखन उधारे ॥

निरखु सखि सरजू तट पिय प्यारी ।

सुरतरुवर तर सुमन कुंज में बैठे गलभुज धारी ।
 सुमन सिंगार किये नखसिखलीं अलिन सहित मनहारी ॥
 शीतल मंद सुगंध पवन बह वरषत जंत्रन वारी ।
 बाजत साज राग रस गावति 'प्रेममोद' सुख भारी ॥

सरजू सखि सोहै सुमन बंगला ।

सिय पिय छबि हिय धरि रसमाती

सुख सौजनि बित नव विमला ॥

सुरतरुवर तर सुमन वेदिका

मनिमय घाट सजे गमला ।

विविध सुगंधन केर फुहारे

त्रिविध पवन बह मनहरला ॥

बाजत साज गान अलि करहीं

नटत करत मन बहु चपला ।

देव सुमन वरषत छबि निरखत

'प्रेममोद' हिय सुख भरला ॥

फूलकुंज नौकापर निरखहु सरयू बिच छबि भारी ।

खंभ वितान फरस की रचना चंप गुलाब निवारी ॥

पंकज की भालर मिहरावैं गमलन साजी धारी ।

बहु सुगंध के छुटत फुहारे डोलत त्रिविध बयारी ॥

मध्य भाग एक सुमन सिंहासन तामें खंड सुचारी ।

वेला कुंद चमेली जूही क्रम से बिछे सँवारी ॥
तापर अलिन सहित दोउ राजत रघुवर जनकदुलारी ।
बाजत वीन मृदंग तमूरा वंशी ताल सितारी ॥
गावत सीतल राग पावसी निरतत कला पसारी ।
ग्रीष्म जल विहार मनभावन 'प्रेममोद' सुखकारी ॥

❀ श्री महल का ग्रीष्म विहार ❀
कनक महल के नवल सुछतपर फूलन कुंज बनाये ।
जाल झरोखे द्वार सुमनमय अगनित भाँति सुहाये ॥
चहुँदिसि सुमन वाटिका बंगले जलके जंत्र लगाये ।
तामधि राजत प्यारी प्रीतम अलिन सहित छबिछाये ।
शीतल मंद सुगंध पवन बह ग्रीष्म सुख सरसाये ।
बाजत साज राग ध्वनि छाई 'प्रेममोद' मन भाये ॥

रसिया रसरंग सुराग भरै

निज प्यारिहि सुमन सिमार करै ।

निजकर सुमन उतारि सुचुनि चुनि

वसन विभूषन रचि सुधरै ।

धातु रंग लिखि अंग अंग प्रति

कलित कला करि तिलक सरै ॥

सजि नखसिख सुपलँग पर राजे

हास विलास सुमधुर तरै ।

'प्रेममोद' रस उमंग बढ़ावति

गाय गाय सुख सिंधु परै ॥

* रथयात्रा *

नवल रथ साजि चले पिय प्यारी ।
 नवल सिंगार किये नखसिखलौं सँग लै अलिन अपारी ।
 कनक महल तें सरजूतट लौं भीर कोलाहल भारी ॥
 बहु सखि छत्र विजन लिये चामर सौज अनेकन धारी ।
 बहु सखि गावैं साज बजावैं नृतति कला पसारी ॥
 बहु सखि मग कौतूहल करहीं स्वाँग अनेक सँवारी ।
 वंदी मागध नट बहुरूपिया बनि ठनि सोहत नारी ॥
 जय नकीब वर सुजस सुमंगल बोलति बहु सुकुमारी ।
 यहि विधि चलि सरजूतट आये सरि पूजन अनुसारी ॥
 देव सुमन वरषत सह नारी शोभा निरखि सुखारी ।
 अचि सकल विधि अलियुत दंपति खड़े बिलोकत वारी ॥
 नाव तरंग भँवर खग पंकज उपर भये जलचारी ।
 कल्पवृक्ष तर रतन सिंहासन सरजू तट मनहारी ॥
 तापर सिय पिय आय बिराजे अलिगन मंडलकारी ।
 'प्रेमलता' यह छबि अवलोकति राई लोन उतारी ॥

—: लावनी :—

रथ साजि चले ललिलाल सरजु तट कोरी ।
 सखि नीलपीत सिंगार मनोहर जोरी ॥
 चहुँदिसि अलिगन घेरि सौज सजि सोरी ॥
 करि गान तान मन मोद बजावत भेरी ।

सुर सुमन माल वरषाय शब्द जय हो री ॥
 सखि मारग सुमन बिछाय अतर सों बोरी ।
 ताने लता वितान कलश ध्वज पोरी ॥
 'प्रेमलता' मनमोद रसिक रस बोरी ।
 सखि पिय प्यारी छबि देखि मगन भइ गोरी ॥



निरखु सखि सरजूतट छवि छाई ।
 रथ तें उतरि फरस पर विहरत शोभा सुख सरसाई ॥
 कलप बिरिछतर रतन सिंहासन बैठे सिय रघुराई ।
 फल मेवा अंकुर मनभावन पावत मोद बढ़ाई ॥
 पान अतर माला दै सबही गान सुनत सुखदाई ।
 'प्रेममोद' रथ उत्सव लखि सुर सुमन माल बरसाई ॥

❀ श्री गुरु जन्मोत्सव ❀

श्रीगुरु प्रगटाने छवि रस साने लखि माता सुख फूली ।
 सदचित मुद मूला जन अनुकूला उपमा अपर न तूली ॥
 रवि ससि सद जोती अगिन समोती जगमग किरन पसारी ।
 नख सिख लौं सुंदर रूप मनोहर मनभावन सुखकारी ॥
 जनकुलहि सुमंडन खलकुल खंडन तारक मंत्र प्रचारी ।
 अति दौन उवारन भवनिधि तारन बिनु कारन उपकारी ॥
 तिहुं तनहि सुनासक भाव प्रकासक तुरिया तन अविनासी ।
 त्रय रहस अकारा मनवच पारा अर्थ अलौकिक रासी ॥

कलि कलुष विनासी प्रेम प्रकासी सुख कारन दुखहारी ।
 प्रभु इच्छाचारी स्वबस विहारी जगजीवन प्रियकारी ॥
 रक्षक श्रुति सेतुं सतकुल केतुं वंदित सदा अमानं ।
 निगमादि सुणीतं चरित पुनीतं भवभय समन निदानं ॥
 सेवित वर चरणं आश्रम वरणं शरणद कृपानिधानं ।
 आश्रित सब लायक सदगुण छायाक प्रेम भक्ति वरदानं ॥
 यह चरित जे गाबहि सब सुख पावहि 'प्रेममोद' मनभावै ।
 पियपुर चलि जावै बहुरि न आवै रूप अनूप रहावै ॥

दोहा—

अथ घालक गो संत द्विज, पालक कृपा अगार ।
 बालक बपु रोवन लगे, मंगल मोद प्रचार ॥

—०—

आचारज को जन्म महोत्सव गावत संत बधाई ।
 मास पाख दिन तिथी नखत ग्रह मंगल साज सजाई ।
 वंदनमाल वितान कलस ध्वज मोतियन चौक पुराई ॥
 नाचैं गावैं रस उपजावैं बाजै विविध बजाई ।
 राग रागिनी छाया रह्यो है आनंद हिय उमगाई ॥
 नभ विमान सुर थकित रहे हैं सुमन माल वरषाई ।
 वंदी मागध सूत सुजाचक बरनत गुन सुधराई ॥
 दान मान निवछावरि अगनित पावहि सबहि अघाई ।
 केलि कुलाहल कौतुक देखत देह दसा विसराई ॥

कबहुँ पालने भूलत किलकत गावत मंगल माई ।
चिरजीवहि श्री सतगुरु प्यारे 'प्रेममोद' मन भाई ॥

बजत बधाई रसिक सुगुरु की बरष गाँठ आज आई ।
मंगल साज साजि सब सुखकर गायक संत बुलाई ॥
स्वागत करि बैठाय सुआसन असन वसन पहिराई ।
चंदन पान माल सौगंधै जल सुपवन अरपाई ॥
होन लगे रसखान गान वर बाजत साज सुहाई ।
छंद प्रबंध अनेक भाँति के उघटत आनंद छाई ॥
निरतत नर्तक विविध वेष धरि भाव कलन दरसाई ।
'प्रेममोद' यह सुख रस अनुपम सतगुरु कृपा सुपाई ॥

जय जयकार श्रीसतगुरु की करुणाकरि अवतार लयो ।
आदि अखंड ब्रह्म सीतापति जनहित लीला स्वरुचि ठयो ॥
महामोह रावन के बंसहि मारि सुजस प्रगटायो ।
भक्तन के उर सुभग देस में सुर सदगुनहि वसायो ॥
प्रमदावन इक रूप रहत नित रास विलास समायो ।
श्रीगुरु सखी रूप सोइ जानो रसमय वपुष सोहायो ॥
आचारज होइ एकपाद में सौलभ गुन गहि आयो ।
नखसिख छबि हिय ध्यान सुकीजै सतचित आनंद भायो ॥
नख सुरसरि तल सारद छबि हर पृष्ठ यमुन दरसायो ।
ललित-त्रिवेनी तीर बसत नित माधव गुल्फ सुहायो ॥

जंघा जानु सुउरु अनूपम कटि सूक्ष्म फलदायो ।
 नाभि रोम त्रिबली वर ग्रीवा भुजकर सुषमा छायो ॥
 सरस ज्ञान अनुभव गुनगन फुर अभय दान भय हायो ।
 चिबुक अधर रद ओठ सुरसना नाम सुयश हलरायो ॥
 घ्रान सुगंध रूप दृग भृकुटी इष्ट प्रेम उमगायो ।
 श्रवन पुकार कपोल पोल हर भाल तिलक सरसायो ॥
 सिर अरु केस परेस रसेसहि श्रीं सुपदहि चढ़ायो ।
 भव्य वसन भूषन प्रति अंगनि सुख आसन थिरतायो ॥
 छत्र चमर विजनादिक सेवा परिकर लाड़ लड़ायो ।
 'प्रेममोद' यह ध्यान सुदुर्लभ सदगुरु कृपा सुपायो ॥

आजु बधाई श्रीसतगुरु की गावो संत सुआई ।
 प्रगट भये साकेत धाम ते जगतारन सुखदाई ॥
 जीव पीव के मध्य मेलहित श्रीगुरु एक उपाई ।
 संसकार युत युगल मंत्रवर दीन्हेउ नात दृढ़ाई ॥
 जागृत स्वप्न सषुप्ति तुरीया हेय ध्येय दरसाई ।
 त्रय रहस्य परतत्व लखायो रस अनन्य सेवकाई ॥
 अष्टयाम सेवा अरु ततसुख अष्टकुंज मन भाई ।
 'प्रेममोद' माधुर्य सुगुरु पर बार बार बलि जाई ॥

—०—

बरष गाँठ श्रीसतगुरुजी की आज सुभग दिन आयो ।
 मंगल मास पाख सित शुभकर लगन योग शुभदायो ॥

गान तान उत्साह सुमंगल सज्जन वृन्द बुलायो ॥
सुमन सुगंध बरषि सबहिन पर हिय अनुराग बढ़ायो ।
भाविक सेवक गुरु उत्सव करि 'प्रेममोद' सरसायो ॥

वलिहारी अली श्री सतगुरु की ।

चिन्मय दिव्य अलौकिक अनुपम

सुख मूलक छवि रसधुर की ॥

प्रगट भयेउ नररूप सुखद हरि

सेवक उर सुचि रुचि फुर की ।

'प्रेममोद' गावत गुन निसि दिन

वास चहत श्रीगुरु पुर की ॥

सोहर

श्री सतगुरु सुखसागर परम उजागर हो ।

ललना प्रगटे जगहित हेतु सुछिति नवनागर हो ॥

जोग लगन ग्रह वार नखत भल सोहै हो ।

ललना मास पाख छबि खानि देखि मनमोहै हो ॥

वाजन लगी बधाई सुपरम सुहाई हो ।

ललना नाचै गावै राग तान नभ छाई हो ॥

देव विमानन आइ निसान बजावै हो ।

ललना जय जयकार सुनाय सुमन भरि लावै हो ॥

तात मात हिय हरष न कछु कहि आवै हो ।

ललना निरखि निरखि सुतवदन सुभाग मनावै हो ॥

जो यह सोहिलो गावहि हिय उमगावहि हो ।
 ललना श्रीसदगुरु ठिग वास रूप निज पावहि हो ॥
 श्रीसदगुरु पद कमल भक्ति मन भावनि हो ।
 'प्रेममोद' रसखानि भाव सुख छावनि हो ॥

-: रेखता :-

बधाई गाइये नीकी । रसिक गुरुदेव वर जू की ॥
 परात्पर धाम के वासी । महा आनन्द सुखरासी ।
 प्रगटि यहि लोक में आके । महा माधुर्य रस छाके ॥
 युगलवर मंत्र को देके । मिलावत जीव अरु पीके ॥
 हमन के भाग से आये । करो उत्साह मन भाये ॥
 सुमंगल साज सजवावो । दुआरे चौक पुरवावो ॥
 कलस अरु दीप धरवाओ । सुवन्दन वार बँधवावो ॥
 सुसाजन वृन्द बुलवावो । नृत्य के भेद दरसाओ ॥
 चलो गुरुदेव दरवाजे । करो मन भावने आजे ॥
 न राखो लाज के ताजे । मचावो मौज के माजे ॥
 महारस मोद में छाके । सुपावो पीव को धाके ॥

रेखता

बधाई गुरुदेव की गावो । मगन रस तोष सुख पावो ॥
 परो ना सोक सागर में । रहो नित स्वामि चाकर में ॥
 गुरु से तत्व नहि श्रुति में । सियावर से मिलन प्रति में ॥
 गुरुजी जिनको नहि प्यारे । साधनो तिनको नहि तारे ॥

लखो यह त्यागि मदमाना । गहो नित स्वामि पदत्राना ॥
करो सुख प्रेम से सेवन । जन्म को लाभ लुटि जीवन ॥

❀ श्री गुरुपूजो ❀

आजु गुरुपूजो परम सुहाई ।
सियपिय अलिन सहित अनुरागे प्रेम न हृदय समाई ॥
चले हरषि सतगुरु पद पूजन साँग सखी समुदाई ।
कनक भवन से दच्छिन निकसे गान तान सरसाई ॥
जाय सकल विधि पूजन कीन्हें बहु विधि लाड़ लड़ाई ।
आशिष पाय चले हरषाई पुनि पुनि शीश नवाई ॥
कनक महल में आय विराजे अलियुत सिय रघुराई ॥
'प्रेमलता' यहि विधि सतगुरु को पूजत सब हरषाई ॥

चलो सखि गुरुपूजन को आज ।

सतगुरु महाराज परमेश्वर जिनकर सिय रघुराज ॥
परम उदार स्वजन प्रतिपालक करुणाकर सिरताज ।
भाव विवस कछु चाहत नाहीं साजत सब सुख साज ॥
वेगि चलो सब सौज सजाई छोड़ि सकल गृह काज ।
'प्रेमलता' श्रीगुरुहि सुपूजति गावत अलिन समाज ॥

❀ सदागुरु भूला ❀

भूला भूलि रहे श्री सतगुरु सावन सुखद सुहावन लाग ।
सेवक गन भरि भाव भुलावत उमगत उर अनुराग ।
करुणाकर तिहुँ रूप धरे जनु भगती ज्ञान विराग ॥

श्याम गौर छबि हिय सुबसाये उज्ज्वलरस सुख पाग ।
 बाजत साज समूह सुहावन सरसत राग विभाग ॥
 आचारज अभिमान भये बिनु गरसत संसय नाग ।
 'प्रेममोद' मिलि गुरुहि भुलावति मनवति अपनो भाग ॥

निरखहु लतन बीच छबि छाई
 सतगुरु भूलि रहे भूलना ।
 सीय सुहाग वाग रसदानी
 अनुपम नाहिन तूलना ।
 श्याम गौर रस रंगन माते
 पाये सुख मूलना ॥
 परिकर सब चहुँ ओर निहारत
 नासे जग सूलना ।
 'प्रेम' सहित निशिदिन यह आनंद
 चाहैं स्वामी भूलना ॥

❀ श्रावण आगम कजरी ❀

निरखौँ अवधपुरी मनभावन, सावन भूलन की छबि छाये ।
 स्याम घटा नभ गरजत बरसत, दामिनि दमक सुहाये ।
 वीरबहूटी जहँ तहँ छाई हरित भूमि दरसाये ॥
 सरिता सर उमगत बन फूले, त्रिविध पवन सरसाये ।
 दादुर कोकिल चातक बोलत, नटत मोर समुदाये ॥
 लालमुनी स्यामा सुक सारो पालित पढ़त उड़ाये ।

सोरठ गौड़ मलार सुकजरी, गावत साज मिलाय ॥
कुंज कुंज प्रति अगनित भूलन सोभा बरनि न जाय ।
'प्रेममोद' सियपियहि भुलावति, सेवति लाड़ लड़ाय ॥

देखो सखि आयो सावनवाँ ।

मधुर मधुर घन गरजत बरसत दामिनि दमक सोहावनवाँ ॥
अवधपुरी मनि भूमि सुहावनि श्री सरयूतट पावनवाँ ।
कुंज कुंज प्रति लगे हिंडोला कनक भवन मन भावनवाँ ॥
गलबाँही दै भूलत दंपति बहु रतिपति छबि छावनवाँ ।
'प्रेमलता' भूलन छबि निरखत हिय अनुराग बढ़ावनवाँ ॥

—: प्रस्तावना :—

नवल सैयाँ चलो भूलै हिंडोरे ।

वन प्रमोद मनि कुंज सोहावन सरजू लेत हिलोरे ।
चहुँदिसि सुमन लता द्रुम सोभित उठत सुगंध भुकोरे ॥
विविध विलास करें मनभाये यह अभिलाष सुमेरे ।
'प्रेमलता' दोउ भूलन लागे रतिपति के चितचोरे ॥

नवल रसिया भुला भूलन आये ।

गुरु गनपति गौरीस पूजि रवि मनसिज देव मनाये ॥
बनिठनि अलिन सहित नखसिखलाई रतिपति कोटि लजाये ।
लखि हिंडोल साल की रचना अति अदभुत सुख पाये ।
भूलन के प्रतिबिंब परत तहँ दसहूँ दिसि छबि छाये ।
'प्रेममोद' भरि भूलन लागे केलि विलास समाये ॥

सैयाँ मोहि दीजै नवल सारी ।
 नवरंग चटक सावनी छबिमय, जगमग जोति किनारी ।
 कुंजनि भ्रमकि हिडोले भुलिहौं, वल्लभ गरभुज धारी ॥
 सुनि प्यारी के वचन रसीले, प्रीतम जिय सुख भारी ।
 'प्रेममोद' अभिलाष पूरि करि, तन मन धन सब वारी ॥

❀ सखी सम्मगम्न ❀

सजन संग भूलन चलो मोरी बीर ।
 अंग अंग नवभूषन सजि के, पहिरि रंगीली चीर ।
 वनप्रमोद द्रुम लता सोहावन, श्री सरयू के तीर ॥
 गरजत घन दामिनि सँग सजनी, बरसत सीतल नीर ।
 दादुर मोर पपीहा बोलत, सारस कोकिल कीर ।
 कनक खंभ मनि रचित हिडोला, लखि मोहत मुनि धीर ।
 भूलत तापर सियरघुनंदन, संग सखिन की भीर ।
 'प्रेमलता' भूलन को निकसी, बाजत पग मंजीर ।

चलो सखि भूलन भूलनवाँ
 वनप्रमोद द्रुमलता कुंज में, श्री सरयू के कूलनवाँ ।
 भूलत सियपिय रस बरसावत, मंद हसनि सुखमूलनवाँ ॥
 वरनि न जाय मनोहर सोभा, उपमा नहि कहूं तूलनवाँ ।
 प्रेमलता भूलन छबि निरखति, बहु रति मनमथ भूलनवाँ ॥

नवल सखियाँ भूलन सब जाती ।
 सजि नवसप्त कुंजतें निकसीं, यूथयूथ मिलि गाती ॥

पहिरे रंगरंग की चोरें, भूषन धुनि सरसाती ।
उमा रमा सारद रति दामिनि, निरखत छबिहि लजाती ॥
कोकिलवैनी खंजननैनी नाह नेह मुद माती ।
'प्रेममोद' सियपिय ढिग पहुंची, अपने भूलि भुलाती ॥

भूमकि अलि भूलन को सब जाती ।

कुसुमी वसन नवल तन सोहत, भूषन धुनि सरसाती ॥
मंद गमन गज हंस लजावन, दुति दामिनि सकुचाती ।
उघरत मंजु मनोरथ छनछन, जुगल केलिरस माती ॥
यहि विधि सब भूलन ढिग आई, दंपतिको जस गाती ।
'प्रेमलता' सियपियहि भुलावत, लखि विनोद सुख पाती ॥

❀ कजरी ❀

मदसे भरी प्रेम मतवारी, भूला भूलन जाती है ।
हरित नील पित अरुनगुलाबी, कुसुमी चीर सुहाती है ॥
हंस मत्तगज गमन लजाती, भूषन दुति सरसाती है ।
सोरठ गौड़मलार सुगाती, कोकिल कंठ लजाती है ॥
पहुंची सब हिंडोल सालमें, भूलन रस बरसाती है ।
नवलअली फँसि प्रेममहलमें, सियपिय लाड लाड लडाती है ॥

❀ तीज झूला ❀

आजु चलु भूलन को पियप्यारी ।
सजि सिंगार मनोहर अंगनि, कीजे वेगि तयारी ।

मनिपर्वतपर सजे हिंडोला, तरु रसाल की डारी ॥
 सावन सुक्ल तीज मनभावन, होत महोत्सव भारी ।
 सुनि अलि बचन हरषि मनदंपति, चले सुभग असवारी ॥
 छत्र चँवर व्यजनादिक सेवा, संग अलीगन धारी ।
 बहु सखि गावति साज वजावति, वीन मृदंग सितारी ॥
 बहु सखि नृत्यति सियपिय आगे, कौतुक कला पसारी ।
 देव सुमन वरसत छवि निरखत, चढ़ि विमान सह नारी ।
 यहि विधि आय भुलनपर बैठे, रघुवर जनकदुलारी ।
 'प्रेमलता' अलि भूलवन लागीं, निरखि सुछवि मनहारी ॥

—०—

भूलत सिया सँग रघुलाल, लीन्हें संग बहु वाल ।
 मनिपर्वतपर लगे हिंडोला, तरुवर ललित रसाल ।
 नवल सिंगार किये नख सिखलौं, तिलक मनोहर भाल ॥
 अलिगन भूमकि भुलावति गावति, चमकत मोतिन माल ।
 बाजत वीन मृदंग तमूरा, भांभ बेनु करताल ॥
 मंद हँसत गलवाहीं दीन्हें, चितवनि परम कृपाल ।
 'प्रेमलता' भूलन छवि निरखत, को नहि होत निहाल ॥

* कजरी *

भूला भूलै प्रीतम प्यारी, सखि सब हरषि भुलावै ना ।
 मनिपर्वत पर आम डारि में, सावन तीज सुहावै ना ।
 बाजत साज समूह सरस धुनि, राग सुतान सुनावै ना ।
 'प्रेममोद' के प्रान जीवन धन, पुनि पुनि वलि वलि जावै ना ॥

क्रिसोरी सँग झूलि रहे रघुलाल ।

सावन तीज मनिन को पर्वत तरुवर सुचि सुरसाल ।

गावति राग रसीली सखियाँ नाचति दै दै ताल ॥

बहु सखि छत्र बिजन कर लीन्हें बहु सखि चाँवर माल ।

‘प्रेमलता’ झूलवति दोउ लालन चहुँदिसि निरखति बाल ॥

❀ युगल झूलन ❀

हिडोले झूलत सिय रघुबीर ।

दुहुँदिसि खंभ नीलपित चारी रचित कनकमनि हीर ।

मरुवा वेलन डाड़ी पटुली विविध रंग पाटीर ॥

वरनि न जाय मनोहर सोभा स्यामल गौर सरीर ।

राग मलार अलीगन गावति ताल देति अति धीर ॥

रंग रंग बर छुटत फुहारे डोलत त्रिविध समीर ।

‘प्रेमलता’ छबि निरखि लुभानी श्री सरयू के तीर ॥

झूलत नवल सियपिय संग ।

हाटक मनिमय रचित हिडोला रचना अजब अभंग ।

दुहुँदिसि अलीगन झमकि झुलावति बाजत ताल मृदंग ॥

गावति राग मलार मनोहर निरतत मोरि सुधंग ।

तरुवर सुमनलता घन राजत बोलत विविध विहंग ॥

सरित सरनि सरसीरुह फूले गुंजत मंजुल भृंग ।

‘प्रेमलता’ झूलन छबि निरखत बढ़त उमंग तरंग ॥

हिडोले झूलि रही प्यारी ।

प्यारो आप भुलावत भूलत छबि निरखत भारी ।
 कबहुँ परस्पर दै गलबाँही आनँद विस्तारी ॥
 वीन मृदंग बजावति सखियाँ छत्र चँवर धारी ।
 'प्रेमलता' दंपतिहि भुलावति तन मन धन वारी ॥

(कजरी)

सावन घूमि घूभि घन गरजै, बरसै सीतल जल चहुँ ओर ।
 छनछन नभबिच दामिनि दमकै भूमि बहत जल जोर ॥
 चातक रटनि कूक कोकिल की कुंजन नाचत मोर ।
 राजकिशोरी भूला भूलत भुलवत राजकिशोर ॥
 बाजत साज अलीगन गावति कौतुक करत अथोर ।
 'प्रेममोद' यहि सुख रस माती भूलि गई निशि भोर ॥

सावन गरजि गरजि घन बरसै सरसै भूलन की बहार ।
 सरयूतौर प्रमोदबिपिन में मनिमय कुंज अपार ॥
 अलिगन भूमकि भुलावहि गावहि कजरी राग मलार ।
 बाजत साज मधुर धुनि छाई वीन मृदंग सितार ॥
 बोलत दादुर मोर पपीहा उपवन बाग मँझार ।
 'प्रेममोद' यह छवि नित निरखत दंपति केलि बिहार ॥

भूला भूमकि भूमकि भुकि भूलहि सियसँग राजदुलारे ना ।
 सरजू तीर हरित बटछाँही परसत है जल डारे ना ॥
 फहरत नीलपीत पट सारी भूषन धुनि भनकारे ना ।
 चातक कोकिल सुक किलकारत मोरिला की कुहुकारे ना ॥

बाजत बीन मुचंग पखावज मुरली ताल सितारे ना ।
'प्रेम' प्रवाह बड़ेउ सरयू में उमगत नीर करारे ना ॥

सखि लखु अवधपुरी की शोभा पावन सरयूजी के तीर ।
वन प्रमोद प्रति कुंज निकुंजनि भूलत सिय रघुवीर ॥
घन दामिनि सँग गरजत बरसत शीतल जल गंभीर ।
दादुर मोर पपीहा बोलत सारस कोकिल कीर ॥
हरित भूमि द्रुमलता सुहावनि डोलत त्रिविध समीर ।
'प्रेमलता' यह अनुपम शोभा देखि भये हिय सीर ॥

भूला भूलि रहे सिय सँग में दसरथ राजदुलारे ना ।
मधुर मधुर घन गरजत बरसत उमगत मोद अपारे ना ॥
वन प्रमोद प्रति कुंज निकुंजनि भूलत रस मतवारे ना ।
हास विलास करत रसपागे गलबहियाँ दुहुँ डारे ना ॥
अलिगन वीन मृदंग बजावैं राग मलार उचारे ना ।
'प्रेमलता' सियपियहि भुलावति रूप अनूप निहारे ना ॥

सावन प्रीतम के सँग सरसै दरसै भूलन की बहार ।
वादर गरजै बिजली चमकै बृंदन परत फुहार ॥
दादुर मोर पपीहा बोलत भिगुर की भनकार ।
अलिगन गावैं साज बजावैं वीन मृदंग सितार ॥
गलवाँही दै सियपिय भूलत लखि लाजत रति मार ।
'प्रेम' समेत अलीगन भुलवति उमगत मोद अपार ॥

❀ मलार ❀

आजु दोउ भूलत श्यामल गौर । रतिमनमथ चितचोर ।
 कनक रतन मनि जड़ित हिंडोला रेशम लागी डोर ॥
 राग मलार अलीगन गावति निरखत छबि अति जोर ।
 घन दामिनि की गरजनि चमकनि रस बरसत चहुँओर ॥
 कोकिल मोर पपीहा बोलत दादुर कर बहु सोर ।
 हरित भूमि द्रुम लता सुमन फल छबि छहरत रसबोर ॥
 त्रिविध समीर चलै सुखदाई सरयू लैत हिलोर ।
 अति अनुराग भरी अलि भुलवति फहरत पट की छोर ॥
 गलबाँही दै भूलत दंपति मंद हसनि मुख मोर ।
 'प्रेमलता' यह छबि अवलोकति मनसिज देत मरोर ॥

❀ लावनी ❀

भूलत लाड़िली लाल दिये गलबाँही ।
 सरसत भूलन भोंक लचकि मचकाहीं ॥
 श्याम गौर मनहरन अंग छबि छाई ।
 देखि देखि रतिकाम अनेक लजाहीं ॥
 रस सागर गुन आगर नागर दोऊ ।
 प्रीति रीति रँग उमगि सुरस वरसाहीं ।
 अरस परस रस वयन मंद हँसि बोलै,
 मुरनि दुरनि करि नयन सुसयन चलाहीं ॥
 बाजहि वर बहु वीन मृदंग मजीरा,
 मधुर मधुर सुर राग मलार सुहाहीं ॥

विबुध तिया छबि देखि हरषि मनमाहीं ।

गावहिं देहिं अशीष सुमन वरषाहीं ॥

अचल होइ सुखराज सोहाग समाजू ।

‘प्रेमलता’ अलि सुनत परम सुख पाहीं ॥

❀ गजल ❀

सखी क्या भूलना भूलैं रसिक दोउ आज रसमाते ।

सजे सब साज सावन को भूमकि भुकि भूमि मुसुकाते ।

परस्पर दीन्हें गलबाँही रमकि रसराज बरसाते ॥

अलीगन नृत्य करि गावैं बजै सब साज मनमाते ।

निरखि यह ‘प्रेम’ को भूलन रसिक रसमोद उमगाते ॥

❀ रागासक्ति ❀

रसिक दोउ होइ रहे चंद चकोर ।

भूषन पट प्रतिविब परत तन स्याम गौर चितचोर ॥

नेह सिधु उमगत उर उज्ज्वल अरस परस रसबोर ।

नाना भाव भेद दरसावत नयनकोर दुहुँ ओर ॥

सहि न सकत बिनु देखे पल दुख बीतत बरस करोर ।

‘प्रेममोद’ बिछुरन के भय से लिपटे युगल किशोर ॥

❀ एक वेष सजे भूलना-कजरी ❀

निरखी एक वेष होइ दोऊ भूला भूलि रहे आली ॥

नर भूषन नख सिख लौं साजे सुन्दर सुख साली ।

अरस परस छबि लखि मुसुकाते गरबहियाँ डाली ॥

सियपियको हम कैसे लखहीं चरचा सब चाली ।
‘प्रेममोद’ अनुपम रस लूटत युमल नेह पाली ॥

बाग में भूलत राजकिशोरी ।
तरु रसाल की डार हिंडोला लागि सुरेशम डोरी ॥
स्यामल राजकिसोर जुगल तन पेंग देत दुहुँ ओरी ।
बंसी वीन मृदंग मजीरा बजत सितार सुजोरी ॥
गावत राग मलार सहेली नृत्य करत अँग मोरी ।
नवल नेह श्री चंपकलतिका ‘प्रेममोद’ रसबोरी ॥

गोस्वामिपाद श्रीतुलसीदासजी महाराज की
बधाई सोहर

राजापुर में आज सुघर घर मंगल हो ।
ललना हुलसी जायो सुवन जगत सब रंगल हो ॥
मूल नखत शनिवार सुअभिजित सुंदर हो ।
ललना गोधूली शुभ समय सगुन सब दिसि भर हो ॥
बाजन लगी बधाई सुपरम सुहाई हो ।
ललना छिति जल पावक पवन गगन छबिछाई हो ॥
सुखमय सावन मास सुरितु भल पावस हो ।
ललना सुकुल पक्ष तिथि सातम सब उर रसबस हो ॥
त्रिभुवन परमानन्द नारि नर हरषहि हो ।
ललना देव विमानन आय सुमन बहु बरपहि हो ॥
विधि हरिहर सब देव तियन युत आवहि हो ।

ललना हुलसी सुत छबि देखि नयन—फल पावहि हो ॥
 बंशी मागध सूत विमल जस गावहि हो ।
 ललना दान सुमान अपार राजपुर पावहि हो ॥
 संतन के हिय मोद न कछु कहि आवै हो ।
 ललना भूलत सिय रघुवीर मलार सु गावै हो ॥
 वंदनमाल वितान कलस ध्वज सोहैं हो ।
 ललना जगमगाहि चहुँ ओर सुछबि मनमोहै हो ।
 बाजत वीन मृदंग साज सब अनगिन हो ।
 ललना अतर सुगंध उड़ाहि उमग सुख छिन छिन हो ॥
 दधि दूर्वा फल फूल तुलसि दल अंकुर हो ।
 ललना कनक सुथारन साजि धरे छबि सुंदर हो ॥
 भूषन वसन सर्वारि नटी नट नाचत हो ।
 ललना केलि कुलाहल कौतुक भाव सुराचत हो ॥
 धन दामिनि वक पाँति इन्द्रधनु राजत हो ।
 ललना चातक कोकिल सोर मोर गन नाचत हो ॥
 वन उपवन वर वाग वाटिका फूलत हो ।
 ललना सीतल मंद सुगंध समीर सुडोलत हो ॥
 हरित भूमि जल वरष बहूटी छबिधर हो ।
 ललना मेघराग युत रागिनि रस धुनि दिसि भर हो ॥
 'प्रेममोद' यह मंगल गाय सुनावहि हो ।
 ललना रामचरित वर तुलसीकृत सुख पावहि हो ॥

राजापुर में बधैया बाजै ।

श्री हुलसी के पुत्र भयो शुभ जग मुद मंगल काजै ।
संतन के घर महा महोत्सव मंगल साज समाजै ॥
सावन सुखद सुहावन सब बिधि भूलत सिय रघुराजै ।
'प्रेममोद' चिरजीवै तुलसी तिहुँपुर छाई अवाजै ॥

❀ बाग का झूला ❀

चमन में भूलत सियरघुराई ।

चहुँदिसि सुमनबाटिका फूली भँवर गुंज रसपाई ॥
ताके मध्य विसाल वेदिका नवरँग मनिन बनाई ।
तापर हेमरतनमय झूला चारि खंभ छबि छाई ॥
फरस वितान खंभ त्रयधारी ध्वज पताक फहराई ।
कुंडी झाड़ डाल मनि झालरि वंदनमाल झुलाई ॥
विविध भाँति के गमले साजे यंत्र छुटत समुदाई ।
सीतल मंद सुगंध सुमारुत चलत विलास बढ़ाई ॥
स्यामघटा नभ गरजत बरसत दामिनि दमक सुहाई ।
चातक कोकिल कीर मोरगन नटत सुपंख फुलाई ॥
साज समूह मधुर सुर बाजत गान तान सरसाई ।
'प्रेममोद' दुहुँ ओर झुलावति निरखत छबि मनभाई ॥

बाग में भूलत सियरघुराई ।

हरित सिंगार किये नखसिख लौं स्याम गौर छबि छाई ।
छत्र चँवर व्यजनादिक लीन्हें संग सखी समुदाई ॥

हरित भूमि द्रुमलता सुमन फल त्रिविध पवन सरसाई ।
मधुर मधुर घन गरजत बरसत दामिनि दमक सुहाई ॥
कोकिल कीर चकोर पपीहा मोरवा सोर मचाई ।
रागमलार अलीगन गावति वीन मृदंग बजाई ॥
गलबाँही दै भूलत दंपति मंद मंद मुसुकाई ।
'प्रेमलता' सियपियहि भुलावति हिय अनुराग बढ़ाई ॥

❀ श्री सरयूतट का झूला ❀

❀ कजरी ❀

सजनी सावन सरयूकूले सियपिय भूलन की छबि छाया ।
वत् उपवन वरबाग वाटिका रितु बसंत सरसाय ॥
दल फल फूल लता द्रुम सरगिरि सोभा बरनि न जाय ।
कंचन कुंज निकुंज भवन बहु चित्र विचित्र सुहाय ॥
स्यामघटा नभ दामिनि दमकत हरित भूमि दरसाय ।
दादुर चातक मोर कोकिला चहुंदिसि सोर मचाय ॥
गावत राग मलार अलीगन साज बजत समुदाय ।
'प्रेममोद' दंपतिहि भुलावति अपनो भाग मनाय ॥

सरयू लेत लहरिया हो, भूलन मनहरिया ।

दुहुँ तट भूलन भोंक सुचलहीं भुकी द्रुमनकी डरिया हो ॥
स्यामगौर प्रतिबिंब परत जल दरसैं केलि अपरिया हो ॥
बाजत साज रागधुनि छाई, सावन सुखद बहरिया हो ।
'प्रेममोद' भाविक उर भूलत, मनिमय अवध नगरिया हो ॥

हिंडोले झूलत गलभुज धारी ।

सरयूतट मनिजड़ित महल में कदम आमकी डारी ।

स्यामवरन रघुवंस लाड़िले गोरी जनकदुलारी ॥

चंद्रकला विमलादि सहेली झुलवति रस मतवारी ।

बाजत साज समूह संगमिलि गान तान मनहारी ॥

मधुर मधुर घन गरजत बरसत दामिनि जोति पसारी ।

‘प्रेममोद’ यह सुख नित उमगत भाविक हृदय मंझारी ॥

पचरँग कली वन फूलियाँ ।

छवि भँवर गुंज रस झूलियाँ ।

नील पीत सित अरुन गुलाबी मदन हीय बिच झूलियाँ ।

सरयू पुलिन प्रमोद विपिन में पियप्यारी नित झूलियाँ ॥

अगनित यूथ अलोगन त्रयवय जिहि रमा सेव पद धूलियाँ ।

‘प्रेममोद’ रसराज विभव यह अगम अनूप अतूलियाँ ॥

॥ कजरी ॥

झूला झूलि रहे रसमाते सियपिय श्री सरयू कीनार ।

स्याम गौर अनुपम मनमोहन साजे नवल सिंगार ।

वनप्रमोद फुले चहुंओरी त्रिविध पवन सँचार ॥

स्याम घटा नभ गरजत वरसत भूमि बहत जलधार ।

सजि नवसप्त अलोगन झुलवति गावति गौड़ मलार ॥

बाजत जंत्र समूह सुहावन सरसत युगल विहार ।

‘प्रेममोद’ रसिकन उर उमगत आनंद सिंधु अपार ॥

नवल रसिया भूलन रसमाते ।

स्याम गौर अनुपम मनभावन बहु रतिकाम लजाते ॥
अरस परस अंसन भुजधारे मंद मंद मुसुकाते ।
लचकि मचकि भुकि भूमत दोऊ राग मलार सुगाते ॥
वन प्रमोद सरयूतट कुंजन रसवर्षा बरसाते ।
'प्रेममोद' रसिकन उर भूलत भाविक भाव बढ़ाते ॥

❀ कजरी ❀

निरखौ सरजूतट मम आली सियपिय भूलत हैं हिंडोर ।
कदम डार भुकि वेलि भार से भूमि परस चहुँ ओर ।
तातर हेम रतनमय भूला रवि ससि कोटि उजोर ॥
फरस घाट सोपान विमल जल धार उमग दुहुँ कोर ।
भूलनको प्रतिबिंब परत जल अदभुत छबि रसबोर ॥
बाजत साज राग धुनि छाई नटत मोर करि सोर ।
'प्रेममोद' अलि भूलि भुलावति दुहुँ ओर गहि डोर ॥

॥ कजरी ॥

भूला भूलि रहे कुंजन में सावन सरजूजी के तीर ।
रघुनंदन मिथिलेश नंदिनी संग सखिन की भीर ॥
लता वितान द्रुमनि पर छाये डार परसि रहि नीर ।
जलचर वृंद उपर होइ आये निरखत सिय रघुवीर ॥
स्यामघटा नभ दामिनि दमकत सरसत त्रिविध समीर ।
दादुर भिगुर मोर पपीहा बोलत कोकिल कीर ॥

बाजत साज गान अलि करहीं वरसत सुख रस हीर ।
 'प्रेममोद' तुरिया तन दरसत नासत तीन सरीर ॥

॥ कजरी ॥

भूला भूले सरयूकूले दरसे सावन की बहार ।
 रसमय भूलन भोंक सुचलहीं मनिमय कुंज अपार ॥
 लतावितान द्रुमन पर छाये नीर परसि रहि डार ।
 स्याम गौर प्रतिबिंब परत जल झलकैं केलि विहार ॥
 सीतल मंद सुगंध पवन बह भरभर परत फुहार ।
 घन गरजै चमकै दामिनियाँ चातक मोर पुकार ॥
 वीन मृदंग बजाय अलीगन गावहि गौड़ मलार ।
 'प्रेममोद' माधुर्य भाव भरि राई लोन उतार ॥

भूलनवाँ भूलैं सियपिय संग ।

वनप्रमोद सरयूतट कुंजनि रचना अजब अभंग ।
 त्रिविध समीर भँवर गुंजारैं बोलत विविध विहंग ॥
 अलीगन हरषि भूलावैं गावैं बाजत वीन मृदंग ।
 'प्रेममोद' रसराज केलि लखि बाढ़त उमंग तरंग ॥

॥ कजरी ॥

देखो सरयूतट मोरी आली भूला भूलत हैं सियस्याम ।
 नवल सिंगार किये नखसिखलौं सुभग अंग सुखधाम ।
 कदम डारि में लगे हिंडोला रचना ललित ललाम ॥
 मनिमय घाट विमल जल पावन तीर तीर आराम ।

अलिगन गावति साज बजावति मोद भरी वसुयाम ॥
वरनि न जाय मनोहर सोभा लखि राजत रति काम ।
'प्रेमलता' यह अनुपम भूलन देखि लहेउँ विश्राम ॥

❀ नाव पर झूला ❀

नावपर झूलि रहे दोउ संग, श्री सरयू के उछंग ।
दसरथनंदन जनकनंदिनी स्याम गौर नव अंग ॥
कनककील चंदन की नौका चित्रित मनि नवरंग ।
सप्तखंड मनिकुंज चहुँदिसि द्वार हजार अभंग ॥
मध्य हिंडोल मनोहर रचना पुतली भँवर विहंग ।
वरषत घन दामिनिकी चमकनि सरयू होत उमंग ॥
राग मलार गाय अलि नाचति बाजत वीन मुर्चंग ।
'प्रेमलता' यह अनुपम शोभा लखि रतिमदन सुदंग ॥

॥ कजरी ॥

देखौ नौका पर सखि झूलै रघुवर जनकदुलारी ना ,
श्री सरयूके बीच धार में छूटी नाव अपारी ना ।
टुहुँ तट मनिमय कुंज बाटिका जल प्रतिबिंब अटारी ना ॥
जलखग कूजत अलिगन गुंजत कमल खिले रँग चारी ना ।
जलके जंतु भये सब ऊपर दंपति रूप निहारी ना ॥
चढ़े विमान सुमन सुर वरषत बधुन समेत सुखारी ना ।
'प्रेमलता' सियपियहि झुलावति लखि छबि तन मन वारी ना ॥

❀ कनक भवन का भूला ❀

महल में भूलत प्रीतम प्यारी ।

सुमनबागे बिच सुभग सरोवर तामधि वेदी भारी ॥
 तापर कुंज विसाल सुमनिमय चित्र विचित्र सँवारी ।
 एकसत अष्ट द्वार मनभावन लक्ष खंभ की धारी ॥
 फरस वितान सुवंदनमाला बहुरँग भाड़ अपारी ।
 चहुँदिसि छुटत फुहार इतर के डोलत त्रिविध बयारी ॥
 वक्रपांती सुरधनु घनदामिनि इनकी छवि नभ न्यारी ।
 चातक मोर कोकिला कूजत भँवर गुँज मनहारी ॥
 बाजत साज मधुर धुनि गावत सूहो गौड़ मलारी ।
 'प्रेममोद' भरि अलिगन भुलवति निसिदिन रहत सुखारी ॥

॥ कजरी ॥

देखो कोठे पर मोरी सजनी भूला भूलत हैं दोउ आज ।
 कनक भवन मनहरन सुहावन सकल भुवन सिरताज ॥
 जनकलली रघुलाल सलोने सँग लिये अलिन समाज ।
 श्याम घटा बिच दामिनि चमकै चहुँदिसि हरिधनु राज ॥
 वकराजी नभ उड़त सुहावनि मधुर बरसि घन गाज ।
 हरित वितान तने मनभावन जल रोकन के काज ॥
 राग मलार गाय अलि नाचनि बाजि रहे सब साज ।
 'प्रेमलता' यह अनुपम सोभा लखि रतिपति बहु लाज ॥

॥ लावनी ॥

लखु कनकभवन में आज नवल छबि छाई ।
 भूलत संग हिंडोल सिया रघुराई ॥
 उपवन बीच सुवाग वाग बिच सरवर ।
 सरमधि भूलन कुंज अनूप सुहाई ॥
 एकसतक अरु आठ द्वार चहुँ ओरी ।
 जगमोहन मनि खंभ वितान तनाई ॥
 तामधि लगेउ हिंडोल मनोहर रचना ।
 चित्र विचित्र बनाव बरनि नहि जाई ॥
 श्याम जलद नभ छाये दामिनी चमकै ।
 गरजि गरजि चहुँ ओर मधुर बरसाई ॥
 चातक दादुर मोर कोकिल बोलै,
 सीतल मंद सुगंध पवन पुरवाई ॥
 सजि सजि नवल सिंगार भुलावन आई ।
 करतीं विविध विनोद अली समुदाई ॥
 दंपति की छबि देखि भुलावैं भूलैं ।
 वीन मृदंग बजाय गान भरि लाई ॥
 'प्रेमलता' छबि देखि मगन सब आली ।
 लागी देन अशीष भुलन मत्त भाई ॥

❀ धीरे से झुलाने की प्रार्थना । कजरी ❀
 प्यारे भूलन भोंक सँवारो डरपन लागे जीया मोर ।

करकत कदम डारि भुकि लचकत भूमि परस पट छोर ।
 बेनी छुटि लहरत लट मुखपर नासा नथ भकभोर ॥
 जोश भरे पिय मानत नाहीं जनवत जोवन जोर ।
 'प्रेममोद' प्यारी की वानी प्रियतम को रसबोर ॥

❀ श्री प्रियाजू का मान ❀

भूलनपर आड़ि किये पिय प्यारी ।
 भूलनवीर कहावनके हित हटत नहीं हठ भारी ॥
 बहुरि समुझि प्रिये मान सुनागर सब दिनकी निज हारी ।
 'प्रेमसखी' पिय हारि सुमानी सिय निज जीत सँवारी ॥

॥ कजरी ॥

प्यारी लाल मनावन आये चलिये भूलन हिंडोर ।
 तुम बिन सावन सुखद एक छन बीतत बरस करोर ॥
 सब गुन आगरि नवल सुनागरि उमगत जोवन जोर ।
 स्याम जलद बिच दामिनि विलसत रस बरसत चहुँओर ॥
 वनप्रमोद सरयू तट फूल्यो सरस विहंगम सोर ।
 राजकिशोर खड़े तव आगे विनय करत कर जोर ॥
 वेगि छयलके गर उठि लागो छाड़ो मान मरोर ।
 'प्रेममोद' पद परत नाहको मिलिये सुखमें बोर ॥

भूलनपर मान किये सिय प्यारी ।

प्रीतम करज लगाय चिबुक तर मुख मृदु बचन उचारी ।
 भूलहु मम सँग राजकिशोरी मेटि चूक दुख भारी ॥

अब हम अतिशय भोंक न दैहैं लखि मृदुता मनहारी ।
'प्रेम' सने सुनि बचन नाहके लिपटी गरभुज डारी ॥

❀ श्री प्रियत्तम का झुलाना प्रियाजू को ❀
रंगीली सिया झूला झूलन लागी ।

खंजन मंजु नयनकी चितवनि नाह नेह रस पागी ।
राम रंगीले झूलवत रस भरि निरखि अलिनि अनुरागी ॥
चंद चकोर परस्पर होइ रहे तन भूले पल त्यागी ।
'प्रेममोद' दुहुँ ओर सँवारति रसवेदी बड़भागी ॥

॥ कजरी ॥

झूला झूलि रही सियप्यारी, प्यारे राम झूलावै ना ।
कनकभवत मनि जड़ित हिंडोला रसमय डोरि सुहावै ना ॥
गगन घटा घन बिजुली चमकै बुन्दन भरी लगावै ना ।
कोकिल कीर चकोर पपीहा मोरवा सोर मचावै ना ॥
मधुर मलार अलीगन गावै ताल मृदंग बजावै ना ।
'प्रेमलता' गलवाँही दीन्हें दंपति छबि दरसावै ना ॥

॥ पूर्वी ॥

लखु सखि झूलत नवल हिंडोरे, लताभवन दोउ आज रामा ।
सिय प्रीतम गलबाँही दीन्हें, लीन्हें सखिन समाज रामा ।
रागमलार गाय अलि नाचत बाजि रहे सब साज रामा ॥
वरनि न जाय मनोहर सोभा, लखि रतिपति बहु लाज रामा ।
'प्रेमलता' दंपतिहि झूलावति, स्वकर करत सब काज रामा ॥

॥ पूर्वी ॥

भूमकि भूमकि भूला भूलहि सिय सँग राजकुमार ।
 अलिन सहित दोउ सुंदर सजि तन नवल सिंगार ।
 अष्टकुंज वन द्वादश कंचन भवन मभार ॥
 गुल्म लता द्रुम फूलेउ श्री सरयूके किनार ।
 धन गरजनि खग कूजनि भँवर वृंद भनकार ॥
 षटरितु रागिन रागन गावहि ताल सँभार ।
 'प्रेममोद' रसभावन लूटत सुरस अपार ॥

❀ श्रावणी पूर्णिमा । लावन्ती ❀

सावन पूरनमास भयउ सखि आजू ।
 अवधपुरी सब छयउ उछाह समाजू ।
 कनकभवन के मध्य भूलन पर राजै,
 नखसिख सजे सिंगार सिया रघुराजू ॥
 बहु सखि विप्र सुवेष बनाय हाथ लै राखी,
 बाँधति हैं पढ़ि मंत्र सुमंगल साजू ।
 बहु सखि साज बजाय गायपद नाचै
 वोन मृदंग मुचंग सुछाई अवाजू ॥
 रक्षा द्विजकर बाँधि अशीष सुनावें
 अचल होहु सुखराज सोहाग समाजू ॥
 'प्रेमलता' दक्षिणा निछावरि पाये ।
 हरषि हरषि सब विप्र लगे निज काजू ॥

❀ रक्षावन्धन ❀

शुक्ल श्रावनी परब सुहावनि रक्षावंधन सोह ।
गुरुवसिष्ठ द्विजगन लै आये पियाप्यारी छबि जोह ।
अलिन सहित दंपति कर कमलनि बांधत सुख संदोह ॥
दान मान दच्छिना निछावरि लीन्ह सुमुनि मन मोह ।
'प्रेममोद' सखि मंगल गावति भूलन रस चित पोह ॥

सखी लखु रक्षा वंधन आज ।
पियाप्यारी के करकमलन में बांधि रहे द्विजराज ।
वेदमंत्र पढ़ि हरषि हरषि हिय निरखत युगल समाज ।
'प्रेमलता' दक्षिणा निछावरि लीन चले निज काज ॥

भयो सखि पूरन सावन मास ।
पियाप्यारीके भूलन देखे सुफल भइ हिय आस ॥
मंगल चौक कलस धरि आली नव अंकुर सुचि बास ।
रक्षाबंध करावति सबमिलि गावति सहित हुलास ॥
वेद मंत्र धुनि चहुँदिसि छाई चिरजीवो सुखरास ।
'प्रेमलता' दृग नित दोउ भूलौं रसमय प्रेम प्रकास ॥

❀ झूला विसर्जन ❀

भूलन ते उतरि चले ललिलाल ।
सेवासाज सजे सँग सोहै मवल रंगीली वाल ॥
मंदमंद पग धरत अवनिपर नूपुर सबद रसाल ।
व्याह कुंज रसिक दोउ पहुंचे बैठे चीक विसाल ॥

अलिन सहित व्यारु करि अँचवन अतर पान लै माल।
 आलस लखि अलि शयन करायो पौढ़े परम कृपाल॥
 कोटिन रति मनमथ लखिलाजे अंग अंग छबि जाल।
 'प्रेमलता' रसकेलि विलोकति चरन सेइ सब काल॥

❀ भादों जल विहार ❀

रसिक दोउ खेलत नाव नवारी ।
 श्री सरयूकी नहरि महलमें तामें नाव अपारी ।
 सप्तखंड चंदनकी नौका चहुँदिसि खँभ हजारी ॥
 चित्र विचित्र मनोहर रचना रंग रंगकी न्यारी ।
 फरस वितान कलस ध्वज वंदन मोतियन भालरदारी ॥
 मध्य सिंहासन सियपिय राजत अलिगन सेवा धारी ।
 बहु सखि साज बजावहि गावहि नृत्यकला बिस्तारी ॥
 दुहुँ तट भीर भई अति भारी बहु सखि चढ़ी अटारी ।
 जलके जीव भये सब ऊपर छबि निरखत मनहारी ॥
 चढ़ी विमान सुमन सुर बरसत सुखी भये सह नारी ।
 'प्रेमलता' अनुपम जल भूलन निरखत अलिन सुखारी ॥

नावपर खेलत प्रीतम प्यारी ।

श्रीसरयू मनिघाट मनोहर स्वच्छ सुभग सुचि वारी ।
 दुहुँ तट भीर भई अति भारी निरखत छबि नर नारी ॥
 छोरत नाव परस्पर दंपति हार जीत की यारी ।
 सियकी नाव जोति सखि आई, प्रीतमकी सखि हारी ॥

देवनिसान बजाय सुगावहि सुमन वरषि युत नारी ।
'प्रेमलता' छबि निरखत आली जय जयकार उचारी ॥

सरजू बिच नाव बनी आली ।

अति बिस्तार मनोहर रचना निरखि लोभानी रति माली ।
एक लक्ष वर द्वार सुहायो खंभन पुतली मनि ढाली ॥
चित्र विचित्र चाँदनी तानी वंदन मुक्ता मनि जाली ।
तामधि कमलाकार सिंहासन राजत दंपति सुखसाली ॥
छत्र चँवर लिये अलिगन सोभित बाजन गान नृत्य ख्याली ।
'प्रेमलता' सियवल्लभ ऊपर बहु रतिमार वारि डाली ॥
॥ कजरी ॥

निरखौ सरयूजी की शोभा पावन धार विमल बहती ।
आवर्ते अरु भँवर तरंगें अगनित जंतु लखाती ॥
विविध भाँति की नौका चलहीं रचना बरनि न जाती ।
दुहुँ तट कमल कुमुद बहु फूले भृङ्ग गुंज मन भाती ॥
सारस हंस सुवत्तक कुक्कुट कूजनि मधुर सुहाती ।
दरस परस मज्जन अरु अचवन करते 'प्रेम' बढ़ाती ॥

निरखु सखि नावन की छबि छाई ।

मृदु पाटीर मनिन की रचना सुमन सुगंध सिंचाई ।
ललित खंभसुठि सुभग वितानें भालरि जलज लगाई ॥
मध्य सिंहासन सियपिय राजत चहुँदिसि सखि समुदाई ।
छत्र चँवर व्यजनादिक लीन्हें गावत साज बजाई ॥

हाव भाव करि बहु सखि नाचति नूपुर धुनि सरसाई ।
 बरनि न जाइ मनोहर सोभा बहु रति काम हेराई ॥
 सिव ब्रह्मादि देव सह नारी हरषि सुमन बरषाई ।
 'प्रेमलता' अनुपम छबि निरखत आनंद सिन्धु समाई ॥

सरजू मध्य नावपर बिहरत रघुवर जनकदुलारी ।
 कनक कील मनि खचित चंदन की नाव नवल अतिभारी ।
 तापर सुभग चाँदनी तानी मोतियन भालरदारी ॥
 फरस खंभ मेहराव चहुँदिसि बनी हजारन द्वारी ।
 ध्वज पताक बहु वंदनमाला कुंडी भाड़ सँवारी ॥
 मध्य भाग भूलन पर राजत अलिन सहित पिय प्यारी ।
 छत्र चँवर व्यजनादिक सौजें लीन्हें नव सुकुमारी ॥
 बाजत साज मधुर स्वर सुंदर नृत्यगान मनहारी ।
 दुहुँ तट कुंजन ते सब निरखत भीर लगी नर नारी ॥
 भादो शुक्ल दिवस हरिवासर यह उत्सव सुखकारी ।
 'प्रेममोद' भरि छबि अवलोकत प्रति संवत चख चारी ॥

❀ पद ❀

नवल दोउ खेलत सरजू धार ।
 नृपनंदन श्री राजकुमारी संग अलि सौज सँभार ॥
 मनिन जड़ित चंदनकी नौका छूटी विविध प्रकार ।
 केलि कुतूहल रसमय दुहुँदिसि बाजन गान अपार ॥

बड़ भागी नर नारि दुहुँतट निरखत छवि भरि प्यार ।
'प्रेममोद' नभ सुमन वरषि सुर जयजय सब्द उचार ॥

आज दोउ खेलत नाव नवारा ।

रघुनंदन अरु जनकनंदिनी सँग अलि यूथ अपारा ।
मनिन रचित बहु नाव चंदन की छूटी सरयु मधि धारा ।
दुहुँतट भीर भई मनभावन देव विमान सँवारा ॥
नृत गान बहु साज बजावति कौतुक केलि पसारा ।
'प्रेममोद' जलयान केलि रस, अपने नयन निहारा ॥

❀ पद ❀

नवल नावपर सियपिय राजत सहचरि सेवा सौज सुधारे ।
बाजत बाजन मधुर गान धुनि नृतत नटि नटकला पसारे ॥
दुहुँतट भीर भई मनभावन नभ सुर निरखत जान सँवारे ।
'प्रेममोद' हरिवासर के दिन लूटत सुख तन भान विसारे ॥

खेलत नावरि सरयूसरि में सिय सँग राज दुलारे ॥
सेवा सौज सजे सब अलिगन मनमें मोद अपारे ।
छूटि हजारन नाव सुहावनि नृत्यगान मनहारे ॥
निरखत दुहुँतट लोग मगन नभ देव विमान सँवारे ।
'प्रेममोद' दंपति रस भीजे विहसत गल भुज धारे ॥

नवल नाव सरयू बिच छूटी निरखु अली छवि छाई ।
विविध रंग आवरन मनोहर चित्र विचित्र बनाई ।

फरस वितान खंभ मेहराफैं ध्वज पताक फहराई ॥
 अगनित द्वार खंड प्रति सोभित वंदनमाल भुलाई ।
 मध्य भाग एक एक सिंहासन चहुँदिसि कवच धराई ॥
 अलिन सहित राजत सियवल्लभ सेवा सौज सजाई ।
 बाजत साज गान करि नागरि नटत भाव दरसाई ॥
 दुहुँ तट मनिकुंजन तें निरखत नर नारी समुदाई ।
 देव सुमन वरषत दै आशिष 'प्रेममोद' सरसाई ॥

❀ विजयोत्सव ❀

साजुसाजुरी मंगलसाज आजु विजय दशमी है ।
 कुंजकुंजतें अलीचली सब सजिसजि नवसत साज ।
 सियरघुवरकी निरखि माधुरी हरषी सखिन समाज ॥
 मंगल सगुन रूप धरि आयो स्वामी सेवक काज ।
 'प्रेमलता' सब देत अशीषैं अचल होइ सुख रोज ॥

चलो सखि देखन सिय रघुनंद ।

सुभग दसहरा चौक विराजत छबि त्रिच दामिनि कंद ।
 मंगल भेट सजे चहुँदिसिते आवति सखियन वृंद ॥
 करि जुहार जुग रूप विलोकति मनहुँ चकोरो चंद ।
 'प्रेमलता' उत्साह भरी सब परी नेह के फंद ॥

सुभग दसहरा चौक विराजत जानकिवर मन मोद भरे ।
 विविध वेषधरि अलिगन सेवति स्वस्ति सांति रसगान करे ॥

कदलि रसाल बाँस पुंगीफल द्वारनि वंदनवार लरे ॥
 कनक कलस मंगल भरि थारन सगुन सुहावन दरस परे ।
 विप्र वेष धरि देत जवांकुर बहुविधि आसिष स्वर उचरे ॥
 दछिना देत लेत मन भावन देव विमानन सुमन भरे ।
 नीलकंठ उड़िउड़ि अँग वैठत सियपिय कर गहि खेल सरे ॥
 निरतत नटी रागतालन सों कौतुक लचकि अङ्ग सगरे ।
 'प्रेममोद' सुख लूटत नित नव स्यामगौर छवि नैन भरे ॥

विजय दसमी पियप्यारी की आज ।

सुभग दसहरा चौक विराजत अलिगन सेवा साज ।
 वंदनवार पताका केतू कलस चौक छवि छाज ॥
 दधि दूर्वा फलफूल जवांकुर मंगल खग भल भ्राज ।
 देव वधूटी नाचत गावत साज मधुर सुर बाज ॥
 नवल सिंगार किये नखसिख लौं बैठे सिय रघुराज ।
 'प्रेममोद' छवि छटा विलोकति बहु रतिपति लखि लाज ॥

सुभग दसहरा चौक नवल दोउ राजत राज सिंगार किये ।
 मनहु अलौकिक रतिमनमथ छवि संग अमित रितुराज लिये
 मंगल भेंट होत सब दिसितें गोरे स्याम छवि नयन पिये ॥
 नृत्यगान बहु होत साज धुनि सुख संपति वरदान दिये ।
 'प्रेममोद' रसकेलि सुजीवन रसिक पाय जग सुसुख जिये ॥

युगल छवि आजु न कछु कहि जाई ।

सुभग दसहरा चौक विराजत सीय सहित रघुराई ॥
 नवल सिंगार किये नखसिखलौं बहु रतिपति छबिछाई ।
 छत्र चँवर व्यजनादिक सेवा लीन्हें सखि समुदाई ॥
 बहु सखि मंगल भेंट लै आई अरपति सीस नवाई ।
 नीलकंठ बहु सखि दरसावति जब अंकुर बहु लाई ॥
 बहु सखि गावति साज बजावति नृतत भाव दिखाई ।
 'प्रेमलता' अनुपम छबि निरखत अलिंगन विजय मनाई ॥

सुभग दसहरा चौक विराजे रघुवर जनकदुलारी ।
 छत्र चँवर व्यजनादिक सेवा सौज सह अली अपारी ॥
 मंगल चौक वितान कलस ध्वज झालरि वंदनवारी ।
 दधि दूर्वा फलफूल जवांकुर सजे धरे मनिथारी ॥
 नीलकंठ बहु उड़त सुबोलत निरखि हँसत पियप्यारी ।
 बाजत साज गानकरि नाचत 'प्रेममोद' बहु नारी ॥

सखि विजय दसहरा आजुरी ।

सिय रघुवर को सुयश छयो जग देव दुंदुभी वाजरी ।
 घरघर यह उत्साह अवधपुर नर नारी सुख साज री ॥
 भूषन वसन साजि नव दंपति राज सिंहासन राजुरी ।
 मंगल द्रव्य लिये चहुँदिसि तें भेटत पूरनकाज री ॥
 गावत गंधर्व अप्सरा नाचत लावत कौतुक नाज री ।
 'प्रेमलता' यह अनुपम सोभा निरखत सखिन समाज री ॥

सुभग दसहरा चौक सुसियपिय बनि ठनि आय विराजे ॥
 स्यामगौर वर वरन हरन मन लखि रतिपति बहु लाजे ।
 छत्र चँवर व्यजनादिक सौजें साजे अलिन समाजे ॥
 मंगल सगुन भेंट बहु आये सूचक विजय सु काजे ।
 'प्रेममोद' सुरनटी सुनाचहि गावति यंत्र सुबाजे ॥

❀ रास विह्वार ❀

रास का उपक्रम :—

पिअरवा भूमकत आवै आज ।

जनकलली की छबि अवलोकत छाकि रहे रसराज ।
 पग नूपुर कटि किकिनि बाजै नटनि बसन तन भ्राज ॥
 उर मोतिन की माल विराजत डोलत कुंडल ताज ।
 'प्रेममोद' अलिगन छबि निरखै गावत साज सुबाज ॥

पग धीरे धीरे धरिये रासेश्वरी ।

अति कोमल सुकुमार सलोनी रूप सुरंग भरी ॥
 नूपुर धुनि सुनि अति सुख सरसत तान सुराग भरी ।
 गौरवरन पर स्यामल सारी घन दामिनि दुति मंदकरी ॥
 भूषन युत मुखचंद अनूपम रास अजिर नभ जोति सरी ।
 पिय चकोर लखि तनमन फूले रसमाला रससिन्धु परी ॥

चलो सखि नटवर साज बनाई ।

वन प्रमोद के रास महलमें आनंद रस बरसाई ॥

हाव भाव करि साज बजावैं पियप्यारी गुन गाई ।
 युगलकिसोर प्रानधन-जीवन बहु बिधि लाड़ लड़ाई ॥
 सियस्वामिनिकी कृपा सहेली महल-टहल मनभाई ।
 'प्रेमलता' सतगुरुकी करुना आनंद सिन्धु समाई ॥

नवल दोउ रासकुंज में आये ।

अरस परस गलबाँही दीन्हें नटवर बेष बनाये ॥
 छत्र चँवर लिये अलिंगन सोहै सेवा सौज सजाये ।
 मंद गमन गज हंस लजावन नूपुर धुनि सरसाये ॥
 कुंजेश्वरी आरती कीन्हों मनिभूषन निवछाये ।
 आय सिंहासन राजे दंपति 'प्रेमलता' मन भाये ॥

किये दोउ राजत रास सिंगार ।

युगल सखी सिर छत्र फिरावैं युग युग चँवर सुठार ।
 षोडश सखी बाद्य सजि चहुँ विधि वीन मृदंग सितार ॥
 अमित अली नवबरन मनोहर सोभित मंडलकार ।
 'प्रेमलता' करि रास आरती निरतति सुछबि निहार ॥

—०—

रास मंडल राजत पियप्यारी अति सोभा सरसाइ रही ।
 नवल सिंगार किये नखसिखलौं स्यामगौर छबि छाइ रही ॥
 बहु सखि छत्र विजन लिय चाँवर कोउ सखि पान पवाइ रही ।
 बहु सखि वीन मृदंग लिये कर साज अनेक बजाइ रही ॥
 बहु सखि नृत्यति दंपति आगे गान मधुर सुर गाइ रही ।
 'प्रेमलता' रसरंग बढ़ावति यह शोभा मन भाइ रही ॥

❀ सखियों के नृत्यगान ❀

छुमछननन नाना गति लावै सुनि दंपति के मन भावै ।
बाजत वीन मृदंग मजोरा नूपुर ताल मिलावै ॥
नयनसयन करि भाव बतावै नभ मंडल स्वर छावै ।
कबहुँ खड़ी सब तन नहिं डोलै कबहुँ तालसे धावै ॥
कबहुँ चक्र सम कर गहि घूमै कबहुँ बिलग होइ जावै ।
'प्रेमलता' रसरंग बढ़ावै गान तान सरसावै ॥

आवो गावैं माधुरी तान रास रस रंग भरी ।
हाव भाव अंग मोरि सहेली रासमंडल करि मदन भरी ।
रसिक सुजान सवहिके मनकी आस पूरिहैं रंग ढरी ॥
रास बिलास करहि मनभाये सियस्वामिनि बस नाह करी ।
श्यामगौर छबि देखि मनोहर 'प्रेमलता' रससिंधु परी ॥

देखो देखो अलीरी आज, युगल छबि नवल बनी ।
सियपिय ललित सिंहासन राजै रतिमनमथ को मान हनी ।
गौर स्याम मनहरन सोहाये छबि सिंगारमय अंग सनी ।
भूषन वसन नवल तन सोहै अनुपम उपमा कौन भनी ।
पान खात मुसुकात रसीले डोलत नासा नवल मनी ।
'प्रेमलता' सियपिय छबि निरखत नवल छबीली मोद ठनी ॥

लाल तेरे नयन मदन रस माते ।
कंज खंज मृग मीन लजावन अनुपम नहिं उपमा के ॥

प्यारीके तन छनछन हेरत कोटि काम से बाँके ।
‘प्रेमलता’ अगजग के मोहन एकबार के ताके ॥

❀ प्रियतम का नृत्यगाम् ❀

रासमें रंग मचावो पिया ।

नवकिसोर चितचोर छबीले नवनागरि सुकुमारि तिया ।
अंग अंग रस भरी रसीली मदन मनोरथ उमग हिया ॥
मन भावत रस छको छबीले तोष करो आनंद जिया ।
‘प्रेमलता’ सियपिय रसकेली देखत हिय धरि सुरति दिया ॥

नृपलालन की सुंदर नटनियाँ रे ।

फहरत पीत वसन चटकीलो नूपुर पग भ्रमकनियाँ रे ।
अङ्ग सुगंध उड़त मनभावन भूषणकी चमकनियाँ रे ॥
भाव भरे मृदु तान उचारनि चितवनि रस बरसनियाँ रे ।
‘प्रेममोद’ स्वामिनिके सुखमें प्रीतम हिय उमगनियाँ रे ॥

लखु नटनि कला छबि लालन ।

रंग भरी गति लेत मनोरम भावन अंगन हालन ।
फहरनि वसन विभूषन चमकनि चितवनि रस सिर चालन ॥
तान लेत मृदु गान अनूपम बाजत सब मिलि तालन ।
‘प्रेममोद’ सियपिय सुख भीनी प्राननाथ रुचि पालन ॥

॥ लावनी ॥

नृतत लाडिलै राम ललिहि दरसाते ।

मंडल रास बनाय अलिन सँग राते ॥

गति धिरकि घूमि भुकि लेत कमर लचकाते ।

नूपुर धुनि सरसात सुसम पर आते ॥
हाव भाव कर मोरि सुपट फहराते ।

मधुर मधुर सुर गान सुतान बढ़ाते ॥
अलक छुटी मुखचंद भौह चमकाते ।

नासामनि हलरान सुग्रीव नचाते ॥
'प्रेमलता' सिय सेइ पियासुख पाते ।

प्रीतम रास विलास सखिन मन भाते ॥

प्यारे नृत्यत लाडिली आज कला दरसाय रही ।

नूपुर मधुरगति पगनि मुसमधरि किकिनि धुनिसरसाय रही ।

चंचल चख कर मुरनि दुरनि करि हाव भाव छहराय रही ।

ग्रीव हलनि कलमंद हसनि छबि मधुर सुधा बरसाय रही ॥

वंक तकनि सिर भुकनि मनोहर गान तान नभ छायाय रही ।

करुना कोष भरी सिय स्वामिनि 'प्रेमलतहि' अपनाय रही ॥

रास महल प्रीतम रघुनंदन निरतत रस मतवारे ।

गावत सिय गुन रूप अनूपम नयनन सुछबि निहारे ।

छुमछुम छुमछुम नूपुर बाजै कटि किकिनि भनकारे ॥

मोर हंस पाशावत गति लै कंदुक करनि उछारे ।

'प्रेममोद' सिय निरखि मगन भइ आनंद सिंधु अपारे ॥

रसरंग भरी छबि प्यारी अंग तरंगन पर बलिहारी ।

वेनी अलक सर्वेदी टीका मोतिन माँग सँवारी ।
 सीस चंद्रिका श्रवन विभूषन भाल तिलक दुतिकारी ॥
 भृकुटी नयन कपोल नासिका वदन चिबुक मनहारी ।
 कंठ उरज भुज नाभि श्रोनि तट ऊरु जानु जंघा री ॥
 नखसिखलौं वर वसन विभूषन जगमग जोति पसारी ।
 'प्रेममोद' की सर्वस स्वामिनि मेरी प्रान अधारी ॥

नवल प्यारी रसदानी हमारी ।
 नखसिखलौं सब अङ्ग मनोहर कोटिन रति छवि हारी ।
 कोटि चंद सम वदन सोहावन दृग चकोर सुखकारी ॥
 एक पलक बिनु लखे कलप सम जीवन प्रान अधारी ।
 'प्रेमलता' प्यारोके ऊपर तन मन धन सब वारी ॥

❀ प्रिया गान्न ❀

नवल प्यारे रसदानी पै वारी ।
 रूप अनूप मदन मद मोचन नयन विसाल जुलुफ कारी ॥
 मंद हसनि चितवनि मनमोहनि जीवन प्रान हमारी ।
 कुंडल तिलक मुकुट मन भावन नासामनि उजियारी ॥
 सब गुन सागर नागर रसिया वय किसोर छवि भारी ।
 'प्रेमलता' रसिकन मनमोहन सुंदर अवध विहारी ॥

पिय साँवली सुरति मन भावबियाँ ।
 रसमय अंग मनोहर सुंदर कोटि अंग लजावनियाँ ।

भूषन वसन नवल तन सोहै रासमंडल छबि छावनियाँ ॥
 अगजग मोहन मूरति प्यारे रस वरषा बरसावनियाँ ।
 नयन विसाल मंद मुसुकावनि रसिकन चित्त चोरावनियाँ ॥
 सब गुनसागर नागर रसिया रास विलास बढ़ावनियाँ ।
 'प्रेमलता' मन आस पुरैहैं सुरति विलास रमावनियाँ ॥

आवो आवो पिया मिलि जाउँ सँग सँग नृत्य करें ।
 रस मती अलिगन सुख पैहैं हिथ अनुराग भरै ॥
 राग ताल सब सुफल करें मिलि निज निज गुननि सरै ।
 'प्रेममोद' प्यारीकी वानी सुनि पिय रंग ढरै ॥

❀ युगल नृत्य गान ❀

रास मंडल नृत्यत पियप्यारी विपिन प्रमोद मभारी ।
 वन उपवन रितु कुंज निकुंजन सरद चंद उजियारी ॥
 कुंद गुलाब मालती चंपक कमल कुमुद विकसा री ।
 भँवर गुंज खग कूजनि रसमय त्रिविध पवन सँचारी ॥
 बाजत ताल अनेक जंत्र मिलि रागिनि राग उचारी ।
 नव मंडल नव रंग अलिन के स्याम सँग कर धारी ॥
 कोउ सखि सिरपर क्रीट सुछबि लखि कुंडल अलकसँवारी ।
 कोउ सखि तिलक सुरेख विदुश्री भृकुटी वंक निहारी ॥
 कोउ सखि नयन विसाल सुअञ्जन नासामनि दुतिदारी ।
 कोउ सखि चिबुक विदु भुजभूषन कर परसत रुचिप्यारी ॥
 गोप पदिक वनमाल नवल छबि कोउ निरखत सुखभारी ।

नवल मुद्रिका कटि किंकिनि वर बसन घुमार सुन्यारी ॥
कोउ सखि नूपुर जावक पदनख चिह्न रंग रस भारी ।
'प्रेममोद' यह रास अलौकिक रसिकन दृग हिय धारी ॥

रास मंडल नृत्यत दोउ रसिया छबि बरनी नहि जाई ।
छुमछुम छुमछुम चरन परत महि गावत तान मिलाई ।
करसे कर धरि धूमत दोऊ नवल बसन फहराई ॥
स्यामगौर तन नीलपीत पट मिलित हरित छबि छाई ।
'प्रेममोद' रसकेलि अनूपम निरखि नयनफल पाई ॥

रासमंडल दोऊ नटनागर नृत्यत रस मतवारे ।
ताथेइ ताथेइ ताताथेई मृदुस्वर मुखनि उचारे ॥
नूपुर किंकिनि कंकनकी धुनि फहरत पट सुधुमारे ।
उघटत हाव भाव दृग फेरनि अरसपरस करधारे ॥
बेनी अलक कपोल पृष्ठपर हलरत गलमनिहारे ।
कबहुँक विलग विलग होइ धूमत ताल देत न्यारे न्यारे ॥
साज समूह बजावत अलिगन गान सुतान सँवारे ।
रसमाला सुख बरसत चिन्मय 'प्रेमसुमोद' अपारे ॥

पिय प्यारीके संग सोहि रहे ।

हाव भाव करि रस बरसावत, अलिगन के मन मोहि रहे ॥
गलवाँही दै निरतत दोऊ, गान तान नभ छाये रहे ।
कटि लचरुनि मोरनि भुज श्रीवा, नूपुर धुनि सरसाय रहे ॥

वीन मृदंग आदि सब साजें, चहुँ दिसि सखिन बजाय रहे ॥
मंडलकार सखी चहुँ ओरी, रस सागर उमड़ाय रहे ।
'प्रेमलता' छबि वरनि न जाई, मन अभिलाष पुराय रहे ॥



निरखु सखि युगलचंद छबि छाई ।
जनकलली रघुलाल सलोने, सुख अमृत बरसाई ।
रास अजिर आकास मनोहर, अलि तारा समुदाई ॥
रसिक चकोर निरखि दृग लोभे, देह दसा बिसराई ।
'प्रेमलता' रस उमग बढ़ावति बहु रतिकाम लजाई ॥

आज दोउ गावत वीन बजाय ।
रास मंडल राजत पियाप्यारी, श्याम गौर छबि छाया ॥
तान लेत इक संग दोउमिलि, चहुँदिसि रस बरसाय ।
हावभाव करि कला दिखावैं, सबके चित्त चोराय ॥
मुरनि दुरनि मुसकानि मनोहर, नयनन सयन चलाय ।
'प्रेमलता' रसरंग बढ़ावत, मनसिजदेव मनाय ॥

आज दोउ गावत वीन बजाई ।
रासमंडलमें प्रीतमप्यारी, चहुँदिसि सखि समुदाई ।
अति अनुराग नटत दोउ सनमुख, नूपुर पग भ्रमकाई ॥
करजफेरि जब बोल निकासत, प्रगटि रागिनी आई ॥
प्रीतम जेहि स्वर लेत अलापैं, सिय तेहि दून मिलाई ।

अखिल लोक मन मोहित भयऊ, परमानंद समाई ॥
 चहुँ दिसि अलिनन चकित विलोकति, रस बरषा बरसाई ।
 रास विलास बढ़ेउ अति भारी, मनमथ हिय उमगाई ॥
 हार जीतकी बाजी लागी, ताते उमग बढ़ाई ।
 प्यारी जीति पिया गे हारी, 'प्रेमलता' मन भाई ॥

किशोरी सँग नृत्यत राजकुमार ।

करसे कर गहि अरसपरसपर गावत ताल सँभार ।
 अतर पान माला पट भूषन देत लेत करि प्यार ॥
 तत घन सुषिर अनद्ध चतुर विधि बाजत साज अपार ।
 'प्रेममोद' चहुँ दिसि छबि निरखै अलिनन मंडलकार ॥

❀ सखियोके सहित युगल नृत्य ❀

अलिन सँग रास रमो पियप्यारी ।

व्योम अजिर मधि बिधु उतपूरन रास रचेउ सह नारी ।
 युगलचंद इत रास अजिरमें कोटि चँद छबि हारी ॥
 वन प्रमोद बिच आनि जुरी सब नागर वृंद अपारी ।
 चहुँ दिसि मनिमय कुंज अनेकन तामें सेज सँवारी ॥
 रास विलास रमो मन भाये प्रेम केलि विस्तारी ।
 'प्रेमलता' सबकी अभिलाषा पूरिये भाव बिचारी ॥

॥ रेखता ॥

सरद की चँद उजियारी । प्रमुदवन रासहैं प्यारी ॥
 बेदिका एक अति भारी । चहुँदिसि लागि फुलवारी ॥

चँदोवा स्वच्छ है तान्यो । करोड़ों चँद छबि हारी ॥
नटत है नागरी नागर । सखीगन मंडलाकारी ॥
बजै धुनि किकिनी नूपुर । सितारे वीन करतारी ॥
बजै बहु यंत्र मिलि गावैं । नचै सब ताल अनुहारी ॥
रसिक रस 'प्रेम' में पागे । लखत नित रास सुखभारी ॥

निरखु सखि आजु नटत पियप्यारी ।
जनु घनदामिनि दै गलबाँही रसहित नव तन धारी ।
अमित अली करसे कर धारे चहुँ दिसि मंडलकारी ॥
वीन मृदंग आदि सब साजैं मिलि बाजत मनहारी ।
तान लेत इक संगहि मिलि सब 'प्रेम' सुरस मतवारी ॥

पियाप्यारीकी सुंदर नटनियाँ री ।
चहुँदिसि मंडलकार अलीगन नटति मनहु दामिनियाँ री ।
साज समूह मधुरसुर बाजत आनंद उर छावनियाँ री ॥
फहरत स्वेत वसन चटकीलो नूपुर पग भ्रमकनियाँ री ।
अंग सुगंध उड़त मनभावन भूषन की चमकनियाँ री ।
भाव भरे मृदु तान उचारनि चितवनि रस बरसनियाँ री ।
'प्रेममोद' यह सुख रस दुर्लभ रसिकन मन भावनियाँ री ॥

॥ महारास ॥

रासमें रसिया वेनु बजाई ।
वनप्रमोदक्री कृंजगलिन में रसमय धुनि रहि छाई ।

सर सरिता वन लता द्रुमन पर चंद किरन झलकाई ॥
 अगनित यूथ अलिन मधि प्यारो प्यारीके सँग गाई ।
 'प्रेममोद' सुर निरखि मगन नभ सुमनमाल बरसाई ॥

नवल रस रास करें पियप्यारी ।
 नवमंडल नव वरन अलिन के अरस परस कर धारी ।
 मोर हंस सारस पारावत लेत ललकि गति न्यारी ॥
 बाजहि वीन मृदंग मुरलिका भाँभ मुचंग सितारी ।
 इकसुर गान करहि सब मिलिकै नूपुरकी झनकारी ॥
 नाता भाव भेद दरसावहि नव यौवन मतवारी ।
 'प्रेमलता' सियपिय छबि निरखत इकटक पलक न टारी ॥

❀ श्रीसरयूतट का रास ❀

चलो सखी सरयूतीरे जहाँ, रास रचे दोउ लाल लली ॥
 वन प्रमोद द्रुमलता सुहावनि फटिक मनिनमय स्वच्छ थली ।
 सोहत सरित सरोवर निर्मल फूल रही बहु कुमुद कली ॥
 कोकिल मोर चकोर पपीहा कूजत गुंजत वृंद अली ।
 विमल अकास चंद परिपूरन सरद परब की रैनि भली ॥
 वरनि न जाय मनोहर सोभा आनंद उमगत कुंज गली ।
 अस कहि रास थली चलि आई 'प्रेमलता' रससिंधु हली ॥

सुरतरुवर तर तने चंदोवा सरयूतट मनहारी ।
 अगनित द्वार खंभ बहुरंगी कमल गुलाब नेवारी ॥

बेला बकुल कदंब अंबके चहुँ दिसि वंदनवारी ।
 तामधि कमलाकार सिंहासन फरस बिछे दुतिकारी ॥
 अगनित कवच धरे मनभावन तकिया गेंद अपारी ।
 अलिन सहित सियपिय तहँ राजत श्यामशौर छबिधारी ॥
 अतर गुलाबन केर फुहारे डोलत त्रिविध बयारी ।
 वंशो वीन मृदंग आदि बहु साज बजत सुखकारी ॥
 षट्रितु रागिनि राग अलापत पिकवैनी बहु नारी ।
 रासरंग उमगे तहँ रसमय कुंजनि बननि मझारी ॥
 अलिगन मंडलकार चहुँदिसि मध्य नटत पियधारी ।
 'प्रेममोद' रसकेलि विलोकत निसिदिन रहत सुखारी ॥

सरयूकूले शरदनिकुञ्जे निरखि चन्द्रमुख धामं ।
 सखिगण मध्ये रासरमन्ते सियजूके सँग रामं ।
 विपिन तड़ागे कमल विकाशे भ्रमरगुञ्ज अभिरामं ॥
 वीणा मृदङ्गे गानतरङ्गे चन्द्रमुखी कर गानं ।
 प्रेमलतायाः दृगसुख लागे पूरणकुरु मनकामं ॥

सरयू पुलिने सोमसुवटतर मंडल रास रचाई ।
 चहुँदिसि विपिन प्रमोद सुफूल्यो द्रुमनि लता लपटाई ।
 भृङ्गपुंज गुंजत मधुमाते त्रिविध पवन सरसाई ॥
 विमल अकास चाँदनी छिटकी रजनी परम सुहाई ।
 रघुनंदन मिथिलेशनन्दिनी नृत्यत मृदुस्वर गाई ॥

मंडलकार अलोगन नटहीं करसे करनि मिलाई ।
 मनु सौदामिनिघन को घेरे कनकलता समुदाई ॥
 भूषन धुनि पट फहरनि सुंदर साज बजत सुखदाई ।
 'प्रेममोद' निज रूप सँवारे हिय नैननि दरसाई ॥

सरयू पुलिन आज पियप्यारी नटत अलिन सँग मंडलकारी ।
 उभय सखी बिचब्रीच श्याम इक जनु तमालतरु कनकलतारी
 चंचल चखकर भाव उधारे छुमछुम चरन ताल गति धारी ।
 नवरँग पट फहरत धुनि भूषन ताथेइ ताथेइ मुखनि उचारी ॥
 बाजत वोन मृदंग तमूरा बंशो बेनु मृदंग सितारी ।
 तान तरंग साजसे निकसत रसमय चिदानंद मनहारी ॥
 स्यामगौर प्रतिबिंब परत सहि जगमगात छबि अदभुत भारी ।
 कबहुँ विलग होइ घूमि चक्र सम सनमुख करधरिनयननिहारी
 मन भावत सुख देत सबनिको दक्षिन नायक गुन विस्तारी ।
 'प्रेममोद' अनुकूल सियाके ततसुख में नित रहत सुखारी ॥

सरयू तट निरतत सिया रघुवीर री ।

मंडलकार अलोगन चहुँ दिसि चमकत भूषन चीर री ।
 फहरत वसन सुगंधन छहरत सरसत त्रिविध समीर री ॥
 तन धन सुषिर अतद्ध सुबाजत राग तान गंभीर री ।
 'प्रेममोद' तुरिया तन दरसै नाशत तीन शरीर री ॥

॥ लावनी ॥

नृत्यत लाडिलि लाल सखिन सँग राते ।

पूरन चँद प्रकाश सुधा बरसाते ॥

श्री सरयू तर तीर लता तरु फूली ।

गुंजत मधुकर श्रेणि सुसौरभ माते ॥

शोभित विविध वितान कुंज मनि भूमी ।

त्रिविध पवन सरसात हुलास बढ़ाते ॥

वीन मृदंग सितार मुरलिका बाजी ।

हाव भाव सम ताल सुराग सुहाते ॥

मंडल विविध बनाय चक्र सम घूमै ।

उभय सखी यक श्याम मध्य छबि पाते ।

‘प्रेमलता’ करि रास सिया सँग राजे ।

नित यह रास विलास रसिकजन गाते ॥

❀ श्री अशोकवन्न का रास ❀

वन असोक के मध्य अटापर मंडल रास रचाई ।

विमल अकास चंद परिपूरन उदित नखत समुदाई ।

सुमन वाटिका मंजुल फूली भँवर गुञ्ज रसपाई ॥

त्रिविध भाँतिके नवल द्रुमनपर ललित लता लिपटाई ।

श्वेत विसाल वितान तने त्रय क्रमसे तर लघुताई ॥

भालरि भाङ्ग लटू बहु डालें खंभ सुफरस बिछाई ।

मध्य भाग एक उच्च सिंहासन चहुँदिसि मंच धराई ॥

तापर अलिन सहित दोउ राजत श्वेत सिंगार बनाई ।
 बाजत साज समूह संगमिलि गान तान सरसाई ॥
 देव नाग राजन की कन्या नृत्यत पट फहराई ।
 नवल नवेलिन के मधि सियपिय नटत कला दिखलाई ॥
 दक्षिन गुन रमु अर्थ प्रकासक रमत सुसबहि रमाई ।
 'प्रेममोद' रसराज भाव बिनु तहँ कोउ सकत न जाई ॥

बन असोकके मध्य रमन दोउ रमत रास विस्तारी ।
 सरद परब की रैन सुहावनि पूरचंद उजियारी ॥
 सेत बितान तने तर ऊपर तीन खंभ की धारी ।
 तातर कमलाकार सिंहासन राजत प्रीतम प्यारी ॥
 नवल सिंगार किये राजति अलि चहुंदिसि मंडलकारी ।
 क्रमसे उठि उठि दंपति आगे नृत्यति भाव उघारी ॥
 सियपिय उमगि उमगि सबके सँग रमत सुरुचि अनुसारी ।
 'प्रेममोद' बहु साज सुबाजहि गान तान मनहारी ॥

निरखु सखि राजत सिय रघुराई ,
 रास मंडल गलबाँही दीन्हें मंद मंद मुसुकाई ।
 विमल अकास चंद परिपूरन उडगन अवलि सुहाई ॥
 फूल रही सर कुमुद अवलिका भँवर गुञ्ज रहि छाई ।
 चहुँ दिसि कुंद मालती फूली त्रिविध पवन सरसाई ॥
 विपिन अशोक निरखि अति शोभा सखियन मोद बढ़ाई ।
 'प्रेमलता' मन भावति रजनी दंपति रास रचाई ॥

पिय रास रंग अब कीजै सब आलिन को सुख दीजै ।
तन मन धन सबही अरपन करि मम बल नित रहीजै ॥
मम प्रतिबिंब बिंब सम मिलिये कुशल कलन रस पीजै ।
'प्रेममोद' हिय दृग द्वारे भरि सबकी सेवा लीजै ॥

वन अशोकके मध्य अटापर बैठे सिय रघुराई ।
श्वेत वितान तीन तर ऊपर नीचे फरस बिछाई ॥
चित्रि विचित्र सुरचना मंगल चिन्मय जोति जगाई ।
चहुँदिसि कबच धरे ताऊपर सोभित अलि समुदाई ॥
प्रथम नृत्य कुंजेश्वरि कीन्हीं बाजन गान मिलाई ।
चंद्रकला श्रीचारुशिलाजी नटनि भाव दरसाई ॥
देव नाग नृपसुता गान करि दंपति हिय उमड़ाई ।
तियनबीच दोऊ नटनागर आये अति छबि छाई ॥
नवमंडल मधि नटन लगे दोउ विविध सुकलन दिखाई ।
एक एक दुइ दुइ मिलि नाचे रामसिया रुख पाई ॥
अमितरूप होइ युग नारिन बिच फिरत अंस भुज लाई ।
कुंजनि केलि मचाई पुंजनि 'प्रेममोद' मन भाई ॥

निरतत सिय रघुवीर री हिय उमगत रस गंभीर री ।
बिपिन असोक सरजुतट सुंदर भूमि कनकमनि हीर री ॥
रास मध्य दोऊ नटनागर चहुँ दिसि आलिन भीर री ।
छाय रही भूपन धुनि रसमय फहरत नवरंग चीर री ॥

गान तान मनहरन साज सब वीन मृदंग मजीर री ।
 'प्रेममोद' यह छवि अवलोकत हरत मदन की पीर री ॥

रसिक दोउ रासमंडल मधि सोहै ।

हाव भाव रसचाव तरंगन अरसपरस मन मोहै ॥
 वन अशोक सरजूतट मनिमय अगनित कुंज बनोहै ।
 चिन्मय केलि कला रस उघटै जालरंध्र अलि जोहै ॥
 कोटि कल्प जहँ छन सम लागत सदचिद सुख संदोहै ।
 'प्रेममोद' रसराज भाव गम अगम अपर सबको है ॥

नवल दोउ नृतत बहु तन धारी ।

जनकसुता अरु दसरथनंदन केलि विहार अहारी ॥
 वन अशोकके मध्य वेदिका चिन्मय जोति पसारी ।
 तापर अनुपम सुरतरुवर तर मंडप अगनित द्वारी ॥
 तामधि रतन सिंहासन राजत श्याम गौर पियप्यारी ।
 चहुँ दिसि अलि मंडली विराजति सेवा सौज सुधारी ॥
 अष्ट नायिका भाव ललित धरि नायक भाव सुचारी ।
 हाव भाव सात्विक संचारी आसन कला अपारी ॥
 बाजन गान नटनि बहुविधि की व्यापित दिसनि मझारी ।
 कोटि कल्प जहँ छन सम लागत 'प्रेममोद' सुखभारी ॥

आज रासमंडल दोउ राजैं ।

श्यामगौर मनहरन सलोने बहु रतिपति लखि लाजैं ।

उमगत अंग अंग रस बरसत रसिक सालि के काजै ॥
 वंसी वीन पखाउज आदिक अगनित बाजन बाजै ।
 रागिनि राग सुताब रसीले दसदिसि छाड़ अवाजै ॥
 बन असोक के मध्य अलिन को परतम मुद नित साजै ।
 'प्रेममोद' रसरज भाव बिनु सूझ न पाव समाजै ॥

वन अशोकके मध्य अलिन संग, मंडल रास रचाई ।
 प्राकृत काम अयोग जानि दोउ, दिव्य मदन प्रगटाई ।
 रति समेत करि कलन नवल रस, दंपति उर उमगाई ॥
 नटन लगे ललिलाल अमिततन, हावभाव दरसाई ।
 बाजत वीन मृदंग वाँसुरी, सारंगी सहनाई ॥
 षट्रितु रागिनि राग ताल सब, रूप अनूप सुहाई ।
 भूषन वसन सरस धुनि चमकन, सुख सागर उमगाई ॥
 सुमन सुगंध भरत दसहू दिसि, त्रिविध पवन लहराई ।
 मोर हंस सारस पारावत, अगनित खग-गति लाई ॥
 गेंद पतंग लटू चक्र भँवरा, चौपर खेल दिखाई ।
 जलथल गगन समीर तेजमय, दृश्य अदृश्य जनाई ॥
 लता सुमन द्रुम कनक मनिनमय, कुंजनि सेज बिछाई ।
 युगलरूप विलसत बरसत रस, कहौं कवन विधि गाई ॥
 रतिविपरीत रीति रस आसन, सात्विक कलन जमाई ।
 'प्रेममोद' रसिकन उर दरसत, सदगुरु कृपा सुग्राई ॥

—लावनी—

सरद परब लखि आजु चंद उजियारी ।

मंडल रास बनाय नटत पियप्यारी ॥

वन असोक मधि एक वेदिका भारी ।

चहुँदिसि मनिमय कुंज सुभग सुखकारी ॥

पल्लव दल फल फूल लता द्रुम डारी ।

सरित सरोवर परसि पवन मनहारी ॥

सारस हंस चकीर कोकिला सारी ।

बजे वीना मृदंग मुचंग सितारी ॥

गावत कल कोकिल बैन ताल सम धारी ।

बहु सखि करहि कलोल कला विस्तारी ॥

जो जिनके मनभाव मदन मतवारी ।

‘प्रेमलता’ करि रास सीय सुकुमारी ॥

रागिनी शक्ति से ऋतु प्रगटाकर

❀ विविध ऋतु विहार ❀

(चैत महीना) में चैता राग —

नृत्यत प्रीतम प्यारी हे सजनी रास मंडल में ।

चहुँदिसि सुमन वाटिका फूली चँप गुलाब निवारी, हे सजनी,

नव मंडल नव वरन अलिनिके भूषनकी धुनि भारी, हे सजनी,

बाजत जंत्र अनेक मधुर धुनि गान तान मनहारी ।

‘प्रेममोद’ सियपिय छबि निरखैं तन मन सुरति विसारी ॥

चैता—

नृत्यत प्रीतम प्यारो हे सजनी रास मंडल में ।
सरयूतौर अशोक विपिन में सप्तावरन मभारी ।
पुरुषन को अति अगम अगोचर सुगम भाव दृग नारी ॥
बाजत तत धन अनध सुषिर वर गान तान मनहारी ।
'प्रेममोद' रसरज विलासहि निरखत सार सुधारी ॥

—❀—

नृत्यत प्रीतम प्यारो हे सजनी रास महल में ।
बाजत साज गान अलि करहीं नव मंडल रुचिधारी ॥
हाव भाव सात्विक संचारी आसन कला अपारी ।
बहुत रूप धरि रमत रसिक दोउ कुंज निकुंज मभारी ।
ततसुख स्वादो अलिगन निरखहि प्रेमसुमोद सुखारी ॥

❀ श्रीष्मत्तु रास ❀

करत दोउ फूलन कुंज विहार ।
अलिन सहित नखसिखलौं सजिकै सीत सुगंध सिंगार ।
कनक भवन वन उपवन कुंजन सरजू पुलिन किनार ।
अतर गुलाबन केर फुहारे त्रिविध पवन संचार ॥
वीन मृदंग आदि बहु बाजन रागिनि राग अपार ।
'प्रेममोद' रसरस केलि नित निरखत रसिक उदार ॥

रास में राजै लाडिलि लाल ।

भूषन वसन नवल तन शीतल तापर फूलन माल ।

चंद वदनपर अलकैं सोहैं राजिव नैन विसाल ॥
 चितवनि ललित मंद मुमुकावनि तिलक मनोहर भाल ।
 रासविलास भरे नव दंपति उमगत अंग रसाल ॥
 रास थलीमें रस बरसावत अलियन करत निहाल ।
 'प्रेमलता' रसरंग बढ़ावत पिय प्यारी रुचिपाल ॥

❀ पावस विहार ❀

रास मंडल दोउ भूलहि रूप अनंत बनाय ।
 सजि नव हरित सिंगार वर स्याम गौर छबि छाये ॥
 भुण्ड भुण्ड सखि भूलहि भूलन अमित लगाय ।
 श्याम घटा नभ गरजहि दामिनि चमक सुहाय ॥
 बोलत दादुर मोर पिक चातक रस बरसाय ।
 चहुँ दिसि रचेऊ हिंडोलना शोभा बरनि न जाय ॥
 अलिनन गाय भुलावहि बाजन सकल बजाय ।
 'प्रेमलता' छबि निरखहि छनछन हिय हुलसाय ॥

❀ हिमन्तु रास विहार ❀

नवल दोउ भाँवरि देत सुहाई ।
 आगे पीछे चलत परस्पर श्याम गवर छबि छाई ।
 मौरो मौर सुभग सिर सोहत मनि मुक्ता सुगुंथाई ॥
 व्याह विभूषन वसन मनोहर अनुपम अङ्ग छबि छाई ।
 मनि खंभन प्रतिबिंब सुफलकत जनु रतिपति बहु आई ॥
 अमित रूप समता हित कोन्हें छबि लखि मोहि लजाई ।

ताते प्रगटत दुरत छिनहि छिन दस दिसि देत दिखाई ॥
 भये मगन सब देखनिहारे देह दसा बिसराई ।
 गान निसान सुमंगल जैधुनि देव सुमन भरि लाई ॥
 यहिविधि भाँवरि सब सखियनकी सिय सँग भइ मनभाई ।
 भाँवरि दै मंडपतर राजे वर दुलहिन समुदाई ॥
 सिय सिर सिंदुर दै कर प्रीतम सबकी माँग लगाई ।
 'प्रेमलता' संबंध अनादी रासमध्य दरसाई ॥

❀ शिशिर का फागोत्सव ❀

रास मंडल में आजु रसिक दोउ फाग मचाई ।
 रघुनंदन श्री जनकनंदिनी संग सखी समुदाई,
 नवल सिंगार किये नखशिखलों वय किशोर बनि आई
 दुहुँ दिसि गोल बनाई ॥ १ ॥
 पिय दिसि सखी सखा बनि सोहै, सियदिसि सखी सोहाई
 वाजत वीन मृदंग भाँभ डफ, नृतत भाव दिखाई
 गान की धुनि नभ छाई ॥ २ ॥
 चंदन चूर कपूर कुमकुमा अवरख फूल चलाई ।
 होली कहि धरि लेहि परस्पर, अंगन रंग लगाई
 हँसै सब ताल बजाई ॥ ३ ॥
 मदन मनोरथ दुहुँ दिसि उमगे लाज मरयाद भगाई
 अमित रूप धरि रास विहारी पिचकन रँग बरसाई ।
 मरम यह काहू न पाई ॥ ४ ॥

‘प्रेमलता’ यह फाग अनोखी निगम अगम कहि गाई
सतगुरु कृपा होइ तब पावै, महल बसौ सो आई ।
रास रस सिंधु समाई ॥ ५ ॥

❀ रास विसर्जन क्रम ❀

आज उनींदे रास विहारी ।

आलसवंत सुभग लोचन सखि छिन मूदत छिन देत उधारी ॥
मनहु इन्दुपर खंजरोट दोउ कछुक अरुन विधि रचे सँवारी ।
कुटिल अलक जनु मार फंद कर गहे सजग होइ रह्यो सँवारी ॥
मनहु उड़न चाहत अति चंचल पलक पंख छिन देत पसारी ।
नासिक कीर वचनपिक सुनि करि संगति मनु गुनि रहत विचारी
रुचिर कपोल चारु कुंडलवर भूकुटि सरासनकी अनुहारी ।
परम चपल तेहि त्रास मनहु खग प्रगटत दुरत न मानत हारी ॥
रघुपति मुखछवि कलपकोटि लगि कहि न जाय जाके मुखचारी
तुलसिदास जेहि निरखि अलीगन ‘प्रेममोद’तन दसा बिसारी ॥

निरखु सखि रास किये दोउ राजे ।

शिथिल अंग श्रमकन मुख ऊपर अलक छुटी सुख साजै ।
चँवर छत्र सिर विजन दुरावै चहुँदिसि अलिन समाजै ॥
बहु सखि भूषन वसन सँवारे चंद्रिका वर सिरताजै ।
‘प्रेमलता’ सखि करहि आरती साज बाज मिलि बाजै ॥

बसो मेरे नैननि प्रीतमप्यारी ।

मोहि छाड़ि जनि जावो कहीं दोउ शरनागत सुखकारी ।

अति सुंदर सुकुमार रसीले रतिमनमथ छवि हारी ॥
बिनु देखे मोहि कल न परतु है रघुवर जनकदुलारी ।
'प्रेमलता' सियपिय छबि निरखत छनछन रहत सुखारी ॥

❀ श्री हनुमज्जयन्ती ❀

जनम दिन मारुतसुतको आयो ।

कार्तिक असित चतुरदसि सुभघरि मंगल गान सुहायो ।
ध्वज पताक मनि कलस साथियाँ वंदनमाल बनायो ।
रसिकन के घर महामहोत्सव 'प्रेममोद' सरसायो ।

॥ सोहर ॥

पवन सुवन मनभावन तत्त्व लखावन हो ।
ललना, केसरि कपिके भवन, प्रगट छबि छावन हो ।
मेष लगन दिन मंगल मास सुकातिक हो ।
ललना, कृष्ण पक्ष तिथि संभु, नखत भल स्वातिक हो ॥
बाजन लगी बधाई सरस सुख छावहि हो ।
ललना, सोहिलो गाय सुआसिनि रंग मचावहि हो ॥
अंजनि आँगन भीर सुकौतुक राँचहि हो ।
ललना, बंदी मागध सूत नारि नर नाचहि हो ॥
देव विमानन आय सुमन भरि लावहि हो ।
ललना, जयजयकार सुनाय महामुद छावहि हो ॥
विप्र वेद धुनि करहि नंदिमुख आधहि हो ।
ललना, जातकर्म करि सकल देव अवरधहि हो ॥

अंजनि केसरि संपति आनंद भरि भरि हो ।
 ललना, विप्र जाचकन देहि लेहि सुख ढरि ढरि हो ॥
 वंदनमाल पताक कलश ध्वज आदिक हो ।
 ललना, महल सुनगर सँवारि मगन मन स्वादिक हो ॥
 छठी वारहौ आदि किये सब उत्सव हो ।
 ललना 'प्रेमसुमोद' अपार अकथ छवि नित नव हो ॥

गावो सहेली आज पवनसुत सोहिलो री ।
 गुनसागर नागर सुत जायो, अंजनि नयन जोहिलो री ॥
 सुंदरता कछु कहत वनैना, सुरस मदन मन मोहिलो री ।
 'प्रेममोद अवधेश सुवन संग, वालकेलि चित पोहिलो री ॥

जनम सुनि अंजनि सुतको धाई ।
 हौं ठाढ़िनि केशरी वंशकी कीरति गुन नित गाई ॥
 लेउं निछावरि आज न चुकिहौं जो हमरे मन भाई ।
 तेरे लालको गोद खेलाऊँ 'प्रेममोद' हुलसाई ॥

बधाई आजु गाय मनभाइ आपने भाग मनावो ।
 प्रगट भये अंजनीके लाला हरषि हरषि सब धावो ॥
 जहँ तहँ खबरि जनाय महलमें गजमनि चौक पुरावो ।
 वंदनवार पताक केतु वर, नौबति धुनि सरसावो ।
 'प्रेमलता' हनुमंत लालको मंगल गाय रिभावो ॥

❀ दीपमालिका ❀

चलो सखि दीप महल छबि देखैं ।

पियप्यारी तहँ चौपड़ खेलैं हार जीत मन तोषैं ।

अबकी गये बरिस लौं सजनी होइहैं शोच विशेषैं ॥

अङ्गनि अङ्ग मिलाय पियाके अपनो जीवन लेखैं ।

‘प्रेमलता’ अभिलाष पूरिहैं युगल सुछबि हिय रेखैं ॥



निरखु सखि दीपन की छवि छाई ।

अवधपुरी प्रति महल गलिन की शोभा वरनि न जाई ।

सप्तकोट के नवल शिखर पर जगमग जोति जगाई ।

अलिन सहित चढ़ि उच्च महलतें देखत सिय रघुराई ।

जल थल व्योम दीपमय राजत ‘प्रेमलता’ मनभाई ॥

दीपदान लखिये पियप्यारी क्या जगमग छबि छाय रही ।

मध्य महल षोडश दल चौको खेल सलोनी साजि रही ॥

नवन सिंगार किये सब सुंदरि मन अभिलाषा चाहि रही ।

चहुँदिसि दीप अवलिका शोभित पुरी दीपमय शोभि रही ॥

दीप अकाश मही सर सरिता नर नारी उमगाय रही ।

‘प्रेमलता’ चढ़ि उच्च अटारी यह शोभा अवलोकि रही ॥

आजु दिवारी को दिन प्यारी चलिये ऊँची अटारी ।

दीपावलि लखि मोद भरे उर कलसन सिखर मझारी ॥

जलथल गगन दीपमय राजै रंग रंग छबि न्यारी ।
 दीप देखि पुनि चौपर खेलै हार जीत अनुसारी ॥
 जीते जो सो सब अंग लेवै दैवै सोइ जो हारौ ।
 'प्रेममोद' पिय रसमय वानी सुनि पायो सुख भारी ॥

दीप महल राजत सियवल्लभ अलिन सहित अति मोद भरे ।
 खंड पचीस अँटाके ऊपर देखत चहुँदिसि घूमि खरे ॥
 अगनित महल पुरी मधि सुंदर दरसत सब पर दीप बरे ।
 जलथल गगन दीपमय जगमग देव विमाननि सुमन भरे ॥
 दीपमाल छबि देखि कुंज बिच बैठे कोमल फरस परे ।
 रतन जटित चौकी के ऊपर सतरँज चौपर अलिन धरे ॥
 हरषि परस्पर खेलन लागे पियप्यारी निज दाव अरे ।
 साज समूह बजाय सहेली रसमय मृदुस्वर गान करे ॥
 हार जीत दुहुँ ओर बरावर उरभे अंगनि छबि उधरे ।
 'प्रेममोद' सिय ओर अंत में विजय दाँव सुख रस सुढरे ॥

नवल दोउ देखत दीप अटारी ।

जनकलली अवधेश लाडिले सँग अलि यूथ अपारी ।
 जलथल गगन दीप दसदिसि लखि अवध नगर छविभागी ॥
 चौपर महल मध्य चौकी पर खेलत चतुर जुवारी ।
 वीन मृदंग मधुर स्वर बाजै गान करत बहु नारी ॥
 जीते प्रथम चतुर रघुनंदन अंत श्रीजनकदुलारी ।
 'प्रेममोद' लखि तन मन वारति जैजैकार उचारी ॥

॥ चौपड़ ॥

रसिक दोउ चौपड़ खेल सजाई ।

कनकभवनके नैरित कोने, दीप सुचौक सुहाई ।
तामधि मंडप एक मनोहर, अति उमंग छबि छाई ॥
चहुँ दिसि लक्ष खंभ दरवाजे, शोभा जाति न गाई ॥
तामधि राजत सिय रघुनंदन, संग सखी समुदाई ।
सियदिशि चन्द्रकला श्री विमला सिखवति सैन चलाई ॥
पियदिशि चारुशिला, श्रीसुभगा खेलति दाव सिखाई ।
बहु सखि गावैं साज बजावैं, चित उत्साह बढ़ाई ॥
पासे पड़े प्रथम रघुवर के अंत सीय जय पाई ।
'प्रेमलता' तन मन धन वारति, मनमें मोद न माई ॥

दीपचौक राजत पियप्यारी, सखिन संग अति मोद भरी ।
चहुँदिसि गानतान सुर जोरे, चौपड़ रुचि सो आनि धरी ॥
श्री चन्द्रकला श्री चारुशिलादिक सिय प्रीतम को दाउढरी ।
प्रेमकला विद्यादि जगावत हार जीत की होड़ परो ॥
अङ्ग अङ्ग की बाजी राखी, जो हारे सो वशवरती ॥
यहिविधि खेलि सिंहासन राजे, आरति करि भइ फूलभरी ।
'प्रेमलता' चढ़ि सुभग सवारी, रसमय व्याख्य आय करी ॥

❀ अन्नकूट उत्सव ❀

आजु महोत्सव अन्नकूटकी अति आनंद उमगाई जू ।
चारि भाँति षटरस के भोजन नाम न जाहि गनाई जू ॥

भिन्न भिन्न अलि साजि धरे सब पावत सिय रघुराई जू ।
 मनिन कटोरा कनक थार में शोभा बरनि न जाई जू ॥
 कुंज कुंज ते अलिगन देखन कनकभवन सब आई जू ।
 बहु सखि गावहि साज बजावहि गारी मधुर सोहाई जू ॥
 सुनिसुनि दंपति हिय हुलसावै पावत मोद बढ़ाई जू ।
 सरयू जलपी अँववन कीन्हें पान खात मुसुकाई जू ॥
 करि आरती सोस अलि नावै तनमनधन निवछाई जू ।
 प्रेमलता' परसादी पावति अलिगन सबहि पवाई जू ॥

❀ श्री जन्मकनगर दर्शन लीला ❀

गैलन बिच छैला नजरिया हो, मारी मोहि आज ।
 मैं अपनी सखियन बिच बैठी सुंदर महल अटरिया हो ।
 राजकिशोर कुँवर संग लीन्हें देखन आये बजरिया हो ।
 बड़रे नयन कपोल नासिका मुख सरोज मनहरिया हो ।
 वैदेही के योग सलोने प्रेम' मिलन फुलवरिया हो ॥

सियवर के मैं रँग रँगी माई ।

गई रही गिरिजाको पूजन ललि संग जननि पठाई ।
 फूल लेन नृपनंदन आये नाता निरखि लगा आई ॥
 नवल किशोर श्याम तन सुंदर काम कोटि छबि छाई ।
 श्री मिथिलापुर शौर भयो है नारिन चित्त चुराई ॥
 सिय स्वामिनि पद सेवा करिहौं अचल सोहाग मनाई ।
 'प्रेमलता' सब आस पूरिहैं युगल केलि मन भाई ॥

साड़ी नील विविध रँग बूटे भूषन अङ्ग सजीली ।
 मौरी ललित सुभग सिर सोहति चितवनि नाह वसीली ॥
 छत्र चँवर लिये अलिगन चहुँ दिसि गान करहि चटकीली ।
 'प्रेमलता' अनुपम छबि निरखति स्वामिनि संग रहीली ॥

सियाजू के दुलहे की छबि भारी ।

श्यामल नवल किशोर सलोना मार कोटि छबि हारी ॥
 नखशिखलौं सब अङ्ग मनोहर अकथ अनूप अपारी ।
 पदतल अरुन सुश्यामल ऊपर नखमनि जोति पसारी ॥
 तापर जावक की अरुनाई पनही ललित सुधारी ।
 जामा पीत उपरना सुन्दर मनिन सुरचित किनारी ॥
 कंठा गोप सुमोहनमाला सुमन माल सुखकारी ।
 बाहु विशाल विभूषन के युत कर मुद्रिक उजियारी ॥
 मुख सुषमा कछु कहत बनैना जानै नयन निहारी ।
 नयन विशाल कपोल नासिका कुण्डल भूमकदारी ॥
 तिलक अलक सिर मौर सुहावन सेहरे की छबि न्यारी ।
 'प्रेममोद' तृन तोरि विलोकति राई लोन उतारी ॥

रँगोली जनकललिनि की जोरी ।

श्रुतिकीरति मांडवी उरमिला श्रीसीता रसबोरी ।
 रिपुहन भरत लषन रघुवर सँग दुइ श्यामल दुइ गोरी ॥
 वथाह समय राजत मंडपतर लखत दृगन को कोरी ।
 'प्रेममोद' नरनारि निरख छबि सुधिबुधि सब भइ भोरी ॥

❀ भाँवरि ❀

बनी सिय दुलही दूलह राम ।

गाँठ जोरि दोउ भाँवरि देहीं जगमग छबि अभिराम ।
मौरी मौर ललित सिर सोहै रचित कनक मनि दाम ॥
सारी नील पीत घर जामा गौर श्याम सुखधाम ।
'प्रेमलता' लखि मंगल गावहि वारहि बहु रति काम ॥

नवल दोउ भाँवरि देत सुहाई ।

सिय दुलही दूलह रघुनंदन गौर श्याम छबि छाई ।
व्याह विभूषन वसन सुहाये ग्रंथी ललित लगाई ।
अगनित खंभ सुमनिमय माँडव मनमोहन सुखदाई ॥
दंपति के प्रतिबिंब चहूँदिसि परत खंभ में आई ।
समता हित जनु बहुरति मनसिज प्रगटत दुरत लजाई ॥
जयधुनि वेद गान बहु बाजन अति अनंद उमड़ाई ।
'प्रेमलता' सखि मंगल गावहि मनमें मोद न माई ॥

सियप्यारी सँग हम व्याही गई ।

अवध छयल वनरे के वरिकै अपर आस सब मेंटि गई ।
मिथिला अवध रहब सुख सजिकै मन भाई सब बात भई ॥
सेवा करव नवलसियवरकी विन दामन छबि मोललाई ।
'प्रेमलता' यह रसिक भावना सद्गुरु कृपा सुपाइ नई ॥

नवल दुलहा रघुवर बनि आयो ।

चरन कमल नख सहज सलोने जावक ललित लगायो ॥

मखमल की पनहो मनभावन, केचन मनिन जरायो ॥
 जामा पीत सुपटुका सुन्दर, दामिनि जोति लजायो ।
 कर-कंकन गर मुक्तमाल कल, कुंडल हलनि सोहायो ॥
 चिबुक अधर नासा कपोल कल, काजर नयन लगायो ।
 केसर तिलक अलक की भलकनि, मनमथ कोटि लजायो ॥
 मंगलमय सिर मोर सुहावन, अनुपम छबि दरसायो ।
 'प्रेममोद' सिय योग सांमला, मन अभिलाख पुरायो ॥

:— जेवनार :—

जेंवत जानि नृपति सियवर को, देन लगीं सब गारी जी ।
 सरहज सासु सुआसिनि सारी, मिथिलापुर की नारी जी ॥
 लै लै नाम सरस भोजन के, षट प्रकार विधि चारी जी ।
 दही भात घृत मिसरी मेवा, पंचकवलि रुचिकारी जी ॥
 कछुक नाम सुनिये मनभावन सब को वरनै पारी जी ।
 ओदन श्वेत पीत दुइ विधिके, स्वाद सुगन्ध सुहावन जी ।
 मिष्ट सलोन सुरसमय रुचिकर, सबके मन अति भावन जी
 मूंग चना अरहर उरदादिक दालि सु न्यारी न्यारी जी ।
 जीरा लौंग हींग की छौकें सबहि मसाले डारी जी ॥
 घृत पुनीत सुरभी कर सुंदर पय दधि खीर मलाई जी ।
 बड़ा मुँगौरी कढ़ी पकौरी मिष्ट सलोन सुहाई जी ॥
 बरी अदौरो पापर मुंगछी वेसन बरी तिलौरी जी ।
 पूरनपूरी पूप सुमधुरे खस्ता और कचौरी जी ॥

खाजा खुरमा पेंड़ा जलेबी वरफी सेव इमिरती जी ।
 गुलजामुन रसगुल्ला फेनी, लडू बने अगनती जी ॥
 आलू परवर केना कुंदरू, कटहलकी तरकारी जी ।
 लौकी तोरई करैला घिउरा, जिमीकंद सुखकारी जी ॥
 पालक सोवा मेथो चंसुर बथुआ अरु चौराई जी ॥
 करमी मरसा मुरई आदिक भाजी कौन गनाई जी ।
 नींबू आम करौंदा अँवला अमरा आदि अँचारा जी ।
 खट्टी मीठी सलोनी करुई चटनी विविध प्रकारा जी ।
 बहुत भाँति के सरस मुरब्बा मेवा फल बहुताई जी ।
 भोजन करि जलपान सुकीन्हें, आदर से अँचवाई जी ॥
 पान सुअतर माल दै पूजो, द्रव्य सुवसन ओढ़ाई जी ।
 'प्रेममोद' भरि वास पधारे, सर्वाह परम सुखपाई जी ॥

गावो गावो सहेली आज, सब मिलि गारी जी ।
 अवधपुरीकी कन्या ज्वानी, औरो जे जरठाई जी ॥
 वाल जुवान जरठ मिथिलाके यह संघट सुखदाई जी ।
 रिपिपतनी रु ब्राह्मनी जेती, कौसलपुर सु अपारी जी ॥
 इनको मुनि द्विजाति लै विलसैं विधना विधि सुसँवारी जी ।
 छत्रानी वैस्यानी शूद्रा, अवध देश बहुताई ।
 ठाकुर वैश्य शूद्र तिरहुतिके, सब मिलि करें सगाई ॥
 रघुवर की सौसात मात है बहुत दिनन पर पारी ।
 मिलि योगीन्द्र जनक संगे इकदिन रास रचैं विस्तारी ॥

ब्रातिनकी भगिनी महतारी सब सँग मेल मिलाई ।
 इतके जे न्यौतहरि आये ते सँग लेहि विदाई ॥
 रसमाला रसमोद प्रेम भरि सरहज सारि पिआरी ।
 अकथ अपार महासुख लूटै अमृत गारिनि गारी ॥

॥ लहकौरी ॥

लहकौरीको समय जानिके आनि जुरी नवनागरि जी ।
 सरहज सारि सुवासिनि सुंदरि चतुरि महासुख सागरिजी ॥
 सारद रमा उमा इन्द्रानी नवल रूप अलबेली जी ।
 निसिपति दिनकर वरुन धनद की रमनी सुघर नबेलीजी ॥
 रतन जटित कंचन की चौकी कोहवर मध्य बिछाई जी ।
 कोमल कलित विचित्र बिछौना तकिया गेंद लगाई जी ॥
 तापर राजत दुलहिनि दूलह सौर सुभग सिर मौरी जी ।
 भोजन थार साजि धरि आगे सिखवति सारद गौरी जी ॥
 प्रथम कौर दुलहिन के मुखमें दूलह निज कर दीन्हें जी ।
 सियकर शेष सुरसमय सुन्दर, निजमुख लालन लीन्हेंजी ॥
 कहति सखी हँसि सुनहु लाड़िले स्वाद न कबहूँ पाये जी ।
 जस दुलहिन कर जूठ पायकै आजु मंजुरस छाये जी ॥
 पुनि सारद कर धारि सिया को कौर सुदेत सँवारी जी ।
 जब रघुवर मुख लेन लगेउतब ढिगसे सियकर टारी जी ॥
 गावति ताल बजाय अलीगन हास विलास बढ़ाई जी ।
 जुवा खेलमें लालन हारे जनकलली जय पाई जी ॥

यहि विधिके बहु कौतुक करिकै आरति मनिपट वारी जी ।
'प्रेममोद' भरि यह सुख लूटति सियनाते सब नारी जी ॥

नवलवर दुलहिन के रँग राते ।

रूप माधुरी पीवत छनछन लोचन नाहि अघाते ।
भूषन वसन सुधार टरे बिन अङ्ग अङ्ग उरभाते ॥
राई लोन उतारत जलपट तन मन धन निवछाते ।
'प्रेममोद' की रुचि अनुकूलहि युगल केलि सरसाते ॥

॥ मंडप पर ॥

नवल वर दुलहिन के सँग सोहै ।

यक आसन बैठे मंडप तर अलिगन लखि मनमोहै ॥
मौरी मौर चूनरी जामा मनिभूषन सुबनो है ।
'प्रेममोद' की रुचि अनुकूलहि युगल केलि चित पोहै ॥

॥ कोहवर ॥

सलोना श्यामल राजकुमार ।

जामा पीत उपरना सुंदर, जगमग जोति पसार ॥
चरन कमल जावक मनभावन, सुषमा अति अरुनार ।
मेंहदी करतल करज मुद्रिका, कर कंकन छवि धार ॥
उर आयत मनि मोहनमाला, गजमुक्तनके हार ।
बीरी अदन वदन मनमथघर, नयन कमल कजरार ॥

कुंडल अलक तिलक सुख आकर, ससि सनि गुरु रँगदार ।
 'प्रेममोद, सिय संग सखिनबिच, कोहवर भवन मभार ॥

पद

आज कोहवरकी छबि देखु अली ।

दुइ दुइश्यामल गौर मनोहर, अवध लाल मिथिलेशलली ॥
 बैठे रतन रचित चौकीपर, अरसपरस रस रंग रली ।
 अति भोरी गौरी पिय ओरी, सिय दिसि शारद चतुर भली
 लहकौरी करि जुवा खेलमें, कंकन मुद्री छबि छकली ।
 हारजीत दुहओर अमित सुख, हसत नारि करताल तली ॥
 कंकन छोरनि बाती टारनि, देवि पुजावति विधि सरली ।
 जावक चित्र लेखनी पाटी, षोडश विधि सिंगार गली ॥
 बाजत वीन सितार तमूरा, रागिनि राग तान तरली ॥
 रंगहोरी परिहेली भूला रासरंग षटरितु सफली ।
 भोजन सयन साल मनभावन, 'प्रेममोद' नित रहत पली ॥

❀ गौना के पद ❀

गवन सियाप्यारी की सखि आज ।

राजमहल रघुनंदन आये, विदा करावन काज ॥
 दूलह वेष मनोहर सुंदर, कोटि काम छबि लाज ।
 लाज काज तजि चलहु सहेली, संगहि सकल समाज ॥
 मिथिला अवध जहाँ दोउ रहिहैं, तहँहि सकल सुख साज ।
 'प्रेमलता' के परम सुजीवन, जनकलली रघुराज ॥

नई दुलहिन देखो सखि आई ।

राजकुंवर मिथिला से लाये, मुनिप्रसाद सुख पाई ।

दुइ गोरी दुइ श्यामसुंदरी, जैसे चारो भाई ॥

हमसब के बड़भाग सहेली, अवधपुरी छबि छाई ।

'प्रेमलता' दुलहिनकी दासी करव सदा सेवकाई ।

अवधपुरी गौना के दिन आई ।

चारिउ कुँअर कुँअरि युत बैठे, रतनपीठि सुखदाई ।

नृप-आँगन मंडपतर अनुपम, शोभा वरनि न जाई ॥

मुदित मातु सब करहि आरती, मनि भूषन निवछाई ।

'प्रेममोद' सिय संग महासुख, कनकमहल सेवकाई ॥



❀ वसंत राग ❀

सियगौनाको दिन आयो आज । पिय संग चली लै सखि समाज
मग होन लगेउ रस गानतान । नटि नाचत नभ बाजत निशान
पहुँचे दंपति निज नवल कुंज । रस बरसत जहँ वसु जाम पुंज
तहँ रतन सिंहासन छबि अपार । बैठे दोऊ भुज अंस धार ॥
करछत्र चँवर व्यजनादिसाज । अलि सेवत चहुँ दिखि सजि समाज
अलि वेष कियेउ रितुराज काम । रसफाग खेलावत सीय श्याम
पिय प्यारि कपोल गुलाल लाल । निज करनि लगावत छबि रसाल
सुखसिधु उमग नित कनकमहल । सब रसिकनको अति सुगम सहल
जानकि सुवर सुख रसविनोद । नित गावत ध्यावत 'प्रेममोद' ॥

* खिचड़ी *

आजु सखि खिचड़ीको दिन आयो ।
 दंपतिके मन मुद अधिकाने, अति उत्साह सुहायो ।
 कोटिन मन खिचड़ीकी राशी, विप्रनको बँटवायो ॥
 खिचड़ी विविध भाँतिकी सुन्दर, रसमय अलिन बनायो ।
 अमित अँचार दही घृत पापर, तिलमोदक अधिकायो ॥
 पायो अलिन सहित पियप्यारी, मोद विनोद बढ़ायो ।
 'प्रेमलता' उत्साह विलोकति, सेवा सुख सरसायो ॥

नवल खिचड़ी पावैं पियप्यारी ।
 मूँग चना अरहर उड़दादिक, रंग रंगकी न्यारी ॥
 मीठी सुरस सलोनी रुचिकर, विविध मसाले डारी ।
 हास विलास परस्पर करहीं, लखिलखि अलिन सुखारी ॥
 अचवन करि ताम्बूल सुपावत सक सुगंध अँग धारी ।
 'प्रेमलता' तब शयन करायो, आरति नवल उतारी ॥

* माघ शुक्ला पंचमी *

॥ मदन जयन्ती ॥

माघ पंचमी मदन जयन्ती, रितुपति खेल सजाई ।
 कनकभवन मनिकुंज मनोहर, नवल वितान तनाई ।
 ध्वज पताक रंभावलि तोरन, भालरि ललित लगाई ।
 केसरि कुमकुम अतर अरगजा, कलस दीप धरवाई ॥

दधि दुर्वा फलफूल जवाँकुर, अंब बौर दरसाई ।
 सियपिय अलिनसहित रस भीजे, खेलत फाग सुहाई ॥
 वीन मृदंग मधुर धुनि बाजत, गानतान रह छाई ।
 नृत्यत नवल नटी पट फरकत, भावे सुकलन दिखाई ॥
 बरसत सुमन देव ब्रह्मादिक, चढ़ि सुविमाननि आई ।
 'प्रेममोद' यह छबि अवलोकत, सहज स्वरूप समाई ॥

॥ पद ॥

आजु जयंती मदनवीरको, सखि रितुराज सुहायो ।
 श्रीरसराज भवन पियप्यारी, उत्सव साज सजायो ॥
 कनककलस दधि दूब जवाँकुर, फल फूलन मन भायो ।
 तुलसीदल श्रीकेशर चंदन, अतर सुगंध सिचायो ॥
 चौके दीपमाल वंदननव, अम्ब बौर छबि छायो ।
 अविर गुलाल सुमनरज कुंकुम, पिचकन रंग भरायो ॥
 पीतसिगार अलिनयुत दंपति, भूषन नव सरसायो ॥
 रागिनि राग नटनि बहु विधिकी, तालन साज बजायौ ।
 'प्रेममोद' रसकेलि उमगउर, अपने भाग मनायो ॥

❀ वसन्तोत्सव ❀

रितुराज आज सखि आयो ।

हिय भाव सरस सुख छायो ॥

चौक वसंत वसंती रंगमय, साज नवल सजवायो ।
 फरश वितान खंभ मेहराफें, वंदनमाल भुलायो ॥

कुंडी भाड़ लटू बहु डालें, मनिमय दीप वरायो ।
 चहुँ ओर फुलगमले साजे, इतर गुलाब सिचायो ॥
 मध्य सिंहासन पर दोउ राजत, बहुरतिकाम लजायो ।
 सेवा सौज सजे बहु बाला, गावति साज बजायो ॥
 अत्रि गुलाल परस्पर लै लै, खेल वसंत रसायो ।
 'प्रेममोद' रसराज विभव यह, रसिकन हिय हरषायो ॥

:— वसंत :—

रंगीले सिय सँग खेलैं वसंत ।

कनकमहलके मध्य मनोहरं रसमय देश एकंत ।
 लोभि रहे रितुराज जहाँ नित, मधुकर रव सुकरंत ॥
 नवल सिंगार किये पियप्यारी, पीत सुकुंज लसंत ।
 दुहुँ दिसि सौज सजे अलि त्रयवय, सोहैं जूथ अनंत ॥
 बाजत साज गान करि नटही, जयजय शवद भनंत ।
 'प्रेममोद' भरि छबि अवलोकहि, भाविक जन रसवंत ॥

सखि आयो रितु सुवसंत आज ।

हिय उमगि उठे रसराज साज ॥

पियमिलन हेतु अनुराग जाग ।

सब बिसरि गयो तन लाज काज ॥

चलि रंगमहल गति हंस लाज ।

सजि मंगल गावति साज बाज ॥

लखि 'प्रेमलता' छबि पूर्णकाज ।

करि भेंट जुहारति अलि समाज ॥

नवल सखी खेलैं फाग सजाई ।

माघ वसंत पंचमी मंजुल, गावहि राग सुहाई ।

केसरि रंग परस्पर छिरकैं, पियप्यारी मन भाई ॥

अति अनुराग भरे मन दंपति, देह दसा बिसराई ।

'प्रेमलता' यहि छबिके ऊपर, तन मन धन नेवछाई ॥

सखि आयो वसंत सुखेलु फाग ।

अनुराग उमग उर मदन जाग ॥

सिय वाग सोहाग आलिन मनाय ।

सब गावति साज मिलाय राग ॥

रंगरारि मची दुहुँ ओर साजि ।

मिलि द्वंद करैं कहि धन्य भाग ॥

नवदंपति सजि सुसिगार पीत ।

सिर लसत चंद्रिका नवल पाग ॥

'प्रेमलता' रितुराज पूजि ।

हिय मंजु मनोरथ बढ़न लाग ॥

— — —

❀ फाल्गुन, श्री अग्रदेवाचार्य वधाई ❀

श्री श्री अग्रदेव आचारज, रसिक जनन सुखदाई ।

फागुन शुक्ल दुइज शुभ वासर, आज जयंती आई ॥

थल जल अग्नि पवन नभ निरमल, दसदिसि हिय हुलसाई
 कनकभवन दुखदमन रमन थल, मध्य पलंग छविछाई ।
 तापर सीताराम अलिनयुत, विहरत अति सुखपाई ॥
 तहँ यक अति परधान जुथेश्वरि, चंद्रकला नाम सुहाई ।
 दंपति आयसु पाय रूप गुरु, ह्वै प्रगटेउ हरषाई ॥
 नामरूप लीला रस धामहि, लोप होत प्रगटाई ।
 अष्टयाम ध्यानमंजरी तीनि, मंत्र कुंडली बनाई ॥
 अग्रसुसागर आदि ग्रंथ बहु, भक्तमाल नाभा सिष गाई ।
 'प्रेममोद' होली सरसायो, अविर गुलाल उड़ाई ॥

✽ होलिकोत्सव ✽

आजु सिय होरी खेलन आवै ।

करि सिंगार महलसे निकसी सखिन मध्य छबि छावै ।
 बरनि न जाय अलौकिक सोभा प्रीतमके मन भावै ।
 बाजत साज गान अलि करहीं भूषन धुनि सरसावै ॥
 फाग चौकमें आइ बिराजी नैनन सैन चलावै ।
 'प्रेमलता' स्वामिनि की ओरी विजय निशान बजावै ॥

होरी खेलन आइ सियास्वामिनी ।

नवल सिंगार किये नखसिखलाई प्राननाथ अभिरामिनी ।
 संग अलीगन गावति आवैं पिकवैनी गजगामिनी ॥
 मृगलोचनि सब सुभग सयानी लखि लाजहि बहु दामिनी ।
 'प्रेमलता' तत्सुख रसमाती जानै दिन किमि जामिनी ॥

॥ गजल ॥

मियाजू खेलने आई पियासों आज रँग होरी ।
सजे नवसात औ द्वादस भरी अति चाह हिय सो री ॥
अलीगन संग बहु सोहैं लिये चहुँ ओर रँग घोरी ।
लालकी ओर हँसि हेरै रँगीली 'प्रेम' सों गोरी ॥

नवल सैयाँ सुनि लीजै हमारी ।
प्यारीको हम नवल दूतिका सजग होहु धनुधारी ॥
नीति बिचार करौ रघुनंदन मति दीजै हमें गारी ।
'प्रेमलता' रँग भरि पिचकारी डारि दई खिलवारी ॥

सजन सँग खेलिये फाग सहेली ।
लेकर रँग लगाय कपोलन अरसपरस भुज मेली ।
बाजत वीन मृदंग भाँभ डफ गावत राग नवेली ॥
सुनि सखि वचन प्रिया मन भाये दरसाई रसकेली ।
'प्रेमलता' प्यारी वश प्रीतम बरसाई रँग रेली ॥

❀ रागकाफी, ताल धमार ❀

खेलत आज रसिक दोउ होरी ।
सरजू तीर वसंतचौकमें नवल वितान तनो री ।
सिंहासन दुहुँ ओर मनोहर नीचे फरश बिछोरी,
सौज सब साजि धरो री ॥ १ ॥

वनप्रमोद फूल्यो चहुँ ओरी भ्रमर गुंज सरसो री ।

चातक कोकिल कीर चकोरन कूजत मोर नटो री

निरखि हिय मदन बढ़ो री ॥ २ ॥

जनकलली रघुलाल नवल वय संग लिये बहु गोरी ।

बाजत साज राग धुनि छाई फूलन मार मचो री,

लिपटि मुख रँग मलो री ॥ ३ ॥

‘प्रेममोद’ रसकेलि फाग में लखि दृग हीय भरो री ।

तत्सुख स्वाद अनूप कहै को सहज स्वरूप लखो री ॥

और सबसों मुखमोरी ॥ ४ ॥



खेलि रहे दोउ फागरी सजि रंग रंगीले ।

सनमुख चितै भरे अनुरागै नयन सयन चमकीले ।

सखा सखी दुहुँ ओर करोड़नि फूल गुलाब छड़ीले ।

‘प्रेमलता’ रस उमग बढ़ावति गान करै चटकोले ॥

॥ लावनी ॥

खेलत लाड़िली लाल आजु रंग होरो ।

उमगि उमगि सुखकंद भूमकि भुकि सो री ॥

प्रीतम श्याम सुजान लाड़िली गोरी ।

संग अलिनके यूथ हरित रँग बोरी ॥

सनमुख दंपति खड़े चन्दमुख हेरें ।

सनहुँ निमेष निवारि चकोर चकोरी ॥

बाजहि डफ वीन मुचंग तमूरा वंसी

बहु भाँभ मृदंग सितार मुरलिका जोरी ॥
गात करहि कलकंठ सुरसमय वानी

कोकिल सुनत लजाहि मुनिन्ह चितचोरी ॥
अवधलालकी ओर कनक पिचकारी

इत जनकललीकी ओर नवल रँग भोरी ॥
'अलि प्रेमलता' छबि देखि वारि तृन तोरी ।

कहि जैजै युगल समाज किशोर किशोरी ॥

खेलि रहे दोउ फाग नवल रसमाते ।

दुहुँ दिसि अलिगन सोह उमंग बढ़ाते ॥
बरसपरस चितचोरि किशोर किशोरी ।

निज नैनन सैन चलाय मधुर मुसुकाते ॥
तेह उमंग बढ़ाय रहे दोउ प्यारे ।

लखि मदन मनोरथ जाग नयन रस राते ॥
दुहुँ दिसि अली अपार खड़ी रसमाती ।

बहु गान तान सरसाहि वरनि नहि जाते ॥
घाय चलै रँग मारि भूमकि हटि जाहीं ।

अंगन रस बरसाय गुलाल लगाते ॥
विष्णु संभु ब्रह्मादि देव युतनारी ।

सुमन माल बरसाय निशान बजाते ॥
'प्रेमलता' छबि देखि मगन सब आली ।

नृत्य करहि गुनगान सुरंग बढ़ाते ॥

नवल दोउ खेलैं फागु सुहाई ।

जबकलली रघुलाल सलोने दुहु दिसि अलि समुदाई ॥
 कुमकुम फूल परस्पर मारैं अविर गुलाल उड़ाई ।
 अतर गुलाव केसर रँग भरिकै पिचकन अंग भिजाई ॥
 दुहु दिसि करष बढ़यो अति भारी रँगकी जंग मचाई ।
 भीने वसन भीजि तन लपटे नवल अंग छबि छाई ॥
 वान मृदंग भाँभ डफ बाजहि गावहि चाह बढ़ाई ।
 शिव ब्रह्मादि देव सह नारी चढ़ि विमान पर आई ॥
 शोभा देखि सुमन बरसावहि अपने भाग मनाई ।
 'प्रेमलता' सिय जीत मनावति हारि जाहि रघुराई ॥

सियप्रोतम आलि नई होरी ।

जब देखो तब रंग बरसावत, सरजूतीर अवध खोरी ।
 नरनारी चर अचर विमोहत, निरखत श्याम गौर जोरी ॥
 कोटिन सखा सखी दुहुँ ओरी गान नृत्य वरनै कोरी ।
 द्वादश मास छत्रो रितु निशिदिन, 'प्रेममोद' नित उमगोरी ॥

नई दुलही, होरी खेलन आई ।

लखि पियके मन मोद बढ़े अति, नैनन सैन चलाई ।
 लाज भरी घूँघट नहि खोलत, रसवस हिय उमगाई ॥
 प्रथम समागम भयेउ दुहुनको, रसमय फाग भचाई ।
 'प्रेमलता' लखि फाग अनूपम, बहुरति काम लजाई ॥

रँग डारो न मोपै रघुराज लला ।

हैं मुग्धा सुकुमारि लाडिले, नहि जानौ कछु खेल कला ।
औरनके संग रारि मचावो जिन नव गाल गुलाल मला ॥
सियप्यारी की है लघु भगिनी अनय किये से नाहि भला ।
'प्रेमलता' की सुनि पिय बतिया सकुचि हँसै नहि जोर चला ॥

रँग डारो न रसिया बरजोरी ।

करि बिनतौ सखियाँ लै आईं तुम सन खेलन होरी ।
बति सुंदरि सुकुमारि नवल वय मोरी जनक किशोरी ॥
सारो भोन रँगोन स्यामलो तड़ित ओप अङ्ग छोरी ।
चंद मंद परि जात वदन लखि अनुपम छवि रसबोरी ॥
बड़े भाग अस दुलहिन पायो लोजे रसहि निहोरी ।
'प्रेममोद' पिय निज कपोल पै मलन देहु सिय रोरी ॥

पिय लसत कपोल गुलाल आज ।

बोर सिंगार परस्पर दोऊ हरषि मिलत मनो चतुर चाल ।
फूलि रहे नव सोनकंज अकि मनसिज रूपी सुभग ताल ॥
भौंहे भँवर मीन तहँ कुंडल श्रवन सीप सम अति रसाल ।
अलकें लटकि रही मुख ऊपर पियत सुधा ससि फनिक वाल ॥
नासामनिकी हलनि अधर पर मंद हास मानौ पास जाल ।
'प्रेममोद' कैसे कोउ बचिहैं घायल बिनु छवि परत ख्याल ॥

फुलगेंदा न मारो नवल रसिया ।

अङ्ग लगत मन मदन मनोरथ जोवन जोर कसी अँगियां ।
सनमुख खरी भरी तन लाजन चहुँदिसि देखि हँसै सखियाँ ॥
फागुनमें रस लेहु रसीले रहौ सदा पिय तिय बसियाँ ।
'प्रेममोद' तनसुधि कछु नाहीं पिय मुख निरखि जकी अँखियाँ ॥

पिचकारी न मारो नई अँगिया ।

फागुन फाग खेलि सिय सँगमें सदा रहो पिय रस पगिया ।
नवजोवन रस छको रसीले मदन मनोरथ हिय जगिया ॥
तुमहौ नये नई नवनागरि कुंज रसाल नई बगिया ।
'प्रेममोद' मन मंजु मनोरथ युगलफाग लखि दृग रँगिया ॥

फूलनकी छड़ियाँ मारी दैया ।

अवध छैल रसिया रघुनंदन बाँह गहे वरियैया ।
घूँघट खोलि गुलाल लगायो अङ्गन रस बरसैया ॥
लाजन भरी कहे नहि मानै मंद मधुर मुसुकैया ।
'प्रेमलता' श्रीजनकनंदिनी जाने खेल खेलैया ॥

मारी गुइयाँ सुरंग पिचकारी ।

अवध छयल बरजो नहि मानै मोहि दई रस गारी ॥
मैं उनसे कछु बोली नाहीं हँसि रस चितवनि डारी ।
घूँघट खोलि गुलाल लगायो करि मोसों बल भारी ॥
रससानी नवलाकी वानी सुनि विहँसी अलि सारी ।
'प्रेमलता' करि अभय सियाजू बरजेउ अवधविहारी ॥

❀ प्यारी नान्न ❀

सिय स्वामिनि मान सुठानी । पिय पिचका मारे तानी ॥
 अति सुंदर सुकुमार नवल तन । कीन्ह बिचार न भये मत्त मन ॥
 बैठी सघन कुंज मधि जाई । तहाँ कोउ जान नहीं पाई ॥
 रस रंग भंग भय भारी । अलि कहहु उपाय बिचारी ॥
 चलो आप लाल ललि पासा । परि चरन कहहु हम दासा ॥
 अब चूक माफ सब कीजै । जो उचित दंड सो दीजै ॥
 सुनि बचन श्याम मन भाये । सिय पास चले चित चाये ॥
 मिलि स'प्रेम' दुहुँ उमगे अंग । फाग मचायो रंगनि जंग ॥

लाल अब जाने न पैहौ, छलकरि अंग भिजाई ।
 सियप्यारी पर रंग चलायो अबहीं देउ दिखाई ॥
 असकहि चंद्रकला अलि दौरी संग सखी समुदाई ।
 कहहि छयल अब सजग हूजिये संग सहाय बुलाई ॥
 हहा खवाय पकरि मुख मसलों छलकी वानि छुड़ाई ।
 श्याम भागि निज गोल समाये बहु सखि लीन्ह छिपाई ।
 इतते जाय घेरि सब लीन्हीं पिचकन रँग बरसाई ॥
 रंगनि मारि विहाल किये सब पियके गोल भगाई ।
 चंद्रकला कहि रसिक लालको सियकी जीत मनाई ।
 गाल गुलाल मसलि मुख चूमहि रसमय अङ्ग लपटाई ।
 विजय निशान बजावहि हर्षहि 'प्रेममोद' मन भाई ॥

अब जावो न प्रीतम आज, कालि रँग डारि दई ।
 छल कीन्हो पिय श्यामसलोने, सियस्वामिनि सो जानि लई ॥
 चलि प्यारीपद सीस नवावो, छमा होइ जो चूक भई ।
 कलवलछल एकौ नहि चलिहैं, अबहि बनावो नारि नई ॥
 अस कहि चंद्रकला रघुवरको लै प्यारीके पास गई ।
 चरनपरे सिय कंठ लगायो, 'प्रेमलता' मन मोद छई ॥

॥ लीला ॥

नवल सैयाँ चलो फाग खेलाऊँ ।
 प्यारीको प्रीतम करि रसिया, तुमको नारि बनाऊँ ।
 डरहु नहि फागुनमें प्यारे, सियसे अभय कराऊँ ॥
 नाचहु गाय सियागुन सुंदर, सब सखि साज बजाऊँ ।
 'प्रेमलता' प्यारीवश प्रीतम, अतिशय मौज दिवाऊँ ॥

पिय गाल गुलाल मसलि देंहौं ।
 सजग होहु प्रीतम रघुनंदन, तुमहि जीति फगुआ लैहौं ।
 नारि बनाय नचैहौं सब मिलि, ताल बजाय राग गैहौं ॥
 सावनको बदलो लै फागुन, सियस्वामिनि ढिग लै जैहौं ।
 पाँय पराय भिजाय राजरस, 'प्रेममोद' अति सुख पैहौं ॥

रंगहोरीमें छैला पकरि गये ।
 कोटिन नारि चहुँदिसि घेरे, कलवल रसधस हारि दये ॥

नवसत द्वादस साजि ललन अँग, बहुविध नर्तन गान ठये ।
मनभावत फगुवा लै अलिगन, सियकी जीत मनाय लये ॥
हहा खवाय भिजाय सुरंगन, वदन चूमि रसरंग छये ।
'प्रेममोद' फगुवा सुख लूटत, गावत अनुपम राग नये ॥

॥ काफी धमार ॥

होरी में आजु, पियाको पकरि लै आई ।
चहुँ दिसि घेरि खड़ी सब अलिगन, मध्य किये रघुराई ।
कहैं लाल अब हारि बोलिये, सियकी जीत मनाई ।
चूक सब माफ कराई ॥१॥

नवल सिंगार किये रघुवर को, तियको वेष बनाई ।
ताल बजाय नचावैं गावैं, करैं सबै मन भाई ।
कहौं का आनंद गाई ॥२॥

सोइ कियो तब रसिक लाडिले, जो सबके मन भाई ।
पद परसत सिय कंठ लगायो, लीन्हों संग बिठाई ।
वेष इक 'प्रेम' समाई ॥३॥

रंगहोरीमें प्रीतम प्यारी बने ।

सजि नवसप्त सिंगार मनोहर, द्वादश भूषन अंग ठने ॥
सारी चटक रंगीन सोहावन, अँगियाके बन्द नाहि तने ।
बेसरि हलनि मंद मुसुकावनि, तिरछी चितवनि हरत मने ॥

भूमकि भूमि भुकि चलनि सुहावनि, मन्मथगज लखि लजहिघने
'प्रेमलता' छबि निरखहि आली, हरषित विजय निशान हने॥

वलिहारी अली दोउ प्यारे की ।
रंगरंगीले अतिही छवीले, बचन पीयूष उचारे की ।
गाल गुलाल लगावत दोऊ, अरसपरस भुज धारे की ॥
गौरशगाम मनहरन सुहाये रति मनमथ छबि हारे की ।
'प्रेमलता' तृनतोरि विलोकति, जीवन प्रान हमारेकी ॥

निरखु सखि आजु बनी छवि भारी ।
होरी खेलि सिंहासन राजैं राम रसिक सियप्यारी ।
अलिगन सुभग चहुँदिसि ठाढ़ी सेवा सौज सँवारी ।
चंद्रकला श्रीअग्रअलीजू चारुशिला सुभगा री ।
दुहुँदिशि चँवर लिये कर कमलनि नव सुंदरि सुकुमारी ।
विमला चन्द्रबती लिये दोऊ छत्र सुभालरिदारी ।
युगलप्रिया श्रीप्रानप्रियाजू नवल नेहलतिका री ।
सजि सुमृदंग वीन मंजीरा चहुँ अलि सुभग सितारी ।
हेमलता श्रीप्रीतिलताजू व्यजन लिये मनहारी ।
मधुरलता श्री युगलबिहारिनि अतरदान करधारी ।
श्री रसमोदलता रसदानी रूप गुनन उजियारी ।
चंपकलता सकल गुनखानी जीवन प्रान हमारी ।
रूपलता श्री प्रेममंजरी करकमलनि लिये भारी ।
प्रेमप्रभा गावति रसमाती नृत्यति 'प्रेमलता' री ।

❀ बाहरी होरी । काफ़ी, धम्मर ❀

अवधपुरी रघुवीर आजु रँग होरी मचाई ।
 भरत लषन रिपुदमन सखन सँग रघुवंसी समुदाई ।
 केसरिनीर भरे पिचकारिन रँग बरषा बरसाई,
 गलिन में धार बहाई ॥ १ ॥
 ढोल मृदंग वीन डफ भालरि संख भेरि सहनाई ।
 बाजत साज राग धुनि छाई बंशी बेनु मिलाई,
 रह्यो अति आनंद छाई ॥ २ ॥
 नगर बजार चौक प्रति कुंजन घूमत स्वांग बनाई ।
 महल महल में जाय सबनिके गावत गारि सुहाई,
 लाजको दूरि भगाई ॥ ३ ॥
 'प्रेममोद' सिय सहित महलतें निरखत अति सुखपाई ।
 खेलि नहाय दान बहु दीन्हें सरयू तट रघुराई,
 सुमन भरि देवन्ह लाई ॥ ४ ॥

मैं तो जैहाँ न आली खेलन होरी ।
 सरजूतीर अवधकी गलियन रँग बरसत चहुँ ओरी ।
 नृपसुत अनुज सखा सँग लीन्हें विदुषक भाँड़ करोरी ॥
 करकमलनि पिचका लिय रँग भरि अविर गुलाल भरे ओरी ।
 नवलकिशोर मार मद माते लाज मरजाद को छोरी ॥
 फागुनके मिस घात तकत नित खोजत नवल किशोरी ।

पुरुषन को पुरुषत्व रहत नहि लंपट रसमें बोरी ।
 पतिवरतनको धर्म बचै नहि निरखि होहि छबि भोरी ।
 'प्रेममोद' एकमास रहौं घर निकसौंगी नहि पौरी ॥

❀ श्री मिथिला की होरी ❀

मंडपतर आजु मची होरी ।

उत अवधेस इतइ मिथिलापति उमगत आनंद हिय सों री ।
 उत वरियाती इत सरियाती अविर गुलाल भरै भोरी ॥
 कुँअरि कुँअर चहुँ हिलिमिलि खेलै स्यामल गौर बनी जोरी ।
 कुमकुम फूज मारि पिचकारिन रंगन सरित बहायो री ॥
 खंभनमें प्रतिबिंब सुपरहीं अनुपम छबि वरनै को री ।
 बाजन गान महाधुनि छाई 'प्रेममोद' सुख लूटो री ॥

❀ चैता ❀

खेलै दोऊ रंग होरी, हे आली, चैतमास में ।
 जनकलली रघुवंश लाडिले, श्याम गौर की जोरी हे आली०
 चन्द्रकला श्रीचारुशिलादिक, संग लिये बहु गोरी ।
 पान खात मुसुकात परस्पर, नैन सैन चितचोरी ।
 केसरि रंग भरे पिचकारिन, वरसत है दुहुँ ओरी ।
 बाजत साज अलीगन गावहि, नृत्य करहि अंगमोरी ।
 वरनि न जाय मनोहर शोभा, लखि शारद भइ भोरी ।
 'प्रेमलता'के जीवन दोऊ, रघुवर जनककिशोरी ॥

देखी सुनी नहि होरी हो रामा, ऐसी कतहूँ ।
 रजनी दिवस एक होइ गयऊ, भूमि अकाश भरौ री ।
 चंद्र भानु ग्रह उडगव सबमिलि, करन लगे भकभोरी ।
 मोर चकोर हंस सुक चातक, सबको भरम भयो री ।
 शारद गंग रंगकी धारा, बहन लगी चहुँ ओरी ।
 यहि अनुपम होरी पर वारौं, रतिमनमय अमितो री ।
 'प्रेमलता' छवि देखि मगन भई, भूलिगई तोरि मोरी ॥

बैठे दियो गलवहियाँ हो रामा, सरयूतीरे ।
 वन अशोक में सुभग सिंहासन, कल्पवृक्षकी छहियाँ ।
 चन्द्रकला श्री चारुशिलादिक लिये अलिगन संग महियाँ ।
 'प्रेम' विवश दोउ रंग रंगीले विलग होत छन नहियाँ होरामा

विहरत सरयूकूले हो रामा, सिय रघुनन्दन ।
 वनप्रमोद श्री कनकभवनमें, लता सुमन मनि कुंजन ॥
 बेला गुलाब चमेली कमल जहँ, फूलि रहे वन उपवन ।
 अलिगन गुंजत कोकिल कूजहि, त्रिविध पवन की रमकन
 'प्रेमलता' छवि वरनि न जाई, कोटिन रतिपति मोहन ॥

❀ रागपंचमी होरी ❀

नवल दीउ खेलत फाग सुहाई ।
 चैत सुरंग पंचमी सुंदर शोभा अति सरसाई ।
 जनकलली रघुलाल रसिकवर संग सखी समुदाई ॥

कनकभवन आँगन मधि सजनी शोभा वरनि न जाई ।
 बाजत वीन मृदंग भाँभ डफ, गान मधुर धुनि छाई ॥
 चढ़े विमान सुमन सुर वरसत, नारि सहित सुखपाई ।
 कोटिन रति मनमथ लखि लाजत, 'प्रेमलता' मनभाई ॥

❀ चैता ❀

चैत मास सुख छाई हो रामा, अवधपुरी में ।
 वनप्रमोद प्रियप्राननाथ संग, रितु वसंत सरसाई हो रामा
 विविध कुंज द्रुमलता ललित नव, त्रिविध समीर चलाई ।
 'प्रेमलता' यहि सुख नित रसिकन, पियप्यारी गुन गाई ॥

मधुर मास मधु आयल हे सजनी अवध नगर में ।
 वनप्रमोद बिच कनकभवन में दंपति सुख सरसायल ।
 वन उपवन वर बाग बाटिका नवल केलि उमगायल ।
 नवकिसलय तरु लता सुभग फल मधुकर मुखर सुहायल ।
 त्रिविध पवन कोकिल धुनि सरसत युगलविहार समायल ।
 'प्रेमलता' हरषीं सब सखियाँ रसकेली मन भायल ॥

—❀—

अष्टयाम दोउ विलसैं हे सजनी, कनक महल में ।
 शयनकुंज उठि मंगल वल्लभ, मज्जन नीर अमल में ।
 यज्ञशाल ह्वै करत कलेऊ सजत सिंगार सहल में ॥
 चौपरि खेलि सभा करि भोजन सोवत मिलि सुगहल में ।
 केलि सदन वसु कुंज फूललखि भूलत कुंज नवल में ॥

बैठक भवन बैठि सरि मज्जन भरि रस चहल पहल में ।
व्याख करि जब शयन करत मिलि 'प्रेम' सुमोद टहलमें ॥

❀ पलंग लीला ❀

रसिक दोउ चंग उड़ावन लागे ।

सरयूतीर फरश मनभावन धार उमगि शुचि आगे ॥
नीलपीत रँग चंग डोरियुत निरखि सुछबि अनुरागे ।
दाँव घात दुहुँ ओर सिखावति अलिनवृंद रस पागे ॥
बाजत साज राग धुनि छाई केलि कला हिय जागे ।
सुमन वरषि सुर नर छबि निरखत 'प्रेममोद' पल त्यागे ॥

॥ पद ॥

रसकेलि कला दोउ भीने । चंग उड़ावत लीने ।

आसपास नव रंग रँगोली उमगि मधुर स्वर गावै ।
बाजत वीन मृदंग मजीरा आनंद रस बरसावै ॥
दाँव घात चाहत दोउ निजनिज नागर नट चित दीने ।
दिखनहारे तनमन भूले लूटत सुख सुनवीने ॥
कटत हजारन चंग दुहुँदिसि नभ सुनगर उड़ि गिरही ।
प्रथम जीत प्रीतम की भयऊ अंत प्रिया जय करहीं ॥
देव निशान बजावहि हरषहि बरषहि सुमन असीसैं ।
'प्रेममोद' सुख अकथ अनूपम भाविकजन हिय दीसैं ॥

रसीले सियसँग चँग उड़ावै ।

नवल सिंगार किये अति सुंदर श्याम गौर छबि छावै ॥
 नखशिख लौं छबि छटा विलोकत प्यारी अङ्ग लोभावै ।
 कर गहि डोरि मोरि गल भुकि भुकि नैनन सैन चलावै ॥
 साज बजाय अलीगन गावै दुहुँ दिसि चौप बढ़ावै ।
 'प्रेममोद' भाविक उर निरखत छन छन नव सुख पावै ॥

॥ पुष्पिका ॥

बसंत सिद्धी सुंदरी, निधि ईश्वर सुख खानि ।
 जेठ शुक्ल पुरुषोत्तम, तिथि नव गुरु दिन जानि ॥
 अधमोचनके घाट पर, सदगुरु सदन सुऊर ।
 अवधपुरी श्री सरयुतट ग्रंथ भये यह पूर ॥

इति श्री । शुभं भूयात् ॥

—::०::—

श्रीलक्ष्मण प्रिंटिंग प्रेस, टैढ़ीबाजार चौराहा अयोध्याजी ।

श्री रसमोदकुञ्ज, ऋणमोचन घाट, श्रीअयोध्या से
प्राप्य दुर्लभ ग्रन्थ

- १ श्री इश्ककान्ति सटीक ।
- २ श्री सीतारामनाम साधना ।
- ३ श्री अयोध्याके जगमगाते रत्न ।
- ४ श्री राघव स्वभाव सौरभ ।
- ५ श्री सिद्धान्त तत्त्वदीपिका सटीक ।
- ६ श्री जानकी विदु ।
- ७ श्री द्वादसमास उत्सव विलास पदावली ।
- ८ अर्थपंचक विचार (यन्त्रस्थ) ।
- ९ श्रीअग्रस्वामीजी की ध्यानमंजरी मकरंद माधुरी
टीका सहित ।